कैनेडा की लोक कथाऐं

चयन और हिन्दी अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Canada Ki Lok Kathayen (Folktales of Canada)
Cover Page picture: Maple Leaves of Canada in Fall
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Web Site: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Canada

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

कैनेडा की लोक कथाऐं 7

1 रैवन का जन्म 9

2 रैवन दिन ले कर आया 14

3 रैवन की नाक 20

4 रैवन और कौए को नोआ का शाप 23

5 नीले निशान वाला आदमी 28

6 सात तारे 37

फ्रैन्च कैनेडा की कुछ लोक कथाऐं 41

7 मधुमक्खी और मेंढक 43

8 टी जीन और बड़ी सफेद बिल्ली 46

9 रिचर्ड और उसके ताश के पत्ते 56

10 एक बछड़ा जो तीन बार बेचा गया 59

क्युबैक प्रान्त की लोक कथाऐं 65

11 शैतान का नाच 67

12 उड़ती हुई नाव 75

केप ब्रैटन की लोक कथाऐं 81

13 कौर्नु और उसके तीन बेटे 83

14 करामाती भेंटें 90

15 आश्चर्यजनक बॉसुरी वादक 94

कैलगरी की लोक कथाऐं 99

16 जिद्दी पत्नी 101

17 एक मेरा एक तुम्हारा 103

यूकेनियन कैनेडियन्स की लोक कथाऐं 107

18 चतुर बेटी 109

आइसलैंड वालों की लोक कथाऐं 121

19 नाक कटी चिड़िया 123

कैनेडा के ज्यूज़ के बच्चों की लोक कथाऐं 131
20 बहुत सारे बच्चों की दादी 133
21 छोटी बूढ़ी दादी 138
कैनेडा की कुछ और लोक कथाऐं 143
22 एक लड़का जिसे लोग ख़रदिमाग कहते थे 145
23 लाल सन्ध्या के आसमान का लड़का 155
24 एक लड़का और एक ड्रैगन 164
25 बड़े सिर और बड़ी ऑखों वाला उल्लू 175
26 बेरहम सौतेली मॉ 190
27 भूरे पंखों वाला बड़े साइज़ का आदमी 199

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

कैनेडा की लोक कथाऐं

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़ा महाद्वीप सबसे पहले और सबसे छोटा महाद्वीप सबसे बाद में। धरती के इस भाग यानी कैनेडा का पता **15**वीं सदी के अन्त में चला और **50** साल में ही यानी **1537** के आस पास इसमें ब्रिटेन ओर फ्रांस के लोग बसने शुरू हो गये थे। उससे पहले यहॉ यहॉ के मूल निवासी ही रहते थे। आजकल तो यहॉ यहॉ के मूल निवासी कम और दूसरे देशों के लोग ज़्यादा रहते हैं।

कैनेडा देश उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के सुदूर उत्तर में स्थित है। इसके क्षेत्रफल के मुकाबले में इसकी जनसंख्या बहुत ही कम है। क्षेत्रफल में इस देश का नम्बर रूस के बाद दूसरा है और इसकी जनसंख्या केवल **38** मिलियन है। इसका मुख्य कारण यह है कि इसकी जमीन का बहुत बड़ा हिस्सा बहुत ठंडे स्थान पर है जहॉ लोगों के रहने की सुविधा नहीं है। अधिकतर इसकी जनसंख्या अमेरिका की सीमा से लगी हुई जमीन पर ही रहती है। जैसे जैसे वहॉ से उत्तर की तरफ बढ़ते जाते हैं जनसंख्या बहुत कम होती जाती है। मैपिल का पत्ता यहॉ के झंडे पर लगा हुआ है।

इस देश की चौड़ाई इतनी ज़्यादा है कि इसके पूर्वी और पश्चिमी किनारे के समयों में **5** घंटे तक का अन्तर हो जाता है। यानी अगर इसके पूर्वी तट पर दिन के **12** बजे होते हैं तो इसके पश्चिमी तट पर सुबह के **7** ही बजे होते हैं। कैनेडा कोई बहुत पुराना देश नहीं है। एक देश की हैसियत से इसका जन्म **1** जुलाई **1867** को हुआ था जिसे यहॉ "कैनेडा डे" के नाम से मनाया जाता है। उससे पहले इस ब्रिटिश उत्तरी अमेरिका में कुछ प्रान्त, बड़ी सी रुपर्ट की जमीन जो "हडसन बे कम्पनी" के पास थी और उत्तरी–पश्चिमी टैरिटरीज़ ही थीं।

इस समय इस देश में दस प्रान्त और तीन टैरिटरीज़ हैं। इस देश का जितना ज़्यादा क्षेत्रफल है उतनी ही तरीके के यहॉ लोग रहते हैं और उतने ही तरीके की लोक कथाऐं भी प्रचलित हैं। इस देश में पहले यहॉ के मूल निवासी रहते थे फिर इंगलैंड और फ्रांस के लोग आये और उसके बाद यूरोप के कई और देशों के लोग आते चले गये। क्योंकि यहॉ यूरोप के बहुत सारे देशों के लोग बसे हुए हैं वे सब अपनी अपनी लोक कथाऐं भी अपने साथ ले कर आये। कभी कभी तो ऐसा होता है कि यूरोप के देशों की लोक कथाओं का मूल रूप उनके अपने देशों में नहीं मिलता बल्कि कैनेडा में सुनने को मिल जाता है।

यहॉ के तीन जानवर – रैवन एक कौए जैसा पक्षी, कायोटी एक रेगिस्तानी छोटा भेड़िया और निहानकन और ईकटोमी मकड़े, यहॉ के मूल निवासियों की लोक कथाओं के बहुत ही मुख्य चरित्र और हीरो हैं। क्योंकि वहॉ उनकी बहुत सारी लोक कथाऐं प्रचलित हैं इसलिये हमने रैवन की केवल चार कथाऐं इस पुस्तक में शामिल की है। हमने उनकी कथाओं को उन्हीं के नाम से अलग पुस्तकों में प्रकाशित किया है – "रैवन की लोक कथाऐं–**1**", "रैवन की लोक कथाऐं", "चालाक कायोटी" आदि आदि।

इस पुस्तक "कैनेडा की लोक कथाऐं" में कुल **27** कथाऐं हैं। इनमें से हम अपने हिन्दी भाषा जानने वालों के लिये छह कथाऐं यहॉ के पुराने रहने वालों की और **16** लोक कथाऐं यहॉ दूसरे देशों से आने वाले लोगों की हिन्दी में प्रकाशित कर रहे हैं। ये सब कथाऐं एक पुस्तक से ली गयी हैं।[1] अन्त में कुछ कहानियॉ कैनेडा में पुराने रहने वालों की और दे रहे हैं। ये कहानियॉ दूसरे स्रोतों से ली गयी हैं और दूसरे भाग में दी गयी हैं।

आशा है कि ये कहानियॉ कैनेडा देश में आने वालों के जीवन की एक झलक प्रस्तुत करने में सहायता करेंगीं और तुम सब लोगों को पसन्द आयेंगीं।

---

[1] Fawke, Edith. Folklore of Canada. Toronto : McClelland and Stewart. 1976. 349 p.

कैनेडा में समय का अन्तर

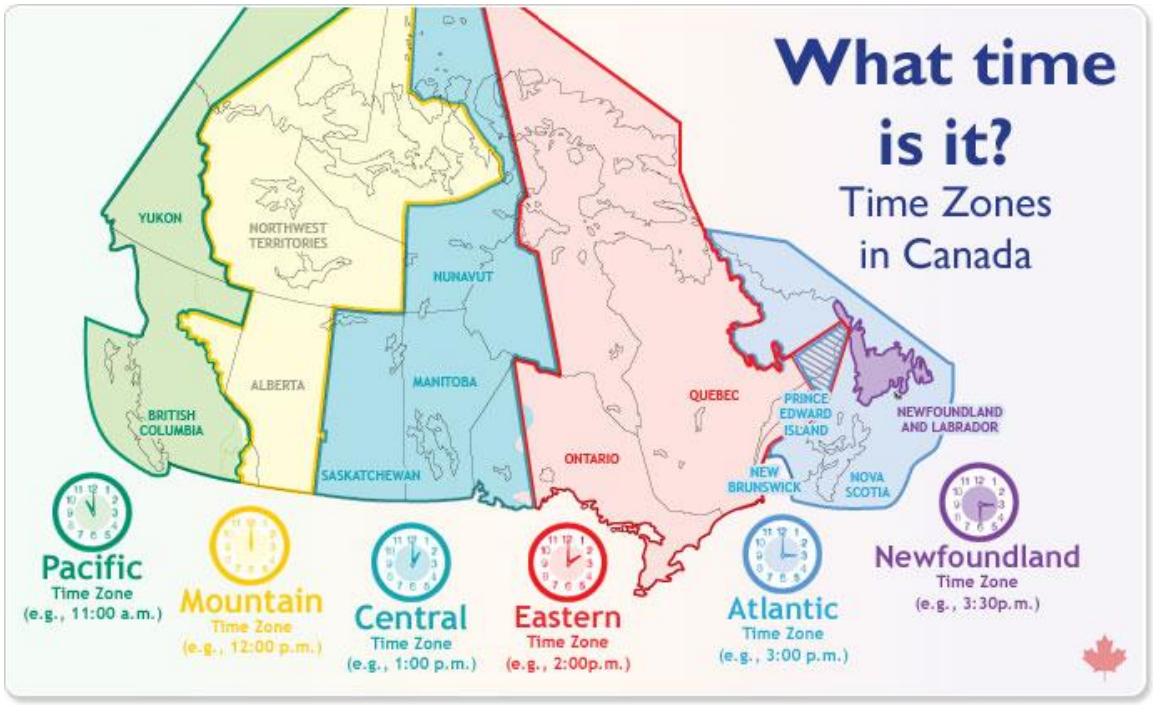

1 रैवन का जन्म[2]

उत्तरी अमेरिका के इन्डियन्स में रैवन[3] पक्षी की कहानियॉ बहुत प्रचलित है। इनमें से रोशनी की चोरी और आग लाने वाली कहानियॉ बहुत लोकप्रिय हैं। लेकिन रैवन का जन्म ही कैसे हुआ इसके बारे में यह कहानी कही जाती है।

एक बार समुद्र के किनारे बहुत सारे लोग रहते थे उनमें से एक आदमी ऐसा था जिसके पास जादुई ताकत थी। वह अपनी पत्नी से अलग रहता था और किसी को भी उसके पास जाने नहीं देता था। वह उस पर कड़ा पहरा रखता था।

उसके पास उसकी एक बहिन रहती थी जिसकी शादी हो चुकी थी। कुछ दिन बाद उसकी बहिन ने एक पुत्र को जन्म दिया। धीरे धीरे वह बड़ा हो गया।

एक दिन वह आदमी अपने उस भान्जे को अपने साथ शिकार पर ले गया। वहॉ से वह उसको नाव में बिठा कर समुद्र में ले गया। समुद्र में कुछ दूर जाने पर उस आदमी ने उस लड़के को नाव के एक किनारे पर बैठ जाने को कहा। जब वह लड़का नाव के

[2] Birth of Raven. (Story No 1)

[3] Raven is like a big crow bird and it is the national bird of some states and territories of Canada. It is considered a bird of ill omen and is related to Creation myths. It is associated with dead and with lost souls. In Sweden they are known as the ghosts of murdered people.

किनारे पर बैठ गया तो उस आदमी ने वह नाव बहुत ज़ोर से हिला दी। नाव के हिलते ही वह लड़का समुद्र में गिर गया और डूब कर मर गया।

घर आ कर उसने अपनी बहिन से बहाना बना दिया कि वह नाव के ऊपर चढ़ गया था और वहॉ से समुद्र में गिर कर मर गया। उस आदमी की बहिन ने फिर एक पुत्र को जन्म दिया। कुछ समय बाद उस आदमी ने उस लड़के साथ भी यही हाल किया। इस तरह उसने अपनी बहिन के कई पुत्र मार दिये।

उसकी बहिन ने फिर एक पुत्र को जन्म दिया। इस बार का उसका यह पुत्र पहले पुत्रों से कुछ अलग था। इस लड़के को लकड़ी के खिलौने बनाने का बहुत शौक था। इस लड़के का नाम उसकी बहिन ने रैवन रखा।

जब यह लड़का छोटा ही था तभी उस आदमी ने इस लड़के को भी शिकार पर ले जाने की इच्छा प्रगट की परन्तु उसकी बहिन ने उसको यह कह कर मना कर दिया कि यह मेरा अन्तिम पुत्र है और मैं इसको मरने नहीं देना चाहती।

पर जब उस आदमी ने कई बार अपनी बहिन से उसे भेजने के लिये कहा तो लड़के ने अपनी मॉ से कहा — "मॉ, मुझे इनके साथ जाने दो न। मुझे इनके साथ कोई नुकसान नहीं पहुँचने वाला।" मॉ न चाहते हुए भी राजी हो गयी और रैवन अपने मामा के साथ

शिकार पर चला गया। जाते समय वह अपने कम्बल में अपनी बनायी हुई लकड़ी की नाव छिपा कर लेता गया।

उस आदमी ने इस रैवन के साथ भी वही किया जो उसने अपनी बहिन के दूसरे बच्चों के साथ किया था। उसने रैवन को नाव के एक किनारे पर बैठ जाने को कहा और जब रैवन नाव के एक किनारे पर बैठ गया तो उसने नाव जोर से हिला दी। रैवन पानी में गिर पड़ा।

रैवन पानी में कुछ देर तक पानी में नीचे रहा जिससे उसके मामा को लगे कि वह पानी में डूब गया है। मामा भी यह समझ कर कि रैवन पानी में डूब गया है घर वापस आ गया और अपनी बहिन से बोला कि तुम्हारा यह रैवन भी अपने दूसरे भाइयों की तरह बेवकूफ था इसलिये वह भी पानी में डूब कर मर गया। उसकी बहिन यह सुन कर बहुत दुखी हुई।

उधर रैवन थोड़ी देर पानी के अन्दर रह कर फिर बाहर आ गया और उसने अपनी खिलौने वाली नाव को समुद्र में पानी की सतह पर रखा तो वह एक बड़ी नाव में बदल गयी। वह उसमें बैठ कर घर आ गया। रैवन की मॉ उसको देख कर बहुत खुश हुई।

घर आ कर उसने अपनी मॉ को बताया कि उसके साथ क्या हुआ था। उसने अपनी मॉ से यह भी कहा कि उसके बड़े भाइयों के साथ भी शायद कुछ ऐसा ही हुआ होगा जैसा उन्होंने मेरे साथ किया। उन्होंने उनको भी ऐसे ही मारा होगा जैसे उन्होंने मुझे मारने

की कोशिश की थी। रैवन की माँ रैवन को देख कर इतनी खुश थी कि उसने रैवन की बातों पर कुछ ध्यान ही नहीं दिया।

कुछ दिनों बाद वह आदमी रैवन को फिर से शिकार पर ले गया और उसने उसके साथ फिर वही हरकत की पर रैवन फिर उसी तरह बच कर घर वापस आ गया। उस आदमी ने तीसरी बार भी रैवन को ले जाने की कोशिश की पर इस बार रैवन ने यह कह कर उसको मना कर दिया कि आप मुझे हमेशा ही इस तरह बाहर ले जा कर मारने की कोशिश करते हैं मैं अब आपके साथ नहीं जाऊँगा।

यह सुन कर वह आदमी अकेला ही बाहर चला गया। उसके जाने के थोड़ी ही देर बाद रैवन अपनी मामी के घर गया और उसके साथ खेलने लगा। खेलते खेलते रैवन ने अपनी मामी का पेट पकड़ लिया। मामी को गुदगुदी हुई तो उसने अपने दोनों हाथ ऊपर उठा दिये। उसके हाथ उठाते ही उसकी दोनों बगलों में से दो पक्षी निकल कर उड़ गये। पक्षियों के बाहर निकलते ही उसकी मामी मर गयी।

मामा को भी अपनी पत्नी के मरने का समाचार तुरन्त ही पता चल गया सो वह दौड़ा दौड़ा घर आया। घर आ कर उसने देखा कि उसकी पत्नी तो मर चुकी है और दोनों चिड़ियॉ उड़ चुकी हैं। उसको बहुत गुस्सा आया और गुस्से में आ कर उसने रैवन का पीछा किया ताकि वह उसे मार सके पर रैवन भी होशियार था।

उसने अपनी लकड़ी की नाव को पानी पर रखा और पानी पर रखते ही वह खिलौने वाली नाव एक बड़ी नाव में बदल गयी और रैवन उसमें बैठ कर बच कर निकल गया।

इस घटना के बाद वह रैवन पक्षी बन गया। उसने सारा संसार घूमा और फिर वह अपनी जन्म भूमि कभी वापस नहीं लौटा

2 रैवन दिन ले कर आया[4]

यह उन दिनों की बात है जब न दिन था, न सूरज था, न चॉद था और न तारे थे। रैवन एक गॉव में गया और वहॉ के लोगों से उसने पूछा कि क्या वे कुछ देख सकते थे?

लोगों ने कहा कि वे कुछ नहीं देख सकते थे क्योंकि सब जगह अँधेरा ही अँधेरा था पर उन्होंने रैवन को यह भी बताया कि वहॉ एक आदमी था जिसके पास दिन था। मगर वह आदमी उसको एक बक्से में बन्द कर के रखता था।

उस गॉव के लोग कोई भी काम नहीं कर पाते थे क्योंकि वहॉ हमेशा ही अँधेरा रहता था। रैवन ने पता लगाया कि वह दिन वाला आदमी कहॉ रहता था और उसके घर पहुँच गया।

इस आदमी के पास केवल दिन ही नहीं था बल्कि सूरज चॉद और तारे भी इसकी मुट्ठी में रहते थे। रैवन उसके घर में घुस गया और उसका सारा घर देख कर बाहर निकल आया। उसने सोच लिया था कि दिन को बाहर लाने के लिये उसको क्या करना था।

दिन वाले आदमी के पास बहुत सारे नौकर चाकर थे। उसके एक बेटी भी थी। यद्यपि उसकी बेटी बड़ी हो चुकी थी फिर भी

[4] Raven Brought the Day. (Story No 2)

उसका पिता उस पर कड़ी नजर रखता था और उसको एक कोने वाले कमरे में अकेले रखता था।

उस लड़की के पास सफेद रंग की एक बालटी थी जिससे वह पानी पिया करती थी पर पानी पीने से पहले वह हमेशा उस पानी की अच्छी तरह जॉच कर लिया करती थी कि उस पानी में कहीं कुछ है तो नहीं। उसके पिता के नौकर हमेशा उस बालटी में पानी भर जाया करते थे।

एक दिन रैवन ने अपने आपको एक सीडर[5] के पत्ते में बदला और पानी की उस बालटी में बैठ गया जो उस आदमी के नौकर उसकी बेटी के लिये ले कर जा रहे थे। उस लड़की ने यह पहले ही देख लिया था कि उस पानी में सीडर का एक पत्ता था सो उसने उस बालटी का सारा पानी पीने से पहले ही फेंक दिया।

रैवन फिर अपने असली रूप में आ गया और अगले दिन वह फिर से सीडर की एक बहुत ही छोटी सी पत्ती के रूप में पानी की उस बालटी में बैठ गया जिसको उस आदमी के नौकर उसकी बेटी के कमरे मे लिये जा रहे थे।

इस बार उस लड़की को पानी में कुछ भी दिखायी नहीं दिया सो वह उस बालटी का सारा पानी पी गयी। इस तरह रैवन उसके पेट में घुस गया और वह लड़की गर्भवती हो गयी।

[5] Cedar – a kind of tree

उसके माता पिता ने उससे कई बार पूछा कि उस बच्चे का पिता कौन है परन्तु वह बेचारी कुछ भी न बता सकी। बताती भी कैसे, वह किसी को जानती तब तो बताती।

उसके पिता को भी बड़ा आश्चर्य था कि वे उसके ऊपर इतना कड़ा पहरा रखते थे कि उसके कमरे में कोई आ ही नहीं सकता था फिर यह सब कैसे हुआ। समय आने पर उस लड़की ने एक पुत्र को जन्म दिया। लड़की के माता पिता ने कहा कि वे उसको अपने धेवते की तरह ही पालेंगे।

यद्यपि उस बच्चे के पिता का कोई पता न था फिर भी उस लडकी के माता पिता ने उस लड़की से कई बार उसके पिता का नाम पूछने की कोशिश की पर बार बार पूछने पर भी वह बेचारी किसी का नाम नहीं बता सकी।

धीरे धीरे वह बच्चा बड़ा हो गया। वह आदमी अपने धेवते को बहुत प्यार करता था। एक दिन उसका धेवता बहुत रोया, बहुत रोया। वह चॉद के साथ खेलना चाहता था। उस आदमी से उसका रोना देखा नहीं गया सो उसने उसके खेलने के लिये चॉद ला दिया।

बच्चा खुश हो गया। वह बहुत देर तक चॉद के साथ खेलता रहा फिर खेलते खेलते जब वह थक गया तो उसके नाना ने उस चॉद को ऊपर टॉग दिया।

एक दिन वह बच्चा फिर रोने लगा। इस बार उसकी इच्छा हुई कि वह सूरज के साथ खेले। नाना ने उसको सूरज भी ला कर दे

दिया। बच्चा सूरज के साथ भी बहुत देर तक खेलता रहा फिर जब वह उससे खेलते खेलते थक गया तो उसने सूरज भी नाना को वापस कर दिया। नाना ने सूरज को भी ऊपर टॉग दिया।

अबकी बार बच्चे ने तारों से खेलने की जिद की तो उसको तारे भी दे दिये गये। अब जब भी वह इन चीज़ों से खेलना चाहता ये चीज़ें उसको दे दी जातीं और जब वह उनसे खेल चुकता तो वे वापस उठा कर रख दी जातीं।

इस तरह कुछ समय और बीत गया और बच्चा कुछ और बड़ा हो गया। एक दिन वह दिन से खेलने की जिद करने लगा पर इस बार उसका नाना उसको दिन देने के लिये डर रहा था क्योंकि एक तो दिन में रोशनी बहुत थी और दूसरे जब भी उसको बाहर निकाला जाता था सूरज, चॉद, तारे सभी उसके साथ काम करने लग जाते थे क्योंकि दिन तो सबका सरदार था न?

पर बच्चे की जिद के सामने नाना को हार माननी पड़ी और उसने बच्चे को दिन खेलने के लिये दे दिया। परन्तु जब भी बच्चा दिन से खेलता उसका नाना हमेशा कुछ बेचैन सा रहता।

बच्चा जब भी दिन को अपने हाथों ऊपर उठाता उससे सब जगह खूब रोशनी फैल जाती और जब वह उसको और ऊपर उठाता तो बहुत सारी रोशनी बहुत दूर तक फैल जाती। और जब वह उसको और बहुत ऊपर उठाता तब तो नाना की सॉस ऊपर की

ऊपर और नीचे की नीचे रह जाती और डर के मारे उसके मुँह से एक आह सी निकल जाती।

यह देख कर वह लड़का दिन को अपने हाथों में साधे रखने का अभ्यास करता रहता ताकि वह उसको ठीक से सँभाले रखे। और आखिरकार एक दिन वह वह काम करने में सफल हो गया जिसको करने के लिये वह आया था।

एक दिन जब वह खिलौनों से खेल रहा था तो उसने एक साथ दो खिलौने अपने हाथ में उठा लिये और देखा कि वह दो खिलौने एक साथ अपने हाथों ले कर भाग सकता था या नहीं। उसने देखा कि वह ऐसा कर सकता था।

एक दिन जब उसने देखा कि उसको कोई नहीं देख रहा था तो वह उन सबको उठा कर चिमनी के रास्ते से भाग लिया।

उसने दिन को उत्तर की तरफ फेंका, सूरज को पूरब की तरफ फेंका, चॉद को पश्चिम की तरफ फेंका और तारों को दक्षिण की तरफ फेंक दिया।

उनको फेंक कर वह बोला — "आज से दिन हुआ करेगा ताकि लोग देख सकें, काम कर सकें और एक जगह से दूसरी जगह आ जा सकें। रात के बाद सूरज निकलेगा और जब सूरज डूबेगा तो फिर रात भी होगी।

रात में लोग सोयेंगे, आराम करेंगे क्योंकि वे उस समय काम नहीं कर सकेंगे और न ही इधर उधर कहीं आ जा सकेंगे। उस समय चॉद और तारे आसमान में घूमेंगे और लोगों को रोशनी देंगे।

इसके अलावा ये सब चीज़ें आज से किसी एक आदमी की नहीं होंगी और उसके पास ताले में भी बन्द नहीं रहेंगी बल्कि सभी लोगों को फायदे के लिये काम में लायी जायेंगी। उस दिन से धरती पर दिन और रात होने शुरू हो गये।

दिन में सूरज रोशनी देने लगा और रात में चॉद और तारे। लोगों को दिन में दिखायी देने लगा और रात में चॉद तारों की मुलायम रोशनी लोगों को सुलाने लगी। लोग दिन में काम करने लगे और रात में सोने लगे।

3 रैवन की नाक[6]

बच्चो यदि तुमने कभी ध्यान से देखा हो तो रैवन पक्षी की नाक ऐसी लगती है जैसे उसको तोड़ कर दोबारा चिपकाया गया हो। कैनेडा के लोग इसकी ठीक ठीक वजह जानते हैं कि ऐसा तुम्हें क्यों लगता है।

वे कहते हैं कि एक बार कुछ लोग समुद्र में मछली पकड़ने के लिये जाल बिछाये बैठे थे पर उनके जाल में कोई मछली फॅस ही नहीं रही थी। एक रात जब वे अपनी अपनी मछलियों के कॉटों पर पहरा दे रहे थे तो उनमें से एक आदमी के कॉटे को एक झटका सा लगा।

वह झटका महसूस कर के उसने अपने कॉटे को कुछ और झटका दिया इससे रैवन की नाक उस मछली के कॉटे में फॅस गयी। वह रैवन मछली के कॉटे में लगा चारा खा रहा था। मछियारे ने अपना कॉटा भी तभी ऊपर खींच लिया।

रैवन को इतना भी समय नहीं मिल सका कि वह अपनी नाक उस कॉटे से बाहर खींच सकता। पर वह यह भी नहीं चाहता था कि उसको ये मछियारे पकड़ लें इसलिये उसने अपने आपको उस जाल से खींच लिया और इस खींचने में उसकी नाक टूट गयी।

[6] Nose of Raven. (Story No 3)

जब उस आदमी ने वह कॉटा ऊपर खींचा तो लोगों ने देखा कि उसके कॉटे में तो किसी की नाक लगी हुई है पर वह किसकी नाक थी यह कोई नहीं बता पाया। वे लोग उस नाक को निकाल कर अपने सरदार के पास ले गये।

उनका सरदार एक अक्लमन्द और अमीर आदमी था पर वह भी यह नहीं बता सका कि वह नाक किसकी थी। वहॉ और भी लोग बैठे थे पर उनमें से भी कोई यह नहीं बता सका कि वह नाक किसकी थी।

इधर रैवन ने मिट्टी की एक नाक बनायी और उसको अपने चेहरे पर लगा ली। फिर उसने अपना टोप पहना और उसको थोड़ा नीचे की तरफ खिसकाया और उसी गॉव में आया जिसमें उसकी नाक थी।

वह एक घर में गया तो लोगों ने कहा — "तुम तो इस गॉव में कोई अजनबी लगते हो। कहॉ से आये हो?"

रैवन बोला — "हॉ, मैं इस गॉव में अजनबी ही हूॅ। मैं यहॉ एक दूसरी जगह से आया हूॅ।"

उन्होंने फिर पूछा — "भाई, तुम कौन से देश से आये हो और तुम यहॉ किसलिये आये हो?"

रैवन बोला — "मैं यहॉ एक दूर देश से आया हूॅ क्योंकि मैंने सुना है कि तुम लोगों ने समुद्र में से कोई ऐसी चीज़ पकड़ी है

जिसको तुममें से कोई भी नहीं पहचान पा रहा है। मैं उसी अजीब चीज़ को देखने के लिये आया हूँ।"

लोग बोले — "हॉ भाई पकड़ी तो है पर वह हमारे सरदार के पास रखी है। चलो वहीं चलते हैं।" सो वे लोग रैवन को अपने सरदार के घर ले गये। सरदार ने रैवन को वह नाक दिखायी और उससे पूछा कि क्या वह उसे पहचानता है?

रैवन ने उसे अपने हाथ में उठा कर खूब उलट पलट कर देखा और उस पर अपना आश्चर्य भी प्रगट किया कि वह क्या हो सकती थी। पर फिर जैसे ही लोगों का ध्यान बॅट गया वह उसे ले कर घर की चिमनी के रास्ते ऊपर उड़ गया और उसको अपनी चेहरे पर लगा लिया।

इसी लिये रैवन की नाक पर एक निशान है जिससे ऐसा लगता है जैसे वह नाक वहॉ पर दोबारा लगायी गयी हो।

4 रैवन और कौए को नोआ का शाप[7]

जब नोआ[8] ने भगवान के कहने के अनुसार **100** सालों में नाव बना ली तो उसने धरती के सभी जानवरों को अपनी नाव में चढ़ा लिया और फिर वह स्वयं भी अपने परिवार के साथ उस नाव में चढ़ गया।

उसके बाद मूसलाधार बारिश शुरू हो गयी। पहले घाटियॉ भरीं, फिर मैदान भरे, फिर पानी पहाड़ियों तक पहुॅच गया और फिर ऊॅचे ऊॅचे पहाड़ भी डूब गये। सिवाय मछलियों के नाव के बाहर के जितने भी जानवर थे सब मर गये। जबकि नाव के अन्दर के सभी जीव बच गये क्योंकि वह नाव पानी पर थी सो तैरती रही।

काफी दिनों बाद जब बारिश बन्द हो गयी और पानी समुद्र में वापस चला गया, झीलों में चला गया, नदियों और नालों में चला गया तो नोआ ने यह देखना चाहा कि धरती फिर से रहने लायक हो गयी है या नहीं सो उसने अपनी नाव की एक खिड़की खोली और रैवन को बाहर भेजा।

उस समय तक रैवन ही भगवान के बनाये हुए जीवों में सबसे अधिक सुन्दर पक्षी था जिसके खूब सुन्दर और चमकीले पंख थे और जिसकी आवाज के जादू से सारा वातावरण खुशी से भर जाता था।

---

[7] Curse of Noah to Raven and the Crow. (Story No 4)

[8] Noah built the Ark

नोआ रैवन से बोला — "रैवन जाओ, धरती के ऊपर उड़ो और यदि तुम्हें कहीं कोई हरी घास मिले तो मुझे उसकी एक डंडी ला कर दो।" रैवन यह सुन कर उड़ गया।

बाहर जा कर रैवन ने कुछ चीज़ें तैरती देखीं तो वह अपनी भूख मिटाने में लग गया और अपने मालिक के हुक्म को भूल गया। नोआ की नाव अब तक पहाड़ की एक चोटी पर ठहर चुकी थी पर रैवन का तो कही पता ही नहीं था।

नोआ ने उसको अपना हुक्म न मानने पर शाप दे दिया जिससे उसके पंख काले हो गये तथा उसकी मीठी आवाज फटी आवाज में बदल गयी।

दूसरी बार नोआ ने फाख्ता को हरे हरे पेड़ों को देखने के लिये भेजा। तो पहली बार तो वह खाली ही लौट आयी पर दूसरी बार वह अपनी चोंच में एक शाख ले कर आयी जिसमें एक फल भी लगा हुआ था। नोआ ने उसको आशीर्वाद दिया और तबसे वह बिल्कुल सफेद और सुन्दर चिड़िया हो गयी और तभी से वह सबको प्यारी भी हो गयी।

अब नाव को खोलने का समय आ गया था सो नोआ ने नाव के दरवाजे और खिड़कियॉ खोल दिये जिनमें से इतने दिनों से अन्दर बन्द सभी जानवर निकल निकल कर धरती पर चारों ओर भागने लगे।

जैसे ही नोआ ने रैवन के सम्बन्धी कौए को देखा तो उसको भी शाप दे दिया कि "तुम और तुम्हारा रिश्तेदार रैवन हमेशा ही उड़ते रहेंगे। तुम दोनों खाने के मामले में लालची हो जाओगे और मॉस खाने वाले हो जाओगे। तुम्हारी आवाजें दुखभरी और चीखने जैसी हो जायेंगी। तुम जहॉ भी जाओगे वहॉ के लोग तुमको अपने पास से भगाने की कोशिश करेंगे।"

कौआ यह सब सुन कर बहुत दुखी हुआ पर फिर और पक्षियों के साथ बाहर उड़ गया। वह एक अकेली जगह चला गया और फिर अकेला ही घूमता रहा। खाने में वह मुर्दा मॉस खाता रहा। एक दिन उसको अपना भाई रैवन मिल गया। वह भी एक मुर्दा शरीर का सड़ा हुआ मॉस खा रहा था।

उन दोनों को पता चल गया था कि वे अब आदमियों के बीच में नहीं रह सकते सो दोनों आपस में दोस्त बन गये और उन्होंने आदमियों से दूर रहने की सोची। इसलिये वे दूर उत्तर की तरफ उड़ चले।

काफी समय की मुश्किल और थकान भरी उड़ान के बाद वे दोनों एक जंगल में एक पेड़ पर जा कर बैठ गये। वहॉ बड़ी शान्ति थी। ये कैनेडा के जंगल थे। उन्होंने सोचा था कि वे वहॉ आराम से रहेंगे पर उनका यह सोचना गलत था।

वे जब अगली सुबह सो कर उठे तो वह सुबह उनके लिये एक दर्द भरी सुबह थी। तेज हवाऐं चल रहीं थीं खूब ठंडा हो रहा था

और बर्फ पड़नी शुरू हो गयी थी। ठंड उनके शरीरों में घुसी जा रही थी। पेड़ों ने भी उनको रहने की जगह देने से मना कर दिया था सो वे वहॉ से फिर उड़ चले।

तब से हर साल कौए वसन्त में कैनेडा के उत्तरी भाग में उड़ कर आते हैं और वहॉ के पेड़ नोआ के शाप की वजह से उनको रोकने के लिये ऊपर की तरफ बढ़ते हैं।

इस कहानी को सुनाने वाले आदमी ने कहा था — "आज तो मौसम साफ है परन्तु यह साफ मौसम बहुत दिनों तक नहीं रहेगा क्योंकि मैंने तीन कौए देखे हैं जो दक्षिण की तरफ उड़ कर गये हैं। वे अवश्य ही आने वाले तूफान के डर की वजह से ही उड़ कर गये होंगे।"

इस पर उसकी पत्नी बोली — "जब वे यहॉ से जा रहे थे तब थोड़ी ठंड थी। बेचारे कौए। उनको अपनी इतनी पुरानी गलती की सजा अभी तक भुगतनी पड़ रही है और शायद आखीर तक भुगतते रहेंगे।"

भारत में भी कौए की दो कहानियॉ रामायण में आती है एक कहानी में इन्द्र का बेटा जयन्त एक कौए का रूप रख कर सीता जी को चोंच मारता है। राम उस पर तीर चलाते हैं। तीर से बचने की लिये वह सारे लोकों में घूमता रहता है पर कोई उसको अपने पास नहीं रखता। तब नारद जी उसको समझाते हैं कि राम के अपराधी को केवल राम ही बचा सकते हैं इसलिये तुम राम के पास जाओ वही तुम्हारी रक्षा करेंगे।

जयन्त तब राम के पास आता है और उनसे माफी मॉगता है। राम उसको माफ तो कर देते हैं पर उसको सजा जरूर देते हैं। वह उसकी बॉयी ऑख फोड़ देते हैं। उसकी गलती की सजा कौए अभी तक भुगत रहे हैं क्योंकि तब से वे केवल एक ऑख से ही देख सकते हैं।

रामायण में दूसरी कथा कागभुशुन्डि जी की आती है जिसमें कागभुशुन्डि जी रोज राम कथा कहते हैं और उसे दूसरे पक्षियों को सुनाते हैं। तो जब राम रावण के युद्ध के समय रावण राम लक्ष्मण को नागपाश में बॉध देता है तो हनुमान जी विष्णु के वाहन गरुड़ जी को उन्हें नागों से आजाद कराने के लिये ले कर आते हैं। गरुड़ जी सब नागों को खा कर उन दोनों को नागपाश से मुक्त कर देते हैं और अपने लोक को लौट जाते हैं।

लौटते समय उनके मन में घमंड आता है कि ये कैसे भगवान हैं जो सबको दुनियॉ से उबारते हैं और खुद को नागपाश से मुक्त नहीं कर पाये। उनको मुक्त कराने के लिये मुझे जाना पड़ा। इसका मतलब तो यह हुआ कि मैं उनसे ज़्यादा ताकतवर हूॅ। पर उनका मन यह बात मानने के लिये भी तैयार नहीं था।

रास्ते में उन्हें शिवजी मिले तो उन्होंने अपनी यह समस्या शिवजी के सामने रखी। शिवजी बोले — "अगर मैं तुम्हें यह समझाऊॅगा तो तुम्हारी समझ में यह नहीं आयेगा। तुम एक पक्षी हो इसलिये एक पक्षी की भाषा ही तुम्हारी समझ में आ सकती है। तुम फलॉ फलॉ पर्वत पर चले जाओ जहॉ कागभुशुन्डि जी सदा राम कथा कहते हैं उनकी कथा सुन कर ही तुम्हारे मन की यह गुत्थी सुलझेगी। इसके अलावा मैं भी अभी जल्दी में हूॅ।" कह कर उन्होंने उन्हें कागभुशुन्डि जी के पास भेज दिया जहॉ रामजी की कथा सुन कर गरुड़ जी का सन्देह दूर हुआ।

ये कागभुशुन्डि जी और कोई नहीं रैवन पक्षी ही था।

5 नीले निशान वाला आदमी[9]

ब्लड इंडियन्स[10] उत्तरी अमेरिका के रैड इन्डियन्स में सबसे अधिक ताकतवर और गुस्से वाले लोग हैं। रैड इन्डियन्स की रैवन[11] आदि की कहानियॉ तो दुनियॉ बनाने से सम्बन्धित हैं परन्तु इन ब्लड इन्डियन्स की कहानियॉ साधारण प्रकार की कहानियॉ हैं।

लगता है कि इन लोगों के यहॉ **4** नम्बर बड़ा पवित्र माना जाता है जैसे **3** नम्बर भारतीय और यूरोपियन लोगों में पवित्र समझा जाता है। इस पुस्तक की इस कहानी में भैंस का कटरा[12] **4** बार नाचता है और आदमी की मॉ भी **4** बार कहती है कि "ओ नीले निशान वाले, यह तेरा धुऑ है।"

तो लो पढ़ो कैनेडा के मूल निवासियों की यह अगली कहानी —

एक बार की बात है कि एक आदमी कहीं जा रहा था कि उसको एक भैंस कीचड़ में फॅसी दिखायी दे गयी। उसको उस भैंस पर दया आ गयी।

---

[9] Man With Blue Mark. (Story No 5)

[10] Blood Indians are one of the tribes of Native Indians of North America

[11] See "Raven Ki Lok Kathayen-1", by Sushma Gupta. Bhopal : Indra Publishing House. 2016. 116 p. "Raven Ki Lok Kathayen". by Sushma Gupta. Delhi : Prabhat Prakashan. 2019.

[12] The son and daughter of buffalo are called "Kataraa and "Katiya" in Hindi. If they are of a cow they are called "Bachhadaa" and "Bachhiyaa" respectively.

पास में ही उसको एक डंडा पड़ा दिखायी दे गया तो उसने उस डंडे से उस भैंस को कोंचना शुरू कर दिया। कुछ पल बाद ही वह भैंस कूदी और उस कीचड़ से बाहर निकल गयी।

आदमी यह देख कर बहुत खुश हुआ कि वह भैंस की सहायता कर सका। भैंस को निकाल कर आदमी अपने रास्ते चला गया और भैंस अपने रास्ते चली गयी।

इस बात को काफी समय बीत गया। वसन्त आया। सभी भैंसों ने अपने अपने बच्चों को जन्म दिया। उस भैंस ने भी एक कटरे को जन्म दिया जो कीचड़ में फॅस गयी थी।

यह कटरा जब थोड़ा बड़ा हुआ तो अपने साथी बछड़ों के साथ खेलने लगा। पर दूसरे बछड़े अपने छोटे छोटे सींग मार कर उसको छेड़ते और कहते — "तू भैंस का बच्चा नहीं है। तू तो आदमी का बच्चा है।"

कटरे ने जा कर यह सब अपनी मॉ से कहा तो उसकी मॉ ने कहा — "अगर ऐसी बात है तो हम तुम्हारे पिता की तलाश करेंगे।" और दोनों मॉ बेटे उस कटरे के पिता को ढूँढने निकल पड़े।

काफी दिनों तक इधर उधर घूमते रहने के बाद वे एक घाटी में बसे एक गॉव में आये। उस कटरे ने आदमी का रूप रख कर उस गॉव के बच्चों के साथ खेलना शुरू कर दिया। दिन भर वह उनके

साथ खेलता और शाम को वह पास के पेड़ों के एक झुंड की तरफ चला जाता।

गॉव में किसी को भी यह पता नहीं था कि वह बच्चा कौन है, कहॉ से आता है और कहॉ चला जाता है। एक आदमी की उस बच्चे के बारे में जानने की इच्छा हुई तो उसने बच्चों से उस बच्चे से उसके बारे में पूछने के लिये कहा।

अगले दिन जब वह बच्चा आया तो दूसरे बच्चों ने उस बच्चे से पूछा — "तुम इधर उधर क्यों घूमते रहते हो?"

बच्चे ने जवाब दिया — "मैं अपने पिता को खोज रहा हूॅ।"

लोगों ने कहा कि यदि ऐसा है तो हमें उसको सब घरों में ले कर जाना चाहिये ताकि वह अपने पिता को पहचान सके।

एक शाम उन लोगों ने गॉव के सभी शादीशुदा आदमियों को एक जगह इकट्ठा किया और उस लड़के को बुला कर पूछा — "बोलो बेटे, इनमें से तुम्हारा पिता कौन है?"

लड़के ने सबकी तरफ देख कर कहा — "कोई नहीं।"

फिर गॉव के सभी कुॅआरे आदमियों को इकट्ठा किया गया और तब उस लड़के से पूछा गया — "अब बताओ बेटे, क्या इनमें से कोई तुम्हारा पिता है?"

लड़के ने अबकी बार चारों ओर देख कर एक आदमी की तरफ इशारा कर के कहा — "जी यह हैं मेरे पिता।"

वहॉ आये हुए सभी लोगों को खाना खिलाया गया। उस आदमी की थाली में जिसकी तरफ उस बच्चे ने इशारा किया था अधिक खाना परोसा गया ताकि वह अपने बेटे को अपने साथ ठीक से खाना खिला सके।

वह लड़का उस आदमी के पास बैठा हुआ था और वह आदमी यह सोच रहा था कि वह लड़का उसके पास क्यों बैठा हुआ था।

जब सब लोग खाना खा चुके तो वे सभी वहॉ से चल दिये। लड़का उस आदमी से बोला — "आइये, आप मेरे साथ आइये।"

और वह लड़का उस आदमी को गॉव के बाहर ले जा कर बोला — "मैं अपने पिता को ढूँढ रहा था सो आज वह मुझे मिल गये। आप ही हैं मेरे पिता।"

वह आदमी तो यह सुन कर वह आदमी हक्का बक्का रह गया। उसने सोचा कि मैं तो किसी स्त्री को जानता तक नहीं फिर मेरा यह बच्चा कहॉ से आ गया।

इस आदमी के चेहरे पर एक नीला निशान था। उसने ध्यान से देखा तो उसको वैसा ही एक नीला निशान उस लड़के के चेहरे पर भी दिखायी दिया।

पर इससे उसकी यह गुत्थी अभी भी नहीं सुलझी कि जब वह किसी स्त्री को जानता तक नहीं था तो फिर यह लड़का उसका कैसे हुआ।

लड़का फिर बोला — "देखिये, मैं अपनी मॉ को लाने जा रहा हूँ। वह आपको देखते ही आपको मारने दौड़ेगी पर आप डरियेगा नहीं बस आप उसके दोनों सींग पकड़ लीजियेगा। आइये आप ज़रा इस खुली जगह में आ जाइये।"

वह आदमी खुली जगह की तरफ बढ़ा ही था कि इतने में ही उस बच्चे की मॉ भैंस आ गयी और उस आदमी को मारने दौड़ी।

आदमी को लड़के की बात याद आ गयी और उसने निडर हो कर उस भैंस के दोनों सींग पकड़ लिये। आश्चर्य, सींग पकड़ते ही वह भैंस गायब हो गयी और उसके सामने एक सुन्दर स्त्री खड़ी थी।

तब उस स्त्री ने उस आदमी को सारी कहानी सुनायी और उसको बताया कि देखो इस लड़के का चेहरा तुम्हारे जैसा ही है। अब उस आदमी की कुछ कुछ समझ में आ रहा था कि यह सब कैसे हुआ होगा। वह उन दोनों को घर ले आया। काफी दिनों तक वे साथ साथ रहे।

उस आदमी के पास दो चिड़ियॉ थीं – एक कौआ और एक मैना[13]। दोनों चिड़ियें उस लड़के के दोनों कंधों पर बैठ कर उसके साथ खूब खेलती थीं।

एक दिन उस स्त्री ने उस आदमी को बताया — "तुम मुझे किसी भी चीज़ से मार सकते हो, पीट सकते हो पर न तो मुझे कभी

[13] One was a crow and the other was a magpie. See the picture of the magpie above.

किसी नुकीली चीज़ से मारना और न मेरे ऊपर कभी राख फेंकना।"

आदमी ने कहा "ठीक है।" इस बीच उस आदमी के माता पिता भी उस बच्चे को बहुत प्यार करने लगे थे।

एक दिन वह आदमी अपनी पत्नी से किसी बात पर बहुत नाराज हो गया। उसने चूल्हे से एक जलती हुई लकड़ी उठायी और उससे उस स्त्री को डराना चाहा।

स्त्री और उसके बेटे ने जब वह लकड़ी देखी तो दोनों डर के मारे बाहर की तरफ भागे। वह आदमी भी उनके पीछे पीछे भागा परन्तु तब तक वे दोनों भैंस और कटरे में बदल चुके थे और दोनों ही वहॉ से जंगल की तरफ भाग गये थे।

लड़के के दादी और बाबा अपने पोते को इधर उधर ढूँढ रहे थे। कौआ और मैना भी उस लड़के को उड़ उड़ कर इधर उधर ढूँढने की कोशिश कर रहे थे। पर वह तो उनको न मिलना था न मिला।

उस आदमी की मॉ रो कर बोली — "तुमने जरूर ही मेरे पोते के साथ कुछ बुरा किया है। जब तुम्हारी पत्नी ने पहले से तुमको कह रखा था कि उसको कभी नुकीली चीज़ से नहीं मारना तो तुम उसको जलती हुई लकड़ी से मारने क्यों दौड़े? वह जादू जानती थी पर तुम नहीं माने और देखो अब वे दोनों ही कहीं चले गये हैं।"

इस पर वह आदमी बोला — "अच्छा मॉ तुम परेशान मत हो मैं उन दोनों को ढूँढने की कोशिश करता हूँ। अगर मैं कुछ समय तक न लौटूँ तो मेरी चिड़ियों को मेरे पीछे भेज देना।

और अगर वे मेरी कोई छोटी से छोटी चीज़ भी ले आयें तो मेरे बिछौने पर रख कर उसको ढक देना और अपने पाइप में तम्बाकू जला कर उसका धुँआ मेरी उस चीज़ की तरफ उड़ा कर चार बार कहना — "ओ नीले निशान वाले, यह तेरा धुँआ है।" यह कह कर वह आदमी वहॉ से चला गया।

काफी समय इधर उधर घूमने के बाद उसको भैंसों का एक बड़ा सा झुंड दिखायी दिया। ध्यान से देखने पर उसको लगा कि उनमें से एक भैंस अपने कटरे के साथ दूसरी भैंसों से कुछ अलग सी अकेली बैठी है। उसे लगा कि शायद वही उसकी पत्नी और लड़का है।

उसने भैंस का गोबर अपने शरीर पर लपेट लिया और भैंसों के पानी पीने की जगह पर एक गड्ढे में छिप कर बैठ गया।

पहले सारी भैंसें पानी पीने आयीं फिर उनके बच्चे पानी पीने आये। बस उसने अपने वाले बच्चे को पकड़ लिया।

बच्चा अपने पिता को देख कर बहुत खुश हुआ और बोला — "मैं अपनी मॉ को जा कर बताता हूँ।"

वह दौड़ा दौड़ा अपनी मॉ के पास गया और जा कर उससे बोला — "मॉ, पिता जी आ गये।"

भैंस उसके पास आयी तो वह बोला — "मैं तुम्हें लेने आया हूँ।"

भैंस बोली — "मुझे अपने सरदार से पूछ लेने दो। अगर वह हाँ कह देगा तभी मैं तुम्हारे साथ जाऊँगी। तुमने हमारे साथ अच्छा नहीं किया। हम लोग राख और चाकू से बहुत डरते हैं। तुमने सचमुच ही हमारे साथ बहुत ही बुरा किया है।"

वह कटरा उस समूह के सरदार के पास गया, उसने उससे कुछ बात की और वापस आ कर बोला — "सरदार कहते हैं कि एक नाच होगा जो चार बार होगा और अगर चारों बार आपने मुझे पहचान लिया तो हम सब अपने घर वापस जा सकते हैं।"

जब भैंसों के सारे बच्चे नाच के लिये इकट्ठा हुए तो उस आदमी का बेटा अपने पिता से बोला — "पहली बार मैं अपनी पूँछ मोड़ कर नाचूँगा। दूसरी बार मैं अपने आगे वाले पैरों में से एक पैर उठा कर नाचूँगा।

तीसरी बार मैं अपने दोनों कान नीचे कर के नाचूँगा और चौथी बार मैं अपनी आँखें बन्द कर के नाचूँगा। बस इसी तरीके से आप मुझे पहचान लीजियेगा।"

तीन बार तो उस आदमी ने अपने बेटे को पहचान लिया परन्तु चौथी बार में सभी बच्चों ने अपनी आँखें बन्द कर लीं इससे वह उसको नहीं पहचान सका।

सारे बच्चे उस आदमी के ऊपर दौड़ पड़े और उसको कुचल कुचल कर मार डाला। जब उसके शरीर का कोई भी हिस्सा नहीं बचा तो वे सब वहॉ से चले गये।

उधर काफी दिन के बाद भी जब वह आदमी घर वापस नहीं लौटा तो उसकी मॉ ने उसकी चिड़ियों को छोड़ दिया। कुछ समय बाद वे उसके मॉस का एक टुकड़ा ले कर घर वापस लौट आयीं।

मॉ ने अपने बेटे के कहे अनुसार उसके मॉस के टुकड़े को उसके बिछौने में रख कर उसको ढक दिया और पाइप से तम्बाकू जलाते हुए धुँआ उसकी ओर उड़ाते हुए बोली — "ओ नीले निशान वाले, यह तेरा धुँआ है।" ऐसा उसने चार बार कहा।

मॉ के ऐसा कहते ही वह आदमी तुरन्त ही अपने बिछौने में से बाहर निकल आया और बोला — "मॉ, मुझे दुख है कि मैं तेरे लिये कुछ भी नहीं कर पाया। मैं तेरे पोते को वापस नहीं ला सका।"

6 सात तारे[14]

इस कहानी में सबसे छोटा भाई चार बार तीर फेंकता है।

एक स्त्री अपने सात भाइयों के साथ अकेली रहती थी। एक बार उसके छह बड़े भाई कहीं बाहर गये हुए थे केवल सबसे छोटा भाई ही घर में था। उसने उस भाई को भी बाहर भेज दिया क्योंकि वह उन सबको मारने की तरकीब सोच रही थी।

एक दिन जब उसका सबसे छोटा भाई चिड़ियॉ मार कर घर वापस लौटा तो उसने सुना कि उसकी बहिन एक हिरन और एक पंख से कह रही थी — "अगर वे इस पंख को मार सके तभी वे मुझे मार सकेंगे।"

यह सुन कर उसका छोटा भाई वहॉ से भाग लिया। रास्ते में उसे उसके बड़े छहों भाई मिले। उसने उनसे कहा कि उनकी बहिन ने उन सबको मारने का प्लान बना रही है इसलिये उन सबको वहॉ से भाग जाना चाहिये। यह सुन कर वे सारे भाई वहॉ से भाग लिये।

जब उस स्त्री के वे सब भाई घर वापस नहीं लौटे तो उस स्त्री को पता चल गया कि उसके भाइयों को उसके प्लान का पता चल गया है सो वह भी उनके पीछे पीछे भाग ली।

[14] Seven Stars. (Story No 6)

भाइयों ने देखा कि उनकी बहिन तो उनको बहुत जल्दी पकड़ लेगी तो सबसे छोटा भाई बोला — "चलो इस गड्ढे में छिप जाते हैं।"

जब सब उस गड्ढे के पास आ गये तो वह बोला अब सब अपनी अपनी ऑखें बन्द कर लो। सबने अपनी अपनी ऑखें बन्द कर लीं।

फिर उसने बहुत दूर एक तीर फेंका और उन सबसे अपनी अपनी ऑखें खोलने के लिये कहा। सब लोगों ने देखा कि वे सब अब वहॉ खड़े हुए थे जहॉ उनके छोटे भाई का तीर गिरा था।

वहॉ से उन्होंने फिर भागना शुरू किया और जब उन्होंने फिर देखा कि उनकी बहिन उनके बहुत पास आ गयी है तो उनके सबसे छोटे भाई ने फिर वही किया। उसने फिर एक बार तीर फेंका और वे सब एक पल में ही वहॉ से बहुत दूर थे।

ऐसा उन्होंने चार बार किया और अब वे एक घाटी में खड़े हुए थे। वहॉ वे सब एक पेड़ पर चढ़ गये। सबसे छोटा भाई उस पेड़ पर सबसे ऊपर था।

उनमें से सबसे नीचे जो भाई बैठा था उसने अपनी बहिन को मारने की कोशिश की पर वह उसे न मार सका। उसकी बहिन ने उसको एक ही बार में मार दिया।

इस प्रकार उनकी बहिन ने अपने सबसे छोटे भाई ओकीना[15] को छोड़ कर अपने सब भाइयों को मार डाला।

इतने में एक चिड़िया उड़ती हुई आयी और बोली — "ओकीना, वह देख वह पंख।"

ओकीना ने बहुत सॅभाल कर उस पंख को मारने के लिये तीर चलाया पर उसका तीर उस पंख को केवल छू ही सका। फिर भी उसके तीर के उस पंख को छूने से ही उसकी बहिन चक्कर खा कर गिर पड़ी।

चिड़िया फिर उड़ती हुई आयी और उसने फिर वही कहा। अबकी बार ओकीना ने फिर से तीर चलाया। अबकी बार उसका निशाना ठीक लगा और उसने वह पंख तोड़ दिया। पंख टूटते ही उसकी बहिन मर गयी।

ओकीना ने अपनी बहिन का दिल निकाल लिया और उसके छोटे छोटे टुकड़े कर के उनको सुखा लिया। जब वे सूख गये तो उसने उनको जला दिया। उसका धुॅआ सूॅघते ही उसके छहों भाई ज़िन्दा हो गये।

अब वे लोग अपने भविष्य के बारे में सोचने लगे।

सबसे बड़ा भाई बोला — "क्यों न हम सात भैंसे बन जायें और एक साथ रहें?"

ओकीना बोला — "नहीं, ऐसे तो लोग हमको मार देंगे।"

[15] Okina – the name of the youngest brother of the woman

दूसरा भाई बोला — "और यदि हम सात हिरन बन जायें तो।"

ओकीना ने उनकी यह सलाह भी नहीं मानी क्योंकि इस तरह भी उनको कोई मार सकता था।

औरों ने सलाह दी कि वे सात झील बन जायें या सात पेड़ बन जायें या सात पत्थर बन जायें पर ओकीना ने सब में कोई न कोई गड़बड़ निकाल दी।

इस पर वे बोले — "तो आखिर तुम चाहते क्या हो?"

ओकीना बोला — "मैं चाहता हूँ कि हम लोग सब एक साथ ऐसे ही पास पास बैठे रहें, पर यहाँ नहीं, आसमान में। और फिर आने वाले समय में लोग हमारे बारे में कहानियाँ कहा करेंगे।"

सबने पूछा "वह कैसे?"

और फिर वे सात तारे बन गये और एक साथ रहने लगे। वे ही सात तारे हमें आज सप्तर्षि मंडल के रूप में आसमान में हमेशा एक साथ दिखायी देते हैं।

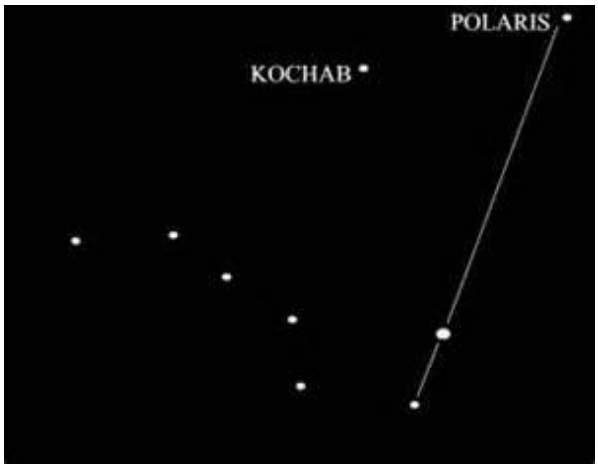

फ्रैन्च कैनेडा की कुछ लोक कथाऐं

जैसा कि सब जानते हैं आज से **500** साल से अधिक से भी पहले धरती के इस टुकड़े को कोई नहीं जानता था। दुनियॉ के नक्शे पर धरती के इस टुकड़े का कोई नामो निशान नहीं था।

इटली के एक यात्री ने **1497** में धरती के इस टुकड़े को खोजा और फिर **1537** के बाद तो यूरोप के कई देश, फ्रांस और ब्रिटेन आदि देशों के लोग यहॉ आ कर बसने शुरू हो गये। फ्रांस इन देशों में सबसे पहला देश था।

1763 में फ्रांस ने अपने अधिकार में लिये हुए उत्तरी अमेरिका के लगभग सारे राज्य ब्रिटेन को दे दिये सो उसके बाद से अमेरिका की जमीन के किसी भी टुकड़े पर फ्रांस का अब कोई अधिकार नहीं है।

परन्तु कैनेडा में अभी भी बहुत सारे लोग ऐसे हैं जो फ्रेंच बोलते और समझते हैं और इसी लिये यहॉ अंग्रेजी और फ्रेंच दो राष्ट्रीय भाषाऐं हैं और यहॉ की सरकार भी दोनों भाषाओं का सरकारी तौर पर बराबर का इस्तेमाल करती है। यहॉ का एक पूरा

प्रान्त क्युबैक[16] तो केवल फ्रैन्च ही बोलता है फिर भी यहाँ अंग्रेजी भाषा बोलने वाले ज़्यादा हैं और फ्रेंच भाषा बोलने वाले कम हैं।

ये कुछ कथाऐं वे लोक कथाऐं हैं जो फ्रेंच भाषा बोलने वालों में कही सुनी जाती हैं। जब फ्रेंच लोग यहाँ आये तब वे अपनी लोक कथाऐं और उनके चरित्र अपने साथ लेते आये थे जैसे टी–जीन आदि।

इन कथाओं में वहाँ की बहुत सारी ऐसी धार्मिक कथाऐं भी कही सुनी जाती हैं जो दुनिया के बनाने और बाढ़ से जुड़ी हुई हैं, जैसे भगवान ने मधुमक्खी और शैतान ने मेंढक कैसे बनाये आदि आदि। इनके अलावा वहाँ की जादू की या आश्चर्य वाली कथाऐं भी बहुत मशहूर हैं।

इन कथाओं में धार्मिक सच बिल्कुल भी नहीं है। इनमें से बहुत सारी कथाऐं यूरोप तथा एशिया की कथाओं से बहुत मिलती जुलती हैं जिनके हीरो टी जीन और छोटा जौन[17] हैं।

[16] Quebec is a French-speaking Province of Canada.

[17] Ti-Jean and Little John

7 मधुमक्खी और मेंढक[18]

जब भगवान ने सूरज, धरती, चॉद और तारे बनाये तो उसने धरती पर नदी नाले पेड़ और फल भी बनाये। फिर उसने आदम और ईव[19] भी बनाये जो इन सबमें राजा और रानी की तरह रह सकें।

उनके पास वह सब कुछ मौजूद था जो उनको खुश रहने के लिये चाहिये था। हजारों सुन्दर चीज़ों में मधुमक्खी को कैसे भूला जा सकता है। यह छोटा सा कीड़ा तो कितना सारा मोम और शहद बनाता है।

एक दिन जब आदम और ईव शहद का आनन्द ले रहे थे तो शैतान उनका यह आनन्द सहन न कर सका और उसने इस आनन्द को जड़ से ही नष्ट करने की योजना बना डाली।

वह धीरे से उनके बागीचे में पहुॅचा और मधुमक्खी के एक छत्ते के पास पत्तियों में छिप कर बैठ गया।

वहॉ उसने एक ऐसा जीव बनाना शुरू कर दिया जो मधुमक्खी को खा सके। क्योंकि भले भगवान ने मधुमक्खी बनायी थी जो ताकतवर थी, मेहनती थी, और बड़ों की इज़्ज़त करती थी इसी लिये शैतान उसे मारना चाहता था।

[18] Bee and Toad. (Story No 7)

[19] Adam and Eve – the first man and woman according to Christianity.

शैतान ने अपने हाथों में थोड़ी सी मिट्टी ली और उसे अपने हाथों में काफी देर तक इधर उधर घुमाता रहा।

जब उसकी कुछ शक्ल सूरत सी बन गयी तो उसने उसमें तीन बार फूँक मारी और मधुमक्खी के छत्ते की तरफ देख कर कुछ अजीब से शब्द बुड़बुड़ाये। फिर उसने अपना बनाया वह जीव मधुमक्खी के छत्ते की तरफ फेंक दिया।

परन्तु क्योंकि शैतान की जीव पैदा करने की जानकारी अभी अधूरी ही थी इसलिये अपने इस जीव को वह पंख लगाना भूल गया।

वह जीव छत्ते से टकरा गया और छत्ते की सारी मधुमक्खियॉ उड़ कर पेड़ की एक दूसरी शाख पर चली गयीं और वह जीव बेचारा छत्ते से टकरा कर नीचे गिर पड़ा।

शैतान का बनाया यह जीव मेंढक था। वह कुछ पल तो धरती पर ऐसे ही पड़ा रहा जैसे मर गया हो पर फिर वह धीरे धीरे हिला और उसकी जान में जान आयी। बाद में उसकी सॉस भी ठीक से आनी शुरू हो गयी।

कुछ मधुमक्खियॉ जो छत्ता छोड़ कर भाग गयी थीं अब उस मेंढक के आस पास उड़ने लगीं। और दूसरी मक्खियॉ भी उस अजीब जीव को देखने के लिये वहॉ आ पहुँची।

मेंढक जो इन मक्खियों को खा जाने के इरादे से बनाया गया था भूख से परेशान उठा और उसने कूदना शुरू कर दिया। कुछ मक्खियॉ तो उसने खा लीं पर बहुत सारी उड़ भी गयीं।

उस दिन से आज तक जहॉ भी शहद की मक्खी के छत्ते होते हैं वहॉ दो चार मेंढक जरूर ही दिखायी दे जाते हैं। वे हमेशा उनके ऊपर हमला करने और उनको खाने की ताक में लगे रहते हैं।

आज भी यह मेंढक बहुत ही भद्दा जानवर होता है जिससे साफ पता चलता है कि वह शैतान का बनाया हुआ है, भले भगवान का नहीं।

8 टी जीन और बड़ी सफेद बिल्ली[20]

बहुत पुरानी बात है कि एक राज्य में एक राजा राज करता था। उसके तीन बेटे थे। एक का नाम था टी जीन, दूसरे का नाम था कौरडन ब्ल्यू और तीसरे का नाम था कौरडन वर्ट[21]।

एक दिन राजा ने अपने तीनों बेटों को बुलाया और कहा — "अब तुम तीनों बड़े हो गये हो इसलिये मैं अब यह देखना चाहता हूँ कि मेरे बाद तुम तीनों में से मेरा राज्य कौन सँभालेगा।

इसके लिये तुम लोगों को एक इम्तिहान पास करना होगा। तुम तीनों में से जो कोई भी मुझे सबसे बढ़िया घोड़ा ला कर देगा मैं उसी को अपना राज्य दूँगा।"

अब क्या था तीनों बेटे चल दिये दुनियाँ का सबसे बढ़िया घोड़ा ढूँढने। चलते चलते तीनों एक चौराहे पर आये और वहाँ से तीनों ने अपने अपने रास्ते अलग कर लिये।

अलग होने से पहले उन्होंने एक दिन पक्का कर लिया कि उस दिन वे लोग उसी जगह पर मिलेंगे।

जीन अपनी सड़क पर चलता गया और चलता गया और आखिर वह सड़क खत्म हो गयी। पर वहाँ से एक कच्चा रास्ता

[20] Ti-Jean and the Big White Cat. (Story No 8)
[21] Ti-Jean, Cordon-Bleu, Cordon-Vert

जंगल की तरफ जाता था। जीन ने वही रास्ता पकड़ लिया और उसी रास्ते पर चल दिया।

आगे जा कर उसे एक फूस की झोंपड़ी दिखायी दी और साथ में दिखायी दी एक बड़ी सी सफेद बिल्ली जो चार मेंढकों के साथ पानी भर रही थी।

उसको यह सब देख कर बड़ा अजीब सा लगा सो वह छिप कर उनको देखने लगा। बिल्ली ने एक बड़े से मिट्टी के बर्तन में पानी भरा और उन चारों मेंढकों से अलग हो गयी। अलग हो कर उसने उस बर्तन के पानी में डुबकी लगा दी।

पर यह क्या? पानी में डुबकी लगाते ही वह बिल्ली तो गायब हो गयी और उसमें से एक बहुत सुन्दर राजकुमारी निकल आयी। इतनी सुन्दर राजकुमारी तो जीन ने पहले कभी नहीं देखी थी।

राजकुमारी ने भी जीन को देख लिया तो उसने उससे पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये राजकुमार?"

राजकुमार बोला — "मुझे एक बहुत बढ़िया घोड़ा चाहिये। हम लोग तीन भाई हैं। हमारे पिता ने कहा है कि जो कोई भी मुझे सबसे बढ़िया घोड़ा ला कर देगा मैं अपने बाद अपना राज्य उसी को दूँगा।"

राजकुमारी बोली — "कल सुबह मैं फिर से बिल्ली बन जाऊँगी तब तुम मेरे घर में जाना और वहाँ से मेरा सबसे अच्छा मेंढक ले जाना।

जब तुम उसको ले कर अपने पिता के घर लौटोगे तो उस पर एक कंघा घुमा देना। अगले दिन वह देश का सबसे बढ़िया घोड़ा बन जायेगा।"

अगले दिन जीन ने बिल्ली के घर से उसका सबसे अच्छा मेंढक लिया और अपने घर वापस चल दिया। चलते चलते वह उसी चौराहे पर आया जहाँ से वह अपने दूसरे दो भाइयों से अलग हुआ था।

वह जब वहाँ पहुँचा तो उसके दोनों भाई अपने अपने बढ़िया घोड़ों के साथ उसका इन्तजार कर रहे थे। पर जीन के पास तो कोई घोड़ा था नहीं, उसके पास तो था केवल उसका मेंढक।

जीन के भाइयों ने जब जीन को एक मेंढक के साथ आते देखा तो वे बड़ी कठिनाई से अपनी हँसी रोकते हुए बोले — "इस तरह पिता जी के सामने मत जाना नहीं तो मरोगे।" पर जीन उन दोनों के पीछे पीछे आता रहा।

उन्होंने फिर कहा — "तुम इस तरीके से हमारे पीछे पीछे मत आओ, यह हमारा अपमान है।"

"कोई बात नहीं।" कह कर जीन फिर भी उनके पीछे पीछे ही चलता रहा।

घर पहुँचते पहुँचते उनको शाम हो गयी सो उन दोनों भाइयों ने अपने अपने घोड़े अस्तबल में बाँध दिये और खुद वे सोने जाने लगे कि तभी जीन ने अपने पिता का कंघा अपने मेंढक पर घुमा दिया।

उसके भाई बोले — "जीन, तुम पिता जी का कंघा तोड़ दोगे।"

जीन बोला — "कोई बात नहीं, मेरे पिता जी दूसरा कंघा खरीद सकते हैं।"

अगले दिन कौरडन ब्ल्यू और कौरडन वर्ट उठे और अपना अपना घोड़ा ले कर राजा के पास पहुँचे।

राजा ने पूछा — "और टी जीन कहाँ है?"

वे बोले — "ओह वह? उसके पास तो केवल एक मेंढक है पिता जी।"

राजा बोला — "फिर भी, मुझे उसे देखना तो चाहिये ही न।"

इतने में टी जीन भी अपना घोड़ा ले कर वहाँ आ पहुँचा। उसका मेंढक देश का सबसे सुन्दर घोड़ा बन चुका था। उसकी गर्दन पर चाँदी के बाल थे और पाँव में सोने के खुर थे।

उसे देखते ही राजा के मुँह से निकला — "ओह, कितना सुन्दर घोड़ा है टी जीन तुम्हारा। टी जीन तुम जीत गये।"

राजा फिर बोला — "ऐसा है कि राजा बनने के लिये तीन इम्तिहान पास करने पड़ते हैं। तो एक इम्तिहान तो हो गया तुम्हारा पर अभी दो इम्तिहान और बाकी हैं।

दूसरा इम्तिहान यह है कि जो कोई भी मुझे सबसे अच्छा हाथ का बुना कपड़ा ला कर देगा उसी को मेरा राज्य मिलेगा।"

और तीनों राजकुमार एक बार फिर से चल दिये दुनियॉ का सबसे अच्छा हाथ का बुना कपड़ा लाने। पर इस बार पैदल नहीं बल्कि अपने अपने घोड़ों पर सवार हो कर।

तीनों फिर से उसी चौराहे पर आये और अपने अपने रास्तों पर चल दिये, उसी तरह से एक खास दिन पर मिलने का वायदा कर के।

टी जीन अपनी फिर उसी झोंपड़ी के पास पहुॅच गया। वहॉ वह बिल्ली अभी भी अपने चार मेंढकों के साथ पानी भर रही थी।

जब बिल्ली का वह बड़ा मिट्टी का बर्तन पानी से भर गया तो उसने उस पानी में डुबकी लगायी और उस दिन की तरह से वह बिल्ली एक बार फिर से राजकुमारी बन कर बाहर आ गयी।

राजकुमारी ने राजकुमार से पूछा — "राजकुमार, आज तुम्हें क्या चाहिये?"

राजकुमार बोला — "आज मुझे सबसे बढ़िया हाथ का बुना कपड़ा चाहिये जैसा मेरे पिता ने पहले कभी न देखा हो।"

राजकुमारी ने फिर वही कहा — "कल जब मैं बिल्ली बन जाऊँगी तब तुम मेरे घर आना और मेरी छोटी सी सन्दूकची में पड़ा सबसे ज़्यादा भद्दा दिखायी देने वाला अखरोट[22] ले जाना।

घर पहुँच कर उसमें चाकू से एक चीरा लगा देना और वह तीस एल[23] का संसार का सबसे बढ़िया हाथ का बुना कपड़ा बन जायेगा जैसा तुम्हारे पिता ने पहले कभी नहीं देखा होगा।"

राजकुमार अगले दिन उस बिल्ली के घर गया और उसकी छोटी सी सन्दूकची में से सबसे ज़्यादा भद्दा दिखायी देने वाला अखरोट निकाला और चल दिया।

तीनों राजकुमार फिर उसी चौराहे पर मिले और घर की तरफ चल दिये।

कौरडन ब्ल्यू और कौरडन वर्ट के पास तो बहुत सुन्दर सुन्दर कपड़े थे पर जीन के पास तो केवल एक भद्दा सा अखरोट था और वह भी उसकी जेब में रखा था तो वह तो किसी को दिखायी भी नहीं दे रहा था।

अगले दिन दोनों भाइयों ने अपने अपने लाये कपड़े राजा को दिखाये। राजा ने पूछा — "और टी जीन? वह कहाँ है?"

दोनों बोले — "उसके पास तो हमने कुछ देखा नहीं।"

---

[22] Walnut. See its picture above

[23] 1 L = 45", so 30 L = 30 X 45" = 1350" = 37.5 yards

तभी टी जीन आया और वह अखरोट अपने पिता के हाथ में दे कर बोला — "पिता जी, इस अखरोट को मेज पर रख कर इसे चाकू से तोड़िये।"

राजा ने ऐसा ही किया तो वह तीस एल का संसार का सबसे बढ़िया हाथ का बुना कपड़ा बन गया।

ऐसा कपड़ा तो राजा ने पहले कभी नहीं देखा था। उसके मुँह से निकला — "वाह, कितना बढ़िया कपड़ा है।" इस तरह टी जीन इस बार भी जीत गया।

राजा बोला — "अब आखिरी इम्तिहान यह है कि जो कोई भी सबसे सुन्दर लड़की ले कर आयेगा यह राज्य उसी को मिलेगा। बस, तुम लोगों का यह आखिरी इम्तिहान है। इसके बाद अब और कोई इम्तिहान नहीं।"

तीनों राजकुमार एक बार फिर अपने अपने घोड़ों पर सवार हो कर अपने सफर पर रवाना हुए और फिर अपने पुराने रास्तों पर चल दिये।

टी जीन फिर से अपनी उसी पुरानी झोंपड़ी के पास पहुँचा। वहाँ वह सफेद बिल्ली अभी भी अपने चार मेंढकों के साथ पानी भर रही थी।

जब उस बिल्ली का वह बड़ा मिट्टी का बर्तन पानी से भर गया तो उस बिल्ली ने उस पानी में डुबकी लगायी और वह पहले की तरह एक सुन्दर राजकुमारी बन गयी।

अबकी बार टी जीन उस राजकुमारी को देख कर एक आह भर कर वहीं धम्म से जमीन पर बैठ गया। यह राजकुमारी उसको इससे पहले तो कभी इतनी सुन्दर नहीं दिखायी दी थी।

राजकुमारी ने फिर राजकुमार को देखा तो आश्चर्य से बोली — "राजकुमार, अब तीसरी बार तुम्हें क्या चाहिये?"

राजकुमार बोला — "मेरे पिता जी ने राजा बनने के लिये तीन इम्तिहान रखे थे। दो इम्तिहानों में तो मैं पास हो गया। अब यह मेरा तीसरा इम्तिहान है। मुझे अब संसार की सबसे सुन्दर स्त्री चाहिये। मुझे तो संसार की सबसे सुन्दर स्त्री तुम ही लग रही हो।"

राजकुमारी बोली — "अब तो मैं राजकुमारी बन चुकी हूँ पर अब मैं हमेशा के लिये राजकुमारी तभी बनूँगी जब कोई राजकुमार मुझसे शादी करेगा।"

टी जीन बोला — "ठीक है। मैं करूँगा तुमसे शादी।"

राजकुमारी फिर बोली — "ठीक है। कल सुबह मैं फिर बड़ी सफेद बिल्ली बन जाऊँगी। तुम मेरे चारों मेंढकों को मेरी गाड़ी में जोत देना और फिर हम साथ साथ तुम्हारे राज्य चलेंगे।"

सुबह राजकुमार ने राजकुमारी को बिल्ली बनते हुए देखा। उसने राजकुमारी के चारों मेंढकों को गाड़ी में जोता, बिल्ली को अपने पास बिठाया और अपने महल की तरफ चल दिया।

पहले की तरह से उस तय की हुई जगह पर उसके दोनों भाई उसका इन्तजार कर रहे थे।

भगवान की कसम, उन दोनों के पास तो बहुत सुन्दर सुन्दर लड़कियॉ थीं। पर उन्होंने जब टी जीन की तरफ देखा तो वह एक बिल्ली के साथ चार मेंढकों से जुती हुई एक गाड़ी पर बैठा हुआ चला आ रहा था।

मन ही मन हॅसते हुए वे दोनों भाई अपने महल की तरफ चल दिये। इस बार उन दोनों को पूरा भरोसा था कि अबकी बार बाजी वे ही जीतेंगे।

अगले दिन दोनों भाई अपनी अपनी लायी हुई लड़कियों के साथ पिता के पास पहॅुचे। राजा ने देखा कि उसके दोनों बेटे बहुत ही सुन्दर लड़कियॉ ले कर आये हैं।

राजा अपने दोनों बड़े बेटों को देख कर बहुत खुश हुआ पर हर बार की तरह जब उसने टी जीन को नहीं देखा तो उसके मुॅह से निकला — "और टी जीन कहॉ है?"

वे दोनों बोले — "हमने तो उसके पास केवल एक बड़ी सी सफेद बिल्ली ही देखी है पिता जी।"

राजा फिर पहले की तरह ही बोला — "जो भी है पर मुझे उसे देखना तो चाहिये ही न?"

और लो, टी जीन भी अपनी सुन्दर राजकुमारी का हाथ पकड़े चला आ रहा था। राजा को अपनी ऑखों पर भरोसा ही नहीं हो पा रहा था। राजा ने इतनी सुन्दर लड़की तो पहले कभी नहीं देखी थी।

और वे लोग जिस गाड़ी[24] में बैठ कर आये थे वह गाड़ी भी बेजोड़ थी। उसमें जुते हुए चार घोड़े संसार के सबसे सुन्दर घोड़े थे।

तीनों भाइयों की उनकी लायी गयी लड़कियों से शादी कर दी गयी और टी जीन के सिर पर ताज पहना दिया गया।

[24] Translated for the word “Carriage”. See its picture above

9 रिचर्ड और उसके ताश के पत्ते[25]

एक दिन रिचर्ड नाम का एक आदमी एक चर्च के पास से गुजर रहा था। चर्च में होली मास[26] की पूजा हो रही थी सो वह चर्च में अन्दर चला गया और दीवार के पास वाली एक खाली सीट पर जा कर बैठ गया।

वहॉ उसने चर्च की किताब निकालने की बजाय अपनी जेब से अपने ताश के पत्ते निकाल लिये और उनको उलटने पलटने लगा।

उसके पास ही एक सिपाही बैठा हुआ था। उसने इशारों से रिचर्ड को कई बार समझाने की कोशिश की कि या तो वह अपने ताश के पत्ते छोड़ कर चर्च की किताब हाथ में उठा ले और या फिर चर्च छोड़ कर चला जाये क्योंकि चर्च में बैठ कर ताश के पत्ते हाथ में लेना अच्छा नहीं लगता।

पर रिचर्ड ने उसके इशारों पर कोई ध्यान नहीं दिया।

मास पूजा खत्म होने के बाद चर्च का पादरी और सिपाही दोनों ही रिचर्ड को समझाने के खयाल से रिचर्ड के पास आये तो रिचर्ड बोला — "फादर, आप अगर मुझे कुछ बोलने की इजाज़त दें तो मैं कुछ कहूँ।"

पादरी बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। ठीक है रिचर्ड, कहो।"

---

[25] Richard and His Deck of Cards. (Story No 9)

[26] Christians' Holy Mass – a kind of their worship

रिचर्ड ने ताश के पत्तों में से एक दुग्गी निकाली और बोला — "यह दुग्गी मेरे लिये बाइबिल के दो टैस्टामैन्ट[27] जैसी है।"

फिर उसने एक तिग्गी निकाली और बोला — "यह तिग्गी मेरे लिये होली ट्रिनिटी[28] के तीन लोगों जैसी है।"

फिर उसने एक चौक्की निकाली और कहा — "यह चौक्की मेरे लिये चार इवान्जलिस्ट के जैसी है, और यह पंजा मेरे लिये मोसेस की पॉच किताबों[29] जैसा है।

और यह छक्का भगवान के बनाये वे छह दिन हैं जिनमें उसने आसमान और धरती बनाये। और यह सत्ता उस सातवें दिन को बताता है जिसमें उसने आराम किया। यह अट्ठा उन आठ लोगों को बताता है जो बाढ़ में बच गये थे।

यह नहला नौ बेवफा कोढ़ियों को दिखाता है और यह दहला भगवान के मोसेस को दिये हुए टैन कमान्डमेन्ट्स[30] हैं। यह रानी स्वर्ग की रानी है, और यह राजा वह राजा है जिसकी मैं सेवा करता हूॅ। और यह इक्का वह एक भगवान है जिसकी मैं पूजा करता हूॅ।"

पादरी बोला — "पर रिचर्ड तुम गुलाम को तो भूल ही गये।"

---

[27] There are two Testaments in the Bible – Old Testament and New Testament.

[28] Holy Trinity – God, Father, and Holy Spirit

[29] Moses has written five books, he is referring to here

[30] Ten Commandments – Moses got them directly from God

रिचर्ड बोला — "नहीं फ़ादर, मैं गुलाम को भूला नहीं हूँ। उसको तो मैं भूल ही नहीं सकता। असल में उसको तो सबसे बाद में ही आना था। वह गुलाम मुझ जैसा बेवकूफ है और साथ में इस सिपाही जैसा भी।"

इतना कह कर रिचर्ड चर्च के बाहर चला गया और पादरी उसको देखता ही रह गया।

10 एक बछड़ा जो तीन बार बेचा गया[31]

कैनेडा देश की यह लोक कथा एक हॅसी और अक्लमन्दी की लोक कथा है। कैनेडा के एक गॉव में एक आदमी रहता था जो बहुत शराब पीता था। इस पीने की वजह से उसने अपनी सारी दौलत खो दी थी।

आखीर में उसके पास केवल एक बछड़ा बच गया था सो शराब खरीदने के लिये वह उस बछड़े का सौदा करने निकला।

चलते चलते उसको गॉव का एक डाक्टर मिला जिसे वह बहुत अच्छी तरह जानता था। उसने उसको रोक कर पूछा — "जनाब, आपको बछड़ा चाहिये?"

डाक्टर ने पूछा — "कितने का है?"

शराबी बोला — "एक चॉदी के सिक्के का।"

डाक्टर ने उसको चॉदी का एक सिक्का निकाल कर दिया और उससे कहा — "यह लो चॉदी का सिक्का और इस बछड़े को मेरे घर पहुॅचा देना मैं अभी एक मरीज देखने जा रहा हूॅ।"

[31] A Calf That was Sold Three Times. (Story No 10)

शराबी उस बछड़े को डाक्टर को बेच कर आगे बढ़ा तो उसे एक नोटरी[32] मिला तो उसने नोटरी से भी पूछा — "जनाब क्या आप यह बछड़ा ख़रीदेंगे?"

नोटरी ने पूछा — "कितने का है?"

शराबी बोला — "एक पौंड का।"

नोटरी ने कहा — "ठीक है, यह लो एक पौंड और मेहरबानी कर के इसे मेरे घर पहुँचा देना। मैं अभी ज़रा एक जरूरी काम से जा रहा हूँ।"

यह कह कर नोटरी भी अपने रास्ते चला गया और वह शराबी पौंड ले कर और आगे बढ़ा। आगे जा कर शराबी को एक वकील मिला।

उसने वकील से पूछा — "जनाब, क्या आप यह बछड़ा ख़रीदेंगे?"

वकील ने पूछा — "कितने का है?"

शराबी बोला — "एक पौंड का।"

वकील ने भी उसे एक पौंड निकाल कर देते हुए कहा — "ठीक है। यह लो एक पौंड। मैं अभी ज़रा दूसरे गाँव जा रहा हूँ तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी यदि तुम इसको मेरे घर पहुँचा दोगे।"

शराबी का तो काम बन गया था। उसने एक बछड़ा तीन बार बेच कर तीन पौंड बना लिये थे। अब वह शराबी रास्ते में एक

[32] Notary is he who attests the documents for legal purposes

शराबखाने में रुका, अपने सारे पैसों की शराब पी और अपने घर चला गया।

शाम को डाक्टर, नोटरी और वकील जब अपने अपने घर पहुँचे तो उन सबको यह देख कर बड़ा ताज्जुब हुआ कि उन्होंने सुबह जो बछड़ा खरीदा था वह अभी तक उनके घर नहीं पहुँचा था।

उन्होंने आपस में बात की और उस बेईमान शराबी को पकड़ने की योजना बनायी। उन्होंने उस शराबी पर मुकदमा दायर कर दिया। शराबी अपना मुकदमा लड़ने के लिये पास के एक गॉव के वकील के पास पहुँचा।

वकील बोला — "जनाब, आपका मुकदमा बहुत मुश्किल है क्योंकि इसमें आपकी बेईमानी साफ दिखायी दे रही है। इसमें आपके बचने का केवल एक ही रास्ता है और वह यह कि जब भी आपसे कोई सवाल पूछा जाये तो आप यही कहें "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"[33]।"

सो सब अदालत में पहुँचे। जज ने शराबी से पूछा — "क्या आपने इस डाक्टर को अपना बछड़ा बेचा था?"

शराबी को जैसा समझाया गया था उसने वैसा ही जवाब दे दिया — "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।"

[33] Oyink is the sound of the pig called in English language.

"और इस नोटरी को भी?"

शराबी फिर बोला — "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

"और इस वकील को भी?"

शराबी फिर बोला — "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

जज आगे बोला — "और फिर आपने इन लोगों को वे बछड़े दिये नहीं?"

शराबी फिर बोला — "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

जज आगे बोला — "आपने ऐसा क्यों किया जनाब?"

शराबी फिर बोला — "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

जज के कई सवाल पूछने पर भी जब शराबी के मुँह से सिवाय "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक" के और कुछ न निकला तो जज ने उन तीनों से कहा — "ऐसा लगता है कि यह आदमी पागल है। मेरा फैसला है कि इसको छोड़ दिया जाये।"

और शराबी को छोड़ दिया गया और वे तीनों अपने अपने पैसे गँवा कर अपने अपने घर चले गये।

कुछ दिन बाद शराबी का वकील शराबी के पास आया और बोला — "हम लोग मुकदमा जीत गये इसलिये मेरी फीस दो।"

शराबी बोला — "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

वकील बोला — "देखो, तुम यह चालाकी मेरे साथ नहीं खेल सकते। मैंने ही तुमको यह मुकदमा जिताया है।"

"ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

"अब क्या मैं तुमसे अपनी फीस के लिये झगड़ा करूँ?"

"ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

और वह वकील भी डाक्टर, नोटरी और वकील की तरह उस शराबी से "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक" के अलावा और कुछ भी न बुलवा सका तो उसको भी उसकी फीस नहीं मिली और वह बेचारा बिना फीस का मुकदमा लड़े ही घर चला गया।

इस तरह उस वकील की सिखायी हुई चाल उसी के सिर आ पड़ी।

क्युबैक प्रान्त की लोक कथाऐं

कैनेडा का क्युबैक प्रान्त एक फ्रैन्च भाषा बोलने वाला प्रान्त है जो उसके पूर्वी हिस्से में स्थित है।

जहॉ लोक कथाऐं साधारणतया कहानियॉ होती हैं, वहॉ दंत कथाऐं[34] सच्ची घटनाऐं होती हैं और किसी खास जगह से जुड़ी होती हैं। क्योंकि दंत कथाऐं सामान्यतया एक खास जगह की ही होती हैं न कि बहुत सारे देशों की और इसी लिये वे उस समाज के विश्वास, परम्परा और रीति रिवाजों को बताती हैं।

अगली दो कथाऐं कैनेडा के क्युबैक प्रान्त के गॉवों के जीवन की एक तस्वीर दिखाती हैं। ये दोनों कहानियॉ शैतान की है। इन में पहली कहानी में शैतान एक नौजवान के रूप में आता है और दूसरी कहानी में वह एक आदमी से सौदा करता है।

[34] Mythological Stories

11 शैतान का नाच[35]

फ्रैंकोइ[36] के घर में सभी लोग बहुत अच्छे थे, धार्मिक, सब पर दया करने वाले। उनके पास ज़्यादा कुछ भी नहीं था फिर भी वे बहुत उदार थे।

उनके यहॉ नाच हमेशा तो नहीं होता था परन्तु इस समय उनका बेटा दूर देश से हो कर लौटा था इसी लिये उसके राजी खुशी लौट आने की खुशी में वे एक दावत करना चाहते थे।

वैसे तो उनके यहॉ हमेशा ही बारहवीं रात के अगले दिन एक दावत जरूर होती थी जिसमें आने के लिये किसी को बुलावा भेजने की जरूरत नहीं होती थी, उसमें कोई भी आ सकता था पर आज की दावत की बात ही कुछ और थी।

कभी कभी मॉ कैथरीन[37] को इतने सारे लोग देख कर कुछ परेशानी जरूर होती थी फिर भी वह खुशी खुशी सबका अपने घर में स्वागत करती थी। आखिर वे सब फ्रैंकोइ के दोस्त थे न।

उस दावत में एक वायलिन बजाने वाला भी आया करता था। वह केवल वायलिन ही अच्छी नहीं बजाता था बल्कि एक अच्छा गायक भी था। उसका नाम डेडे[38] था।

---

[35] Devilish Dance. (Story No 11)

[36] Francois – name of the master of the house – a French name

[37] Mother Katherine – name of Francois' wife

[38] Dede – name of the musician

वह अपना वायलिन रात को नौ बजे के करीब शुरू करता था और सभी लोग उसका वायलिन सुन कर मस्त हो जाया करते थे।

आज की दावत के बाद फ्रैन्कोइ का बेटा एक नाच करना चाहता था सो वह अपने माता पिता से उस नाच करने की इजाज़त मॉगने गया। इस रात वे उसका दिल नहीं तोड़ना चाहते थे इसलिये उन्होंने उसको नाच की इजाज़त दे दी।

तुरन्त ही कमरे के बीच की जगह नाच के लिये तैयार कर ली गयी और पिता फ्रैंकोइ ने अपनी पत्नी कैथरीन के साथ नाच शुरू कर दिया।

उनके बाद उनका बेटा पियरे अपनी पत्नी मान्डा बरटन[39] के साथ आया। उन्होंने भी नाचा मगर उनके माता पिता का नाच उनके नाच से ज़्यादा अच्छा था।

डेडे बहुत अच्छा वायलिन बजा रहा था, साथ में वह अपनी एड़ी से ताल भी देता जा रहा था। वहॉ कई तरह के नाच हो रहे थे और वह सभी तरह को नाचों के लिये बहुत अच्छा वायलिन बजा रहा था।

बीच बीच में वह थोड़ी सी शराब पी लेता था जिससे वह अपना काम और ज़्यादा अच्छी तरह कर पा रहा था। लगता था कि वह अब अगले चौबीस घंटों तक अपना वायलिन बिना थके बजाता रहेगा।

[39] Pierre and Manda Burton – names of the son and daughter-in-law of Francois

रात के ग्यारह बजे सभी लोग सॉस लेने के लिये रुके कि अचानक सभी ने छोटी छोटी घंटियों की आवाज सुनी और बर्फ पर चलती हुई स्ले[40] की आवाज भी।

कुछ पल बाद ही किसी ने दरवाजा खटखटाया।

पियरे बोला — "अन्दर आ जाओ।"

दरवाजा खुला और एक लम्बा, घुँघराले बालों वाला और नुकीली दाढ़ी वाला बड़ा सुन्दर सा नौजवान कमरे में दाखिल हुआ।

उसकी ऑखें काली और चमकीली थीं, उसके कपड़े भी शानदार थे। कुल मिला कर वह एक भले घर का भला सा नौजवान लग रहा था।

उसकी स्ले भी शीशे की तरह चमक रही थी। उसमें बढ़िया चमकदार काला घोड़ा जुता हुआ था जिस पर सफेद लगाम लगी थी और सुन्दर साज सजा हुआ था जो पॉच छह सोने के सिक्कों से कम की कीमत का नहीं होगा। वह वहॉ बिल्कुल ही अजनबी था क्योंकि और दूसरा कोई भी उसको वहॉ नहीं जानता था।

लोगों ने उसको स्ले का घोड़ा खोलने के लिये कहा परन्तु उसने मना कर दिया कि उसकी कोई जरूरत नहीं है क्योंकि वह वहॉ बहुत देर तक रुकने वाला नहीं है।

[40] Sleigh – a vehicle which is exclusively used on ice and normally is drawn by horses or big dogs. See the picture above

उसने बताया कि उसने देखा कि इस घर में लोग खुशियॉ मना रहे हैं सो वह भी एक दो नाच नाचने के लिये वहॉ आ गया था।

लोगों ने उससे उसके गर्म कपड़े उतारने के लिये कहा तो उसने अपना क्लोक और टोपी तो उतार दी पर हाथ के दस्ताने नहीं उतारे।

लोगों ने समझा कि शायद यह कुलीन भला आदमी होने की वजह से अपने दस्ताने नहीं उतार रहा इसलिये उन्होंने इस बात पर न तो ज़्यादा ध्यान दिया और न ही ज़ोर।

वह इतना सुन्दर था कि क्या आदमी और क्या औरतें, किसी की भी निगाहें उसके चेहरे से नहीं हट पा रहीं थीं। लोग सोच रहे थे कि उसके साथ कौन नाचेगा परन्तु क्योंकि वह एक बहुत ही सभ्य कुलीन नौजवान लग रहा था। वह जानता था कि उसे क्या करना है।

वह फ्रैंकोइ की बेटी ब्लांच[41] के पास गया और उससे बोला — "क्या आप मेरे साथ नाचना पसन्द करेंगी?"

ब्लांच पहले तो कुछ शर्मायी फिर बोली — "खुशी से जनाब। पर मुझे ठीक से नाचना नहीं आता।" जबकि वह वहॉ सबसे अच्छा नाचना जानती थी।

पर वास्तव में वह नौजवान लग ही इतना अच्छा रहा था कि उसके साथ सबसे पहले नाचना आसान काम नहीं था।

[41] Blanche – name of Francois' daughter

दोनों ने नाचना शुरू किया। वह बहुत अच्छा नाच रहा था। नाच के किसी भी स्टैप को वह बार बार करते भी थकता नहीं था।

हालॉकि उसने अपना नाच एक सादा से स्टैप से शुरू किया पर फिर भी उसके उसी स्टैप से ऐसा लग रहा था जैसे उसको हराना भी आसान काम नहीं था।

ब्लांच के बाद उसने और भी कई लड़कियों के साथ नाच किया। वह और सब लड़कियों के साथ नाचते समय भी उतना ही ताजा लग रहा था जितना कि वह अपने पहले नाच में ब्लांच के साथ लग रहा था।

इधर डेडे और उस नौजवान के बीच में भी कुछ मुकाबला सा होता नजर आ रहा था। ऐसा लगता था कि दोनों एक दूसरे को हराने की कोशिश में लगे थे।

डेडे उसके सामने कुछ कमजोर सा पड़ रहा था। उसके साथ डेडे को वायलिन बजाने में थोड़ी कठिनाई हो रही थी। उसको इतनी ठंड में भी पसीना आ रहा था पर वह धीरे धीरे उसका साथ पकड़ता जा रहा था। उसकी एड़ी की ताल से धूल उड़ रही थी।

टन्न, अचानक ही डेडे की वायलिन का तार टूट गया। उसके पास एक और तार था सो उसने तुरन्त ही वह तार लगा लिया। इतनी देर में वह थोड़ा सुस्ता भी लिया।

उधर उतने समय में उस अजनबी ने भी कई लड़कियों से बातें कर लीं। डेडे नया तार लगा कर फिर से नये तरीके से तैयार हो गया था और नाच फिर से शुरू हो गया।

इतने में बीच में पियरे का दो साल का बेटा जाग गया। मान्डा मेहमानों की सेवा में लगी थी सो बच्चे की दादी कैथरीन ने उसको अपने घुटनों पर बिठा लिया और उसको बहलाने के लिये उसके सोने के कमरे के दरवाजे के बीच में बैठ गयी ताकि वह नाच देख कर बहल जाये।

पर जब भी वह नौजवान उधर से गुजरता तो वह बच्चा डर से चीख कर दादी के गले से लिपट जाता और चिल्लाता — "मैं जला, मैं जला।"

कैथरीन को यह सुन कर बड़ा ताज्जुब हुआ कि बच्चा आज यह किस तरह की बात कर रहा है पर जब बच्चे ने ऐसा कई बार किया तो उसने इस अजीब बात की वजह जानने की कोशिश की।

इतने में उसने क्या देखा कि उस अजनबी नौजवान की काली ऑखें उस बच्चे को नफरत की निगाह से देख रहीं थीं।

इस समय वह एक ऐसी लड़की के साथ नाच रहा था जिसके गले में सोने का क्रास पड़ा हुआ था।

इस बार जब वह कैथरीन के पास से गुजरा तो उसने उसे उस लड़की से यह कहते सुना कि "अच्छा हो यदि वह अपना क्रास उसकी तस्वीर लगे हीरे जड़े एक लाकेट से बदल ले।"

कैथरीन तुरन्त उठी और बिस्तर के सिरहाने रखा हुआ पवित्र जल उठा लायी। बच्चे को गोद में लिये लिये ही उसने अपनी उँगलियों से वह पवित्र जल लिया और उस नौजवान की तरफ क्रास बनाती चली आयी।

कैथरीन की इस बात ने जादुई असर किया। वह शैतान – वह अजनबी नौजवान, डर से चीखता हुआ कमरे की छत तक उछल गया। वह दरवाजे से बाहर भागना चाहता था पर दरवाजे पर क्रास लटका हुआ था।

पर उसको तो बाहर निकलना था सो गुस्से में भर कर जब वह बाहर भागा तो पत्थर की दीवार से टकरा गया पर फिर भी वह उसमें से छेद करता हुआ बाहर निकल गया।

उसके बाद तो लोगों ने बाहर बहुत ज़ोर का शोर सुना। शैतान और उसकी गाड़ी दोनों ही उस शोर के साथ गायब हो चुकी थीं और घोड़ों के पैरों के नीचे आग सी जलती जा रही थी।

लोग सहमे सहमे से बाहर निकले तो क्या देखते हैं कि जहॉ से उसकी गाड़ी गयी थी वहॉ की सारी बर्फ पिघल गयी थी। यह कहने की जरूरत नहीं कि इसके बाद वहॉ पार्टी खत्म हो गयी।

अगले दिन उस दीवार के छेद को भरने के लिये एक आदमी बुलाया गया लेकिन ताज्जुब कि कोई भी पत्थर अपनी जगह पर टिक ही नहीं रहा था इसलिये वह छेद भी नहीं भरा जा सका।

उन्होंने बाद में घर को पादरी से पवित्र भी कराया पर वह छेद अभी भी वहीं मौजूद है।

वह पुराना घर आज भी वहीं मौजूद है। उस छेद के आगे अन्दर कमरे में आजकल एक अलमारी रखी हुई है। वहाँ रहने वाले लोग उस पर मोमबत्ती जलाते हैं और छेद के बाहर की तरफ चूल्हे में जलाने वाली लकड़ी का ढेर रखा रहता है।

पर उसके बाद फ्रैंकोइ के घर में फिर कभी कोई नाच नहीं हुआ।

12 उड़ती हुई नाव[42]

बहुत दिनों पहले की बात है कि एक बहुत बड़े जंगल में बहुत सारे मज़दूर लकड़ी काटने का काम करते थे। वे बहुत बड़े बड़े पेड़ काटते थे और उनको बहुत सारी बर्फ में उसी जगह गिरते देखते थे जहॉ वे सोचते थे कि वह गिरेगा।

वे पेड़ काटते थे और फिर उनको इधर उधर ले कर भी जाते थे। वे अपना काम तो बड़ी मेहनत से करते थे पर वे अपनी अपनी पत्नियों के बिना जिनको वे घर छोड़ कर आये थे बहुत अकेला महसूस करते थे।

एक साल नये साल के दिन इतनी बर्फ पड़ी कि वे लोग कुछ काम ही नहीं कर सके। वे सब अपने अपने तम्बुओं में ढके दबे पड़े रहे और अपने घरों की बातें करते रहे। वे एक दूसरे को रम[43] पिलाते रहे और एक दूसरे को नये साल की बधाई देते रहे।

आखीर में बैपटिस्ट[44] वह बोला जो वे सब सोच रहे थे — "मैं आज घर जाना चाहता हूॅ और अपनी पत्नी से मिलना चाहता हूॅ।"

सब लोग फुसफुसाये कि वे सब भी यही करना चाह रहे थे।"

---

[42] The Flying Canoe. (Tale No 12) Adapted from the Web Site: http://americanfolklore.net/folklore/2010/07/the_flying_canoe.html retold by SE Schlosser. [My Note: similar story, keeping the soul with the Satan, is found in Ireland folktales also. – "Countess Cathleen Oshi". Read it in "Ireland Ki Lok Kathayen" by Sushma Gupta written in Hindi.]

[43] Rum – a kind of strong liquor

[44] Baptiste – the name of a labor working in the forest

पर जीन बोला — "पर हम आज जा भी कैसे सकते हैं? आज तो सड़क पर छह छह फीट से ऊपर बर्फ पड़ी हुई है और अभी और भी गिर रही है।"

बैपटिस्ट बोला — "पर यह किसने कहा कि हम यहॉ से सड़क से हो कर बाहर जा रहे हैं। मैं तो अपनी नाव उड़ा कर ले जाऊॅगा।"

सबको मालूम था कि बैपटिस्ट के पास एक नाव थी जो उनके कैम्प के पीछे रखी रहती थी। बैपटिस्ट ने एक शैतान से एक सौदा कर के उससे यह नाव ली थी।

उसने उस शैतान से सौदा कर रखा था कि अगर वह शैतान उस नाव को वहॉ के लिये उड़ा देगा जहॉ बैपटिस्ट जाना चाहेगा तो वह सारे साल मास[45] नहीं पढ़ेगा।

और अगर बैपटिस्ट वह नाव इस्तेमाल करने के बाद अगले दिन सुबह तक उस शैतान को वापस नहीं करेगा तो वह शैतान उसकी आत्मा को बन्दी बना कर रख लेगा।

सो अगर बैपटिस्ट और उसके साथियों ने वह नाव इस समय घर जाने के लिये इस्तेमाल की तो उस समय न तो वे भगवान का नाम ले सकते थे, न किसी चर्च[46] के ऊपर से उड़ सकते थे और न

[45] Weekly worship of Orthodox Christians

[46] Church is the worshipping place of Christians

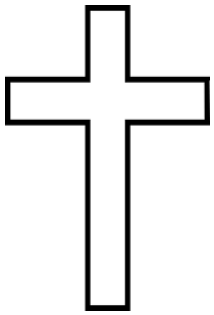

ही कोई कास[47] छू सकते थे नहीं तो वह नाव टकरा कर टूट सकती थी।

यह सब सोचते हुए वहॉ बैठे हुए बहुत सारे लोगों ने बैपटिस्ट की इस योजना में हिस्सा लेने से मना कर दिया पर फिर भी उसने सात लोगों को अपने अपने घर जाने के लिये और अपनी अपनी पत्नियों से मिलने के लिये अपने साथ नाव में उड़ने के लिये तैयार कर लिया।

सो बैपटिस्ट और उसके सातों दोस्त उस नाव में बैठ गये और बैपटिस्ट ने अपने जादुई शब्द बोले — "ऐकाब्रिस, ऐकाब्रास, ऐकाब्रम[48]।"

जब बैपटिस्ट ने अपने आपको उस शैतान के सौदे में बॉध लिया तो वह नाव ऊपर उठी और लोगों ने उसको अपने घर की तरफ हवा में खेना शुरू किया।

उन सबकी पत्नियॉ अपने अपने पतियों को देख कर बहुत खुश हुईं। वे सब रात गये तक पीते रहे और नाचते रहे।

जब सुबह होने को हुई तो लोगों को ख्याल आया कि उनको तो वह नाव सुबह को उस शैतान को वापस कर के उस कैम्प में रखनी थी नहीं तो वह शैतान उनकी आत्मा को अपने पास रख लेगा।

---

[47] Cross – a holy article of Christians. See its picture above.

[48] Acabris, Acabras, Acabram

सो उन्होंने बैपटिस्ट को ढूँढना शुरू किया तो उन्होंने देखा कि बैपटिस्ट तो सराय की एक मेज के नीचे शराब के नशे में बुरी तरह से धुत पड़ा है।

उन्होंने उसको उठा कर किसी तरह नाव में डाला, वे जादुई शब्द बोले जिनसे उस नाव को चलाया जा सकता था और नाव को खे कर जंगल की तरफ ले चले।

वे जानते थे कि अगर उन्होंने बैपटिस्ट को जगाया तो वह तो अपनी पूजा करने लगेगा और फिर वह शैतान उन लोगों की आत्मा को बन्दी बना कर रख लेगा।

सो उन्होंने उसको नाव से कस कर बॉध दिया और उसका मुँह भी बन्द कर दिया ताकि वह भगवान का नाम ही न ले सके जिससे न तो उनकी नाव टूटे और न ही शैतान उनकी आत्मा को अपने पास रख सके।

जब बैपटिस्ट जागा तो वह उठ कर बैठने के लिये अपनी रस्सियॉ खोलने की कोशिश करने लगा। किसी तरह से वह रस्सियॉ खोलने में कामयाब हो गया और चिल्लाया — "मौन ड्यू[49], तुम लोगों ने मुझे यहॉ क्यों बॉध रखा है?"

[49] Mon Dieu - their god's name

बस जैसे ही उसने भगवान का नाम लिया कि उस नाव ने नीचे की तरफ एक ज़ोर की कूद लगायी और जा कर एक बड़े से पाइन के पेड़[50] से टकरा गयी।

सारे लोग उसमें से सुबह से पहले ही अँधेरे में बाहर निकल पड़े और नीचे गिर पड़े। उसके बाद वे फिर कभी नहीं देखे गये। शैतान ने उन सबकी आत्मा को बन्दी बना कर रख लिया था।

इसलिये शैतानों से कभी कोई सौदा नहीं करना चाहिये।

[50] Pine tree – tall evergreen trees in cold regions. See its picture above.

केप ब्रैटन[51] की लोक कथाऐं

कैनेडा में अंग्रेजी भाषा बोलने वाले लोगों के लोकगीतों पर तो कई किताबें लिखी गयीं हैं पर उनकी लोक कथाओं के ऊपर बहुत कम किताबें मिलती हैं।

स्काटलैंड देश[52] के जो लोग कैनेडा में रहते हैं उन्होंने अपनी लोक कथाऐं ब्रिटेन से आने वाले दूसरे लोगों की सहायता से केवल कह सुन कर ही सुरक्षित कर रखीं हैं।

केप ब्रैटन में जो लोग आये और वहॉ आ कर बसे वे अपने साथ बहुत सारी कहानियॉ, कविताऐं और गीत ले कर आये। कहा जाता है कि बहुत पुरानी कहानियॉ और गीत केप ब्रैटन में तो मिल सकते हैं पर स्काटलैंड या आयरलैंड में नहीं।

पर यह सब भी आज के जीवन में कम रह गया है। पुरानी परिपाटियॉ अब खत्म होती जा रही हैं। केवल बड़े बूढ़े ही इन सब को जानते हैं। नयी पीढ़ी तो धीरे धीरे इनको भी भूलती ही जा रही है। यहॉ वहॉ की तीन लोक कथाऐं दी जाती हैं।

[51] Cape Breton is an island in Atlantic Ocean in Nova Scotia Province of Canada on its Eastern side.
[52] Scotland – is a country in North of England, Europe.

13 कौर्नु और उसके तीन बेटे[53]

एक बार कौर्नु[54] नाम का एक आदमी अपने तीन बेटों के साथ राजा के महल में रहता था। उधर राजा के भी तीन बेटे थे। दोनों के बेटे आपस में अच्छे दोस्त थे।

पर एक दिन राजा के बेटों और कौर्नु के बेटों में झगड़ा हो गया और इस झगड़े में राजा का एक बेटा मारा गया।

उस शाम राजा ने कौर्नु को बुलाया और कहा — "तुम्हारे तो तीन बेटे घर वापस आ गये परन्तु मेरे दो ही बेटे घर वापस आये इसलिये मैं तुम्हें और तुम्हारे तीनों बेटों को मौत की सजा सुनाता हूँ। पर अगर तुम फलॉ राजा से मेरे लिये उसकी मशहूर घोड़ी ला दो तो मैं तुम लोगों को छोड़ भी सकता हूँ।"

कौर्नु और उसके तीनों बेटे वह घोड़ी लाने चल दिये। रास्ते में वे आटा पीसने की एक चक्की के पास रुके और चक्की वाले से पूछा कि वे उस राजा के महल में कैसे जा सकते थे।

चक्की वाले ने कहा — "मैं तुम लोगों को अनाज की बोरियों में बन्द कर देता हूँ। इस तरह तुम लोग राजा के महल में अन्दर आसानी से जा सकते हो।"

---

[53] Cornu and His Three Sons. (Story No 13)

[54] Cornu

कह कर उसने उन चारों को अनाज की बोरियों में बन्द कर दिया और मजदूर लोग बिना किसी शक के उन बोरियों को राजा के महल में ले गये।

उस रात उन्होंने राजा की उस मशहूर घोड़ी पर साज सजाने की कोशिश की परन्तु वह घोड़ी इतनी ज़ोर से हिनहिनायी कि उन लोगों को फिर से बोरियों में छिप जाना पड़ा।

राजा ने जब अपनी घोड़ी की हिनहिनाहट सुनी तो उसने अपने सिपाहियों को उसकी खोज खबर लेने के लिये भेजा। सिपाहियों को सभी चीज़ें अपनी जगह पर रखी मिलीं तो वे वहॉ से चले गये।

जब राजा के सिपाही वहॉ से चले गये तो कौर्नु और उसके बेटे फिर से अपनी अपनी बोरियों में से बाहर निकले और फिर से उस घोड़ी पर साज सजाने की कोशिश की परन्तु वह घोड़ी फिर से हिनहिना दी।

राजा ने फिर से अपने सिपाहियों को भेजा पर सिपाहियों को फिर से कोई गड़बड़ नजर नहीं आयी क्योंकि कौर्नु और उसके तीनों बेटे फिर से अपनी अपनी बोरियों में जा छिपे थे सो वे फिर से वहॉ से चले गये

उन्होंने फिर तीसरी बार उस घोड़ी पर साज सजाने की कोशिश की तो वह फिर से हिनहिनायी। इस बार राजा ने सिपाहियों को भेजने की बजाय खुद ही आना ठीक समझा। वह आया और उसने उन चारों को खोज लिया।

उसने कौर्नु से पूछा — "क्या तुम इससे पहले कभी मौत के इतने नजदीक खड़े थे जितना कि आज खड़े हो? अगर ऐसा है और अगर तुम अपनी कहानी से इसे साबित कर सकते हो तो मैं तुम्हारे एक बेटे को ज़िन्दा छोड़ दूँगा।"

कौर्नु बोला — "जी हॉ, एक बार मैं मौत के इतने ही पास खड़ा था जितना कि आज खड़ा हूँ और मैं इसे अपनी कहानी से साबित कर सकता हूँ।

एक बार की बात है कि मैं गायें दुह रहा था कि वहॉ बारह बड़े बड़े बिल्ले आये। उनमें से एक बिल्ले ने मेरे ऊपर बड़ी ज़ोर से चिल्लाना शुरू किया तो मैंने उससे पूछा — "तुमको क्या चाहिये?"

वह बोला "हमें गाय चाहिये।" और उन बिल्लों ने खड़े खड़े वहॉ की सारी गायें खानी शुरू कर दीं।

यह देख कर मैं डर के मारे पास वाले पेड़ पर चढ़ गया पर मेरे पेड़ पर चढ़ते ही वह पेड़ झुकने लगा।

वे बिल्ले मुझे भी खाने वाले थे कि इतने में एक आदमी आया और उसने सभी बिल्लों को मार डाला और मुझे बचा लिया। इस तरह मैं उस समय मौत के उतने ही पास खड़ा था जितना कि अब।"

राजा मान गया कि उस समय वह सचमुच मौत के इतने ही पास था जितना कि अब और उसने उसका एक बेटा छोड़ दिया।

राजा फिर बोला — "यदि तुम दोबारा भी मौत के इतने ही पास खड़े थे जितने कि आज और तुम अपनी यह बात अपनी कहानी से साबित कर सकते हो तो मैं तुम्हारे एक और बेटे को ज़िन्दा छोड़ दूँगा।"

कौर्नु बोला — "जी हॉ सरकार, एक बार और भी मैं इसी तरह मौत के पास खड़ा था जितना कि अब। मैं आपको उसकी कहानी भी सुनाता हूँ।

मैं पहले नाव खेया करता था। एक बार मैं किनारे किनारे अपनी नाव में कहीं जा रहा था तो मैंने देखा कि एक राक्षस एक लड़की को मारने ही वाला था कि मैंने उसे चिल्ला कर रोकने की कोशिश की पर वह राक्षस कहॉ सुनने वाला था।

उसने उस लड़की को मार दिया और फिर वह मेरी तरफ बढ़ा। उसकी केवल एक ही ऑख ठीक थी सो मैंने उससे अपने बचाव के लिये कहा — "मैं तुम्हारी दूसरी ऑख ठीक कर सकता हूँ।"

वह राजी हो गया। मैंने कुछ गर्म गर्म चीज़ों को मिला कर उसकी अच्छी वाली ऑख में डाल दीं इससे वह अन्धा हो गया। उसने मुझे पकड़ने की काफी कोशिश की पर वह मुझे पकड़ न सका क्योंकि वह तो अन्धा हो गया था।

पास की एक गुफा में उसकी बकरियॉ थीं। मुझे नहीं मालूम था कि वे बकरियॉ उसकी थीं सो मैं गुफा में बकरियों के बीच छिप गया।

उसने अपने बेटे से गुफा का दरवाजा खोलने और बकरियों को बाहर निकालने के लिये कहा और वह खुद गुफा के दरवाजे पर खड़े हो कर बकरियों को छू छू कर बाहर निकालने लगा।

वहॉ एक छोटी सी बकरी भी थी। मैं उसको अपनी पीठ पर बिठा कर उस राक्षस की टॉगों के बीच में से निकल गया। जब मैं बाहर निकल गया तब मैंने उस राक्षस से ज़ोर से कहा — "तुम मुझे पकड़ सकते हो तो पकड़ लो।"

राक्षस बोला — "तुम बहुत होशियार हो इसलिये यह लो तुम यह ऍगूठी ले लो।"

और एक ऍगूठी उसने मेरी तरफ फेंक दी। मैंने वह ऍगूठी उठा कर पहन ली।

राक्षस ने मुझसे पूछा — "तुमने वह ऍगूठी पहन ली?"

मैंने कहा — "हॉ पहन ली।"

अब राक्षस बोला — "ओ ऍगूठी, मेरे पास आओ।"

और उस ऍगूठी ने मुझे उस राक्षस की ओर खींचना शुरू कर दिया। मैंने राक्षस से बचने के लिये अपनी उॅगली काट दी और वहॉ से किसी तरह भाग लिया। इस तरीके से मैं दूसरी बार भी मौत से बाल बाल बचा।"

राजा को विश्वास हो गया कि वह सच कह रहा था इसलिये उसने उसके दूसरे बेटे को भी छोड़ दिया।

राजा फिर बोला — "यदि तुम तीसरी बार भी मौत के इतने ही पास खड़े थे जितने कि आज और तुम इस बात को अपनी कहानी से साबित कर दो तो मैं तुम्हारे तीसरे बेटे को भी छोड़ दूँगा।"

कौर्नु बोला — "जी हॉ, मैं एक बार और भी मौत के इतने ही करीब खड़ा था जितना कि आज खड़ा हूँ और मैं इसको अपनी कहानी से साबित कर सकता हूँ। सुनिये।

मैं एक बार समुद्र के किनारे खड़ा हुआ था कि एक बहुत ही सुन्दर जहाज वहॉ आया। मैं उस जहाज पर चढ़ गया और वह मुझे ले कर समुद्र में बने एक घर की तरफ चल दिया।

उस घर में एक स्त्री एक बच्चे के साथ खेल रही थी। मैंने उस स्त्री से पूछा कि वह क्या कर रही है तो वह बोली कि वह वहॉ पर रह रहे राक्षस के खाने के लिये उस बच्चे को मारने वाली है।

मैंने उससे कहा कि अगर वह उस बच्चे को कहीं छिपा देगी तो मैं उसे बचाने की कोशिश करूँगा। उसने ऐसा ही किया। उसने बच्चे को छिपा दिया।

फिर मैं ऊपर चला गया और वहॉ पड़े मुर्दों में जा कर लेट गया और सो गया। जब वह राक्षस वहॉ आया तो मैंने उसे मार दिया और उस बच्चे को बचा लिया और वह बच्चा तुम थे।"

उस राजा ने जब कौर्नु की यह कहानी सुनी तो वह बहुत खुश हुआ और उसने कौर्नु और उसके तीनों बेटों को छोड़ दिया।

फिर कौर्नु ने उसको अपने राजा की कहानी सुनायी कि किस तरह उसके बेटों से राजा का एक बेटा मारा गया था और किस तरह उसने उन चारों को मारने का हुक्म दिया था पर इस घोड़ी के लाने पर कैसे वह उन सबको ज़िन्दा छोड़ देगा।

यह सब कह कर उसने उससे उसकी अपनी वह खास घोड़ी देने की प्रार्थना ताकि वह उस राजा से अपनी और अपने बेटों की जान बचा सके।

राजा कौर्नु से उसके सच बोलने से इतना खुश हुआ कि उसने अपनी वह खास घोड़ी उसको दे दी। कौर्नु उसको ले कर चला गया और उसको राजा को दे कर अपनी और अपने बेटों की जान बचायी।

14 करामाती भेंटें[55]

एक समय की बात है कि एक आदमी ने अपना भूसा काट कर घर ले जाने के लिये रखा कि इतने में बड़ी तेज़ हवा आयी और उसका सारा भूसा उड़ा कर ले गयी।

जब उस आदमी ने यह देखा तो उसको बहुत गुस्सा आया और वह हवाओं के देवता के पास पहुँचा और उनसे कहा — "तुमने मेरा भूसा उड़ाया है इसलिये उसके बदले में तुम्हें मुझे कुछ न कुछ जरूर देना पड़ेगा।"

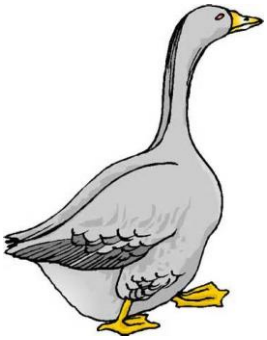

हवाओं के देवता ने कहा — "यह तो न्याय की बात है। मैं तुमको तुम्हारे भूसे के बदले में कुछ न कुछ जरूर दूँगा। लो यह बतख लो। तुम्हें जब भी पैसों की जरूरत पड़े तो इस बतख को बस ज़रा सा दबा देना और तुम्हें इसमें से एक सोने का सिक्का मिल जायेगा।"

वह आदमी बतख पा कर बहुत खुश हुआ और उसको ले कर अपने घर की तरफ चल पड़ा। रास्ते में उसे रात हो गयी तो उसको एक सराय में रुकना पड़ा।

वहाँ लोगों ने उससे बतख के बारे में पूछा तो उसने उनको सब सच सच बता दिया। सुबह जब वह सो कर उठा तो उसने देखा कि उसकी बतख तो चोरी हो गयी थी।

[55] Magical Gifts. (Story No 14)

जब उसने सराय के चौकीदार से अपनी बतख के बारे में पूछा तो उसने बताया कि वह तो रात को ही कहीं उड़ गयी थी। वह आदमी बहुत दुखी हुआ और वापस अपने घर की तरफ चल दिया।

जब वह अपने घर वापस जा रहा था तो वह फिर से अपने भूसे के बारे में ही सोचता जा रहा था कि वह तो फिर बिना भूसे के और बिना बतख के ही रह गया। उसने दोबारा हवाओं के देवता के पास जाने की सोची।

वह दोबारा हवाओं के देवता के पास गया और उनको अपनी बतख की कहानी सुनायी।

हवाओं के देवता ने अबकी बार उसको एक चक्की[56] दी और कहा — "जब भी तुमको पैसों की जरूरत हो तो इस चक्की की मूँठ एक बार घुमा देना और यह चक्की तुमको सोना दे देगी।"

वह आदमी चक्की ले कर लौटा तो रात बिताने के लिये फिर से उसी सराय में रुका। फिर उसके साथ वही हुआ। सुबह को जब वह सो कर उठा तो उसकी चक्की चोरी हो चुकी थी। वह बहुत दुखी हुआ पर क्या करता।

वह तीसरी बार हवाओं के देवता के पास पहुँचा और जा कर उनको बताया कि उसकी तो वह चक्की भी खो गयी थी।

[56] Grinding stone. See the picture above

इस बार हवाओं के देवता ने उससे पूछा कि तुम रात कहॉ गुजारते हो?

उस आदमी ने सारी कहानी सुना दी तो हवाओं के देवता बोले — "उन्होंने तुम्हारी बतख और चक्की दोनों ही चुरा लिये हैं इस लिये अबकी बार तुम यह डंडा ले जाओ। उन लोगों के पूछने पर कहना कि मैं इससे कहता हूँ "मुझे बॉध दो, मुझे बॉध दो।"

आदमी ने वह डंडा उठाया और चल दिया। रात होने पर वह फिर उसी सराय में रुका। लोगों के पूछने पर उसने उनको वही कहा जो हवाओं के देवता ने उससे कहने के लिये कहा था।

रात को चौकीदार उसे चुराने के लिये आया तो उसने डंडे से कहा — "मुझे बॉध दो, मुझे बॉध दो।"

अब क्या था वह डंडा उठा और उसने उस कमरे में रखी सब चीज़ें बॉधनी शुरू कर दीं। अब क्योंकि चौकीदार भी उसी कमरे में था सो उसने उसको भी बॉध दिया। फिर वह डंडा बाहर निकला और उसने और दूसरी चीज़ों और दूसरे लोगों को भी बॉधना शुरू कर दिया।

चौकीदार को पता ही नहीं था कि वह उसके इस काम को कैसे रोके इसलिये उसने शोर मचाना शुरू कर किया।

उस शोर से उस आदमी की ऑख खुल गयी। उसने डंडे को सॅभाला और सब आदमियों को खोला।

चौकीदार ने अपनी चोरी मान ली और उसकी बतख और चक्की दोनों ला कर उसको दे दीं। वह आदमी अपनी सब चीज़ें ले कर खुशी खुशी घर वापस आ गया।

अब वह बतख और चक्की को अपने पास रखता था और उससे सोना निकालता था और वह डंडा उसने अपने घर के एक कोने में खड़ा कर दिया था क्योंकि अब उसको उसकी जरूरत ही नहीं पड़ती थी।

15 आश्चर्यजनक बॉसुरी वादक[57]

यह एक कहानी ही नहीं है बल्कि यह एक सच्ची घटना है जो आज से दो सौ साल से भी ज़्यादा पुरानी है।

केप ब्रैटन में एक बार एक बहुत ही गरीब आदमी रहा करता था। उसकी पत्नी एक बेटे को छोड़ कर मर गयी थी। इसके बाद उसने एक अमीर विधवा से शादी कर ली।

उस स्त्री के अपने भी दो बेटे थे। वह स्त्री अपने बेटों को तो बहुत प्यार करती थी पर उस सौतेले बेटे को वह बहुत तंग करती थी।

वह उस सौतेले बेटे को रसोईघर में ही खाना देती थी और उसको सारा दिन वहीं रखती थी जबकि उसके अपने बेटे खाने के कमरे में खाना खाते थे और फिर इधर उधर खेलते थे।

उस स्त्री के अपने बेटों को बॉसुरी बजाने का बहुत शौक था और वे बॉसुरी बजाते भी बहुत अच्छी थे सो उसने उनको दो नयी बढ़िया बॉसुरी ला कर दे दी थीं।

इस सौतेले बेटे को भी बॉसुरी बजाने का बहुत शौक था पर उसके पास एक बहुत ही पुरानी बॉसुरी थी और एक बहुत पुरानी धुन। उसको भी वह अच्छी तरह बजा नहीं पाता था।

[57] Wonderful Flute Player. (Story No 15)

एक बार वह सौतेला बेटा जानवर चरा रहा था और अपनी पुरानी बॉसुरी पर पुरानी धुन निकालने की कोशिश कर रहा था कि इतने में उसने देखा कि एक बहुत ही सुन्दर परियों के राजकुमार जैसा सुन्दर आदमी चला आ रहा है।

उसने इस सौतेले बेटे से पूछा — "क्या तुम अपने भाइयों की तरह बॉसुरी बजाना सीखना चाहते हो?"

सौतेला बेटा बोला "हॉ"।

वह परियों वाला आदमी बोला — "अच्छा तो तुम अपनी उॅगलियॉ मेरे मुॅह में रखो।" उसने ऐसा ही किया।

उस आदमी ने कहा — "अब तुम अपनी बॉसुरी बजाओ।" उसने फिर अपनी बॉसुरी बजायी।

पर यह क्या? उस बॉसुरी में से तो इतनी मीठी धुनें निकलने लगीं कि हवा बहना रुक गयी, मछलियॉ तैरना भूल गयीं, जानवर चरना छोड़ कर उसके पास आ कर खड़े हो गये। पक्षी अपने अपने घोंसले छोड़ कर उसके चारों तरफ आ कर बैठ गये।

कुछ देर बाद वह घर आ गया। घर आ कर उसने किसी से कुछ नहीं कहा और जा कर रोज की तरह रसोईघर में बैठ गया।

अगले दिन एक आदमी उनके घर आया और कहने लगा कि वह उन दोनों भाइयों में से एक को अपने स्टीमर पर बॉसुरी बजाने की नौकरी देना चाहता था इसलिये वह उन दोनों का बॉसुरी वादन सुनना चाहता था।

जब वह उन दोनों का बॉसुरी वादन सुन चुका तो उसकी निगाह रसोईघर में बैठे उस सौतेले बेटे पर पड़ी। उसने उन दोनों बेटों की मॉ से पूछा कि रसोईघर में बैठा वह लड़का कौन था।

मॉ बोली — "ओह वह लड़का? वह तो हमारे जानवर चराता है।"

वह आदमी बोला — "लगता है कि वह भी बॉसुरी बजाता है क्योंकि मुझे उसके हाथ में भी बॉसुरी दिखायी दे रही है। क्या मैं उसकी बॉसुरी सुन सकता हूँ?"

मॉ बोली — "हॉ हॉ क्यों नहीं, वह बॉसुरी बजाता तो है पर वह अभी ठीक से नहीं बजा पाता है। उसकी बॉसुरी में से तो बस केवल शोर ही निकलता है।"

आदमी बोला — "फिर भी मैं उसकी बॉसुरी सुनना चाहूँगा।"

लड़के को बुलाया गया और उसको बॉसुरी बजाने को कहा गया तो उसने बॉसुरी बजानी शुरू की।

उसने इतनी ज़्यादा मीठी बॉसुरी बजायी कि उसकी सौतेली मॉ को भी मानना पड़ा कि वह उसके अपने बेटों से भी ज़्यादा अच्छी बॉसुरी बजाता है।

उस लड़के की बॉसुरी सुन कर उस आदमी ने उस लड़के को अपने स्टीमर पर बॉसुरी बजाने की नौकरी दे दी। और अब वह उस आदमी के स्टीमर पर लोगों के लिये बॉसुरी बजाने लगा।

एक दिन जब वह स्टीमर धरती के किनारे से अठारह बीस मील दूर था कि उसमें पानी आने लगा। स्टीमर का कप्तान घबरा गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे।

लड़का बोला — "तुम घबराओ मत, मैं एक ऐसी धुन बजाऊँगा जिसे सुन कर किनारे के लोगों को पता चल जायेगा कि हम लोगों पर कोई मुसीबत आ पड़ी है और वे हमारी सहायता का कोई न कोई इन्तजाम जरूर करेंगे।"

यह कह कर वह जहाज़ के डैक पर चढ़ गया और ऐसी दुख भरी धुन बजायी कि कुछ ही देर में किनारे वाले लोगों ने एक दूसरा स्टीमर उनकी सहायता के लिये भेज दिया।

कप्तान यह देख कर बहुत खुश हुआ और उसने उस लड़के को बहुत सारा इनाम दिया।

इस घटना के बाद से वह बच्चों को बॉसुरी बजाना सिखाने लगा। और तभी से उस घाटी का नाम पाइपर्स ग्लैन[58] पड़ गया।

[58] Piper's Glenn

कैलगरी की लोक कथाऐं

कैलगरी कैनेडा के कुछ मुख्य शहरों में से एक है और उसके अलबर्टा प्रान्त का एक मुख्य शहर है।[59] इसकी गिनती दुनियॉ के सबसे ज़्यादा साफ सुथरे शहरों में होती है और रहने के लिये भी यह बहुत आरामदायक शहरों में गिना जाता है। यह कैनेडा के पश्चिमी हिस्से में स्थित है।

यहॉ की लोक कथाऐं बहुत मशहूर हैं पर वे सब ज़्यादातर अंग्रेजी में मिलती है, हिन्दी में नहीं। आगे की दो लोक कथाऐं इसी शहर में कही सुनी जाने वाली लोक कथाऐं हैं और दोनों ही बहुत मजेदार कथाऐं हैं।

[59] Calgary is an important city of Canada of its Alberta Province situated in its Western part.

16 जिद्दी पत्नी[60]

यह एक हॅसी की, बेवकूफी की और दया की लोक कथा है।

एक आदमी अपनी पत्नी के साथ रहता था मगर उसकी पत्नी बहुत बातूनी थी। इस वजह से वह उससे बहुत तंग रहता था।

एक दिन वे दोनों नदी के किनारे टहल रहे थे। रोज की तरह उसकी पत्नी बोले जा रही थी बोले जा रही थी। कुछ देर तक तो वह आदमी उसकी बात सुनता रहा फिर बोला — "अगर तुम चुप नहीं रहोगी तो मैं तुम्हें इस नदी में फेंक दूॅगा।"

पत्नी बेचारी यह सुन कर चुप हो गयी परन्तु कुछ ही देर में उनको एक घोड़ा दिखायी दे गया। अब उन दोनों में उस घोड़े के रंग पर बहस होने लगी। पत्नी का कहना था कि घोड़ा काला था और पति का कहना था कि घोड़ा सफेद था।

पति ने कहा "गलत" और पत्नी ने कहा "ठीक" और पति ने पत्नी को उठा कर नदी में फेंक दिया।

पत्नी नदी में डूबने लगी और सहायता के लिये चिल्लाने लगी। पति बोला — "अगर तुम यह मान लो कि मैं ठीक हूॅ तो मैं तुम्हें पानी में से अभी निकाल लेता हूॅ।"

[60] Obstinate Wife. (Story No 16)

पत्नी ने एक बार पानी पिया और बोली — "नहीं, मैं ही ठीक हूँ।"

पति फिर बोला — "कह दो कि मैं ठीक हूँ। मैं तुम्हें पानी में से अभी बाहर निकाल लेता हूँ।"

पत्नी ने दोबारा पानी पिया और बोली — "नहीं मैं ही ठीक हूँ। घोड़ा काला है।"

पति फिर बोला — "अभी भी कह दो कि मैं ठीक हूँ। मैं तुम्हें पानी में से अभी भी निकाल लूँगा।"

पत्नी ने तीसरी बार पानी पिया पर उसके बाद वह नहीं बोल सकी तो पति बोला — "मैं तुमसे आखिरी बार पूछता हूँ कि मैं ठीक हूँ या गलत? यदि तुम ठीक हो तो तुम अपने हाथ की उँगलियों से वी का निशान बन दो।"

पति ने देखा कि उसकी पत्नी ने डूबते डूबते भी वी का निशान बना दिया था। पर उसने बचने के लिये हार नहीं मानी।

17 एक मेरा एक तुम्हारा[61]

एक बार दो छोटे छोटे बच्चे एक कब्रिस्तान में शाम के समय अपनी खेलने की गोलियॉ यानी कंचे[62] गिन रहे थे।

एक लड़के के पास सारे कंचे रखे थे और दूसरा उनमें से एक एक उठा कर बॉटता जा रहा था — "यह एक मेरा और यह एक तुम्हारा। यह एक मेरा और यह एक तुम्हारा।"

उसने अभी दो तीन बार ही ऐसा किया था कि एक कंचा पास में लगी तारों की जाली के उस पार बाहर की तरफ जा पड़ा। गिनने वाले ने कोई ध्यान नहीं दिया।

इतने में एक किसान उधर से गुजरा तो यह सुन कर बड़े पशोपेश में पड़ गया "यह एक मेरा और यह एक तुम्हारा।" उसने सोचा "इस कब्रिस्तान में यह क्या बॅट रहा है।"

उसने जाली के उस पार देखने की काफी कोशिश की कि कौन क्या बॉट रहा है परन्तु उसे कुछ दिखायी ही नहीं दिया।

इतने में दूसरे लड़के को ध्यान आया कि एक कंचा तो बाहर चला गया था। वह बोला — "बाहर वाले का क्या होगा?"

---

[61] One is Mine and One is Yours. (Story No 17)

[62] Translated for the word "Marbles" – little glass balls to play with. See their picture above.

पहले वाला लड़का बोला — "अरे हॉ, बाहर वाले को भी तो देखना है।"

जब किसान को कुछ भी दिखायी नहीं दिया तो उसने सोचा कि इस कब्रिस्तान में इस समय और कौन हो सकता है सिवाय भूतों और शैतानों के।

लगता है शैतान और फरिश्ते[63] मिल कर यहॉ लाशों का बॅटवारा कर रहे हैं। उनको मेरा भी पता चल गया है क्योंकि उनमें से एक ने पूछा था कि बाहर वाले का क्या होगा और दूसरे ने कहा था कि "अरे हॉ उस बाहर वाले को भी तो देखना है।"

वह डर गया और भागा भागा पादरी के पास पहुॅचा और जा कर उसको सारी घटना सुना दी। पादरी को किसान की बातों पर विश्वास नहीं हुआ तो वह उस किसान के साथ साथ खुद भी उस जगह पर आया जहॉ यह सब हो रहा था।

पादरी ने भी अन्दर झॉक कर देखने की भरसक कोशिश की परन्तु उसको भी कुछ दिखायी नहीं दिया।

इसी बीच उन बच्चों का एक और कंचा तारों की जाली के बाहर जा पड़ा। अब बॅटवारा आसान हो गया था।

पादरी ने भी सुना — "यह एक मेरा और यह एक तुम्हारा और बाहर वालों में से एक मेरा और एक तुम्हारा। बस अब बॅटवारा ठीक हो गया।"

[63] Translated for the words "Satan and Angels"

यह सुनते ही पादरी को भी लगा कि शैतान और फरिश्ते ने उसको भी देख लिया है और इसी लिये वे किसान और पादरी का भी बॅटवारा कर रहे हैं।

अब पादरी से नहीं रहा गया। वह वहॉ से उलटे पैरों भाग लिया। किसान के भी बात समझ में आ गयी सो वह भी पादरी के पीछे पीछे भाग लिया।

बच्चे इस सबसे बेखबर थे। वे जब अपने सारे कंचे बॉट चुके तो उन्होंने बाहर से अपने दोनों कंचे उठाये, एक कंचा एक बच्चे ने लिया और दूसरा दूसरे बच्चे ने और अपने अपने घरों को चले गये।

यूक्रेनियन कैनेडियन्स की लोक कथाऐं

कुछ समय पहले तक यूक्रेनियन्स[64] की गिनती कैनेडा में रहने वाले लोगों में चौथे नम्बर पर की जाती थी। पहला नम्बर ब्रिटेन में रहने वाले लोगों का था, दूसरा नम्बर फ्रांस में रहने वाले लोगों का था और तीसरा नम्बर जर्मनी में रहने वाले लोगों का था पर अब यह पॉचवे नम्बर पर आता है। चौथे नम्बर पर अब इटली में रहने वाले लोग आते हैं।

इन लोगों की लोक कथाऐं और लोक गीत पश्चिमी कैनेडा में अधिक कहे, सुने और गाये जाते हैं। अंग्रेजी, फ्रेंच और इन्डियन लोक कथाओं के बाद इन्हीं की लोक कथाओं का नम्बर आता है।

तो लीजिये पढ़िये कैनेडा में यूक्रेन देश की यह मजेदार लोकप्रिय लोक कथा ...

[64] Ukraine – areawise it is the largest country in Eastern Europe bordering Russia and Black Sea with the population of 45 million.

18 चतुर बेटी[65]

यूकेन की यह लोक कथा जो उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के कैनेडा देश में कही सुनी जाती है बहुत ही अक्लमन्दी की लोक कथा है।

यह बहुत पुरानी बात है जब लौर्ड हुआ करते थे। उनके पास बहुत ताकत होती थी। वे ही जज होते थे और वे गरीबों को जो चाहते दे सकते थे।

एक बार ऐसा हुआ कि एक लौर्ड ने लोगों को तीन पहेलियॉ बूझने के लिये दीं — क्या चीज़ शरीर को सबसे ज़्यादा ताकत देने वाली है? क्या चीज़ सबसे ज़्यादा मीठी है? और क्या चीज़ सबसे ज़्यादा चंचल है?

उसी शहर में एक गरीब आदमी अपनी अठारह साल की बेटी के साथ रहता था। जब बेटी ने ये पहेलियॉ अपने पिता से सुनी तो वह अपने पिता से बोली — "पिता जी, आप लौर्ड के पास जा कर ये पहेलियॉ बुझाइये न।"

वह आदमी बोला — "बेटी, वहॉ पर इतने बड़े बड़े अक्लमन्द और अमीर लोग उन पहेलियों को बूझने के लिये आये हुए हैं। मैं उन लोगों के बीच कैसे जा सकता हूँ?

[65] Intelligent Daughter. (Story No 18)

वहॉ लौर्ड के पास बहुत बड़े बड़े लोग आते हैं और लौर्ड उनसे पूछता है — "तुम यहॉ किसलिये आये हो?"

वे लोग जवाब देते हैं — "हम लोग आपकी पहेलियॉ बूझने के लिये आये हैं।"

लौर्ड कहता है — "ठीक है। अगर तुम मेरी पहेलियॉ बूझ दोगे तो तुम्हें सौ डकैट[66] मिलेंगे और यदि नहीं बूझ पाये तो सौ कोड़े मिलेंगे।"

वे लोग सब अपनी अपनी समझ के अनुसार पहेलियॉ बूझते हैं परन्तु सब गलत बूझते हैं और बेचारे सब सौ–सौ कोड़े खा कर वापस चले जाते हैं।

अब बता बेटी, मेरी क्या हैसियत है जो मैं वहॉ जाऊँ? और यदि मैं वहॉ गया भी और मैंने भी वे पहेलियॉ गलत बूझी तो मुझे भी सौ कोड़े पड़ेंगे और वे सौ कोड़े खा कर मेरी तो जान ही निकल जायेगी। नहीं बेटी, मैं वहॉ नहीं जा सकता।"

बेटी बोली — "नहीं पिता जी, आप जाइये, मैं आपको इन पहेलियों के जवाब बताती हूँ।

शरीर को सबसे ज़्यादा ताकत देने वाली चीज़ है धरती। धरती जिससे हमारा खाना आता है। सबसे ज़्यादा मीठी चीज़ है नींद

[66] Ducat – a gold coin that was used as a trade currency throughout Europe before World War I. Its weight is 3.4909 grams of .986 gold.

जिसके आगे कोई चीज़ प्यारी नहीं। और सबसे ज़्यादा चंचल हैं ऑखें।"

पिता डरते डरते लौर्ड के पास पहुॅचा। लौर्ड ने उससे भी पूछा — "तुम यहॉ किसलिये आये हो?"

वह आदमी थोड़ा झुक कर बोला — "सरकार, मैं आपकी पहेलियॉ बूझने आया हूॅ।"

लौर्ड बोला — "शर्त तो तुमको मालूम है न?"

आदमी बोला — "जी सरकार।"

लौर्ड ने पूछा — "तो बताओ क्या चीज़ सबसे ज़्यादा मीठी है?"

आदमी थोड़ी देर चुप रहने के बाद बोला — "सरकार नींद। क्योंकि जब किसी को नींद आती है तो वह सब कुछ भूल जाता है।"

लौर्ड फिर बोला — "अच्छा अब बताओ कि शरीर को सबसे ज़्यादा ताकत देने वाली चीज़ क्या है?"

आदमी फिर कुछ पल रुका और बोला — "सरकार धरती। शरीर को सबसे ज़्यादा ताकत देने वाली चीज़ है धरती क्योंकि वही हम सबको खाना देती है।"

लौर्ड फिर बोला — "बहुत अच्छे। और अब आखिरी सवाल। क्या चीज़ सबसे ज़्यादा चंचल है?"

आदमी बोला — "सरकार सबसे ज़्यादा चंचल हैं ऑखें। उन्हें बन्द कर लो तो वे कुछ नहीं देखती हैं और उन्हें खोल लो तो वे आसमान के तारे तक देख लेती हैं।"

लौर्ड बोला — "बहुत अच्छे। तुमने पहेलियॉ तो बूझ लीं हैं पर अब यह बताओ कि इन पहेलियों के जवाब तुमको किसने बताये? क्योंकि इन पहेलियों को तुम खुद तो बूझ नहीं सकते।"

आदमी थोड़ा सिर झुका कर बोला — "सरकार आप ठीक कहते हैं। ये पहेलियॉ मेरी बेटी ने बूझी हैं।"

लौर्ड बोला — "तुम्हारी बेटी तो बहुत होशियार लगती है। ऐसा करो, ये एक दर्जन अंडे ले जाओ और कल सुबह मुझे इनमें से निकले हुए चूज़े ला कर देना।"

आदमी ने सोचा मैंने पहेलियों के जवाब क्या बूझे यह तो एक और मुसीबत गले आ पड़ी। पर मरता क्या न करता उसने वे अंडे उठाये और अपनी बेटी की सलामती की प्रार्थना करते हुए वह घर वापस आ गया।

बेटी ने पिता को देखा तो सब काम छोड़ कर दौड़ी दौड़ी पिता के पास आयी। उसने देखा कि उसका पिता तो ठीकठाक दिखायी दे रहा है इसका मतलब है कि कम से कम उसको सौ कोड़े नहीं पड़े। उसने सन्तोष की सॉस ली।

वह बोली — "क्या हुआ पिता जी? आप तो ठीक ठाक लग रहे हैं इससे ऐसा लगता है आपको इनाम मिल गया है।"

पिता कुछ परेशान सा बोला — "बस बस रहने दे। लौर्ड ने डकैट तो दिये नहीं और ये अंडे मुझे थमा दिये हैं। उन्होंने कहा है कि इन अंडों से निकले हुए चूज़े उनको कल सुबह चाहिये। अब क्या होगा?"

और उसने लौर्ड के घर में हुआ सारा हाल अपनी बेटी को बता दिया।

सुन कर बेटी बोली — "पिता जी, आप इन चूज़ों की बिल्कुल भी चिन्ता न करें। आइये पहले खाना खा लीजिये बहुत भूख लगी है।"

जब तक उस लड़की का पिता तैयार हो कर खाना खाने आया तब तक उसने वे सब अंडे पका डाले। कुछ उसने खुद खाये और कुछ उसने अपने पिता को खिलाये।

खाना खा कर उसने पिता को बाजरे के कुछ भुट्टे[67] दिये और बोली — "पिता जी, आप इन भुट्टों को अभी अभी लौर्ड के पास ले जाइये और कहिये कि वह इनमें से दाने निकाले। उन्हें बोये और सुबह तक मुझे उनके भुट्टों में से मुलायम दाने निकाल कर भेजे ताकि सुबह

[67] Millet ears. See their picture above

सुबह मैं उनको उन अंडों में से निकले हुए चूज़ों को खिला सकूँ जो उसने मुझे भिजवाये हैं।"

पिता बाजरे के वे भुट्टे ले कर लौर्ड के पास पहुँचा। लौर्ड उसे दोबारा आया देख आश्चर्य में पड़ गया।

उसने पूछा — "क्या हुआ चूज़े इतनी जल्दी निकल आये?"

आदमी लौर्ड को भुट्टे देता हुआ बोला — "सरकार, मेरी बेटी ने यह बाजरा भेजा है और कहा है कि आप इसमें से दाने निकाल कर बो दें और सुबह ताजा पैदा हुआ मुलायम बाजरा सुबह पैदा होने वाले चूज़ों के खाने के लिये तैयार रखें।"

लौर्ड बोला — "तुम्हारी बेटी तो बहुत ही होशियार है। ऐसा करो कि तुम उसको मेरे सामने लाओ और उससे कहना कि वह मेरे पास आये तो न तो वह बिल्कुल बिना कपड़ों के हो और न ही कोई कपड़ा पहने हो।

न वह किसी सवारी पर आये और न ही पैदल आये। न तो वह कोई भेंट ही लाये और न ही वह बिना भेंट के आये।"

पिता बेचारा फिर से चिन्ता करता हुआ घर वापस लौट गया। बेटी ने पिता को आते देखा तो सब काम छोड़ कर फिर पिता के पास भागी आयी और बोली — "क्या हुआ पिता जी? अब लौर्ड ने क्या कहा?"

पिता दुखी हो कर बोला — "बेटी, अबकी बार तू लौर्ड के फन्दे में फॅस गयी। इससे निकलना बहुत मुश्किल है।"

बेटी को भी थोड़ी चिन्ता हो गयी पर फिर भी वह हिम्मत से बोली — "हुआ क्या पिता जी, कुछ बताइये तो सही।"

पिता ने उसे सब बता दिया तो बेटी की सॉस में सॉस आयी और वह बोली — "बस पिता जी, इतनी सी बात। आप तो बेकार में ही चिन्ता कर रहे थे। आप बिल्कुल भी चिन्ता न करें मैं सब सॅभाल लूॅगी। आइये पहले खाना खा लें फिर सोचेंगे।"

खाना खा कर बेटी अपने पिता से बोली — "पिता जी, आप मुझे बाजार से दस गज मछली पकड़ने वाला जाल ला दें।"

पिता बाजार गया और उसने अपनी बेटी के लिये दस गज मछली पकड़ने वाला जाल ला कर दे दिया।

उस मछली पकड़ने वाले जाल से उसने अपने लिये एक पोशाक बनायी और उसको पहन लिया। इस तरह वह न तो बिना कपड़ों के थी और न ही उसने कोई कपड़ा पहन रखा था।

फिर उसने अपना बड़ा वाला कुत्ता लिया और उस पर बैठ गयी। इस तरह वह न तो किसी सवारी पर सवार थी और न ही पैदल चल रही थी क्योंकि उस पर बैठ कर चलने से उसके पैर केवल घिसट ही रहे थे।

फिर उसने दो चिड़ियॉ पकड़ीं और एक बिल्ली और अगले दिन लौर्ड के घर चल दी।

लौर्ड ने जब उसे आते देखा तो उस पर अपने कुत्ते छोड़ दिये।

लड़की ने अपनी बिल्ली छोड़ दी तो लौर्ड के कुत्ते उसकी बिल्ली के पीछे दौड़ पड़े और वह लड़की लौर्ड के घर में घुसी।

लौर्ड के सामने पहुँच कर उसने कहा — "लौर्ड, ये रहीं आप की भेंटें, पकड़िये।" यह कह कर उसने अपने हाथों में पकड़ी दोनों चिड़ियॉ छोड़ दीं।

चिड़ियॉ फुर्र से उड़ गयीं और लौर्ड उनको देखता रह गया। इस तरह वह भेंट लायी भी थी पर लौर्ड उस भेंट को ले भी न सका।

लौर्ड ने देखा कि वह कपड़े पहने भी थी और नहीं भी पहने थी। इसके अलावा वह अपने कुत्ते पर सवार थी और उसके पैर घिसट रहे थे सो वह सवारी पर थी भी और नहीं भी थी।

लौर्ड यह सब देख कर बहुत खुश हुआ। वह बोला — "बैठो, तुम बहुत होशियार लड़की हो। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

लड़की बोली — "यदि आप चाहें तो।"

लौर्ड फिर बोला — "ठीक है। अभी तुम अपने घर जाओ। मैं कल तुम्हारे पिता जी से बात करूँगा और फिर हम शादी कर लेंगे।"

लड़की अपने घर वापस आ गयी और अपने पिता से बोली — "पिता जी, लौर्ड मुझसे शादी करना चाहते हैं।"

अगले दिन लौर्ड उस आदमी के घर आया और फिर उन दोनों की शादी हो गयी।

अब सारे लोग अपनी सारी उलझनों को सुलझाने के लिये उस लड़की के पास आते थे चाहे लौर्ड घर में होता था या नहीं। और क्योंकि वह लड़की सारे फैसले अक्लमन्दी और समझदारी से करती थी इसलिये सारे लोग उसके फैसलों से बहुत सन्तुष्ट थे।

एक बार तीन लोग एक मेले में जा रहे थे। एक आदमी के पास एक घोड़ी थी, दूसरे आदमी के पास एक गाड़ी थी और तीसरे आदमी के पास एक जग था।

रास्ते में रात हुई तो वे तीनों लौर्ड के घर के पास रुक गये और वहीं सो गये। सुबह उठे तो देखा कि घोड़ी वाले की घोड़ी ने वहाँ एक बच्चा दे दिया था।

घोड़ी वाला आदमी बोला — "क्योंकि घोड़ी मेरी है इसलिये यह बच्चा भी मेरा है।"

गाड़ी वाला आदमी बोला — "तुम झूठ बोल रहे हो यह बच्चा मेरी गाड़ी ने दिया है इसलिये यह बच्चा मेरा है।"

तीसरा आदमी बोला — "तुम दोनों झूठ बोल रहे हो। यह बच्चा मेरे जग ने दिया है इसलिये यह बच्चा मेरा है।"

तीनों फैसले के लिये लौर्ड के घर आये। लौर्ड घर में नहीं था तो लौर्ड की पत्नी बाहर आयी और उन लोगों से पूछा — "क्या बात है?"

तीनों ने अपनी उलझन बतायी तो वह बोली — "लौर्ड तो अभी घर में नहीं है बाहर अनाज से मछली पैदा करने गये हैं।"

यह सुन कर तीनों को बड़ा ताज्जुब हुआ। उनमें से एक बोला — "हमने मछली से तो मछली पैदा होती सुनी है पर अनाज से मछली पैदा होती तो कभी नहीं सुनी।"

लौर्ड की पत्नी बोली — "और मैंने भी कभी गाड़ी और जग से घोड़ा पैदा होता नहीं सुना। यह बच्चा घोड़ी वाले का है, उसको दे दो और अब तुम जाओ।"

जब लौर्ड लौट कर आया और उसने यह सब सुना तो अपनी पत्नी पर बहुत नाराज हुआ क्योंकि वह उससे कई बार कह चुका था कि वह उसके मामलों में दखल न दिया करे और आज उसने फिर फैसला कर दिया था।

वह फिर बोला — "तुम मेरी बात सुनती नहीं हो इसलिये तुम आज से मेरी पत्नी नहीं हो। जाओ निकल जाओ मेरे घर से।"

पत्नी बोली — "ठीक है मैं चली जाती हूँ पर आज आखिरी बार हम साथ साथ खाना तो खा लें।"

सो दोनों ने शाम को साथ साथ खाना खाया, शराब पी और फिर लौर्ड सोने चला गया।

इधर पत्नी ने गाड़ी वाले को बुला कर उसे गाड़ी तैयार करने के लिये बोला। गाड़ी तैयार होने पर उसने लौर्ड को गाड़ी में रखवाया और वह खुद भी उसके पास ही बैठ गयी और गाड़ी चल दी।

कुछ देर बाद लौर्ड की ऑख खुली तो उसने देखा कि वह गाड़ी में है। वह बोला — "मैं कहॉ हूॅ? और कहॉ जा रहा हूॅ मैं?"

पत्नी ने जवाब दिया — "आप मेरे साथ हैं और आप मेरे साथ मेरे घर जा रहे हैं। आपने मुझे घर से बाहर निकाल दिया था न।"

लौर्ड बोला — "पर मैंने तो तुमको अकेले को ही घर से निकाला था फिर मैं यहॉ क्या कर रहा हूॅ?"

पत्नी बोली — "पर आपने ही तो कहा था कि मैं अपनी पसन्द की कोई एक चीज़ अपने साथ ले जा सकती हूॅ। और क्योंकि आप मेरे पति हैं और क्योंकि आप मुझे सबसे ज़्यादा प्यारे हैं इसलिये मैं आपको अपने साथ लिये जा रही हूॅ।"

लौर्ड ने अपना सिर पीट लिया। वह बोला — "चलो चलो घर वापस चलो। अब हम लोग साथ ही रहेंगे।"

और वे दोनों घर लौट आये और साथ साथ हॅसी खुशी रहने लगे। अब लौर्ड कभी उसके मामले में दखल नहीं देता था।

आइसलैंड वालों की लोक कथाऐं

आइसलैंड देश एक टापू है जो यूरोप महाद्वीप में आता है और नौर्स देशों के पॉच देशों में से एक है।[68] यह ब्रिटेन के ठीक उत्तर पश्चिम में स्थित है। इसकी आबादी लगभग तीन सौ बाईस हजार है और इसकी राजधानी रैकविक है।

सन् **1869** में जब नये डोमिनियन औफ कैनेडा को रुपर्ट्स लैंड[69] का नाम मिला तो सबसे पहले आइसलैंड के लोगों ने इसका फायदा उठाया। वे लोग इस देश के पश्चिमी हिस्से में आ कर बस गये।

1875 में जो लोग कैनेडा के पूर्वी हिस्से में आ कर बस गये थे वे भी बाद में पश्चिम में विनीपेग झील[70] की तरफ चले गये। और ये पहली बस्तियॉ थीं जो न्यू आइसलैंड के नाम से जानी गयीं।

---

[68] Norse, or Nordic or Scandinavian countries are five – Denmark, Finland, Iceland, Norway, Sweden. You can read their folktales and Myths in “Denmark Ki Lok Kathayen”, “Norway Ki Lok Kathayen”, Sweden Ki Lok Kathayen” and “Norse Deshon Ki Dant Kathayen” books, all written by Sushma Gupta in Hindi.

[69] In 1869 the Dominion of Canada got the name of “Rupert’s Land”

[70] Winnipeg Lake is situated in Manitoba Province of Canada, just West of Ontario Province. Its shape is elongated from North to South – 220 mile long. It is in the middle of Canada.

आगे लिखी कहानी उन्हीं लोगों में कही सुनी जाने वाली कहानियों में से एक है।[71]

[71] This folktale is very similar to an English folktale “An Old Woman and Her Pig”, an Ireland folktale “Moonachar and Manachar” and an European folktale “A Cat and the Rat” – all translated in the book “Bille Aur Chuhiyaa Jaisee Kahaniyan” by Sushma Gupta in Hindi language.

19 नाक कटी चिड़िया[72]

एक बार एक किसान पत्थर से मछली पीस रहा था कि इतने में एक छोटी सी चिड़िया उसके पास आ बैठी और बोली — "ओ किसान, मुझे बहुत भूख लगी है कुछ खाने को दे।"

किसान कुछ बोला नहीं और पास पड़े चाकू से उसकी नाक काट ली।

चिड़िया बोली — किसान किसान, तूने मेरी नाक काटी है अब इसे बॉधने के लिये तू मुझे लाल धागा भी दे।"

किसान बोला — "जा और जा कर उस बुढ़िया से ले ले।"

चिड़िया बुढ़िया के पास गयी और बोली — "बुढ़िया बुढ़िया, किसान ने मेरी नाक काट ली है, इसे बॉधने के लिये लाल धागा दे।"

बुढ़िया बोली — "मैं क्यों दूँ तुझे लाल धागा? मैंने तो तेरी नाक नहीं काटी।"

चिड़िया बोली — "अगर तू मुझे लाल धागा नहीं देगी तो मौथ[73] आ कर तेरा कपड़ा खा जायेगी। आ मौथ आ और आ कर

[72] Noseless Bird (Tale No 19) – a folkland of the Icelanders living in Manitoba Province of Canada.
[73] Moth is a tiny insect which eats cloth. In Northern India normally woolen clothes are kept with moth balls when not in use. These moth balls protect the woolen clothes from eating them by moths.

बुढ़िया का कपड़ा खा जा। बुढ़िया मेरी नाक बॉधने के लिये धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

मौथ बोली — "मैं तो नहीं खाती बुढ़िया का कपड़ा।"

चिड़िया बोली — "तो चुहिया आ कर तुझे खा जायेगी। ओ चुहिया आ और आ कर मौथ को खा जा। क्योंकि मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बॉधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

चुहिया बोली — "मैं तो नहीं खाती मौथ को। मौथ ने मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा।"

चिड़िया बोली — "तो बिल्ली आ कर तुझे खा लेगी। आ बिल्ली आ और आ कर चुहिया को खा ले। क्योंकि चुहिया मौथ को नहीं खाती, मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बॉधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

बिल्ली बोली — "मैं तो नहीं खाती चुहिया को। चुहिया ने मेरा क्या बिगाड़ा है?"

इस पर चिड़िया बोली — "तो कुत्ता आ कर तुझे खा लेगा। आ कुत्ते आ और आ कर इस बिल्ली को खा ले। क्योंकि यह बिल्ली चुहिया को नहीं खाती, चुहिया मौथ को नहीं खाती, मौथ

बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बॉधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

कुत्ता बोला — "मैं तो नहीं खाता बिल्ली को, बिल्ली ने मेरा क्या बिगाड़ा है?"

इस पर चिड़िया बोली — "तो डंडा आ कर तुझे मारेगा। आ रे डंडे आ और इस कुत्ते को मार क्योंकि कुत्ता बिल्ली को नहीं खाता, बिल्ली चुहिया को नहीं खाती, चुहिया मौथ को नहीं खाती, मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बॉधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

डंडा बोला — "मैं क्यों मारूॅ कुत्ते को? कुत्ते ने मेरा क्या बिगाड़ा है?"

चिड़िया बोली — "तब आग आ कर तुझे जला देगी। आ री आग आ और इस डंडे को जला क्योंकि डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बिल्ली को नहीं खाता।

बिल्ली चुहिया को नहीं खाती, चुहिया मौथ को नहीं खाती, मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बॉधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

आग बोली — "मैं क्यों जलाऊॅ डंडे को? डंडे ने मेरा क्या बिगाड़ा है?"

चिड़िया बोली — "तब पानी आ कर तुझे बुझा देगा। आ रे पानी आ और इस आग को बुझा क्योंकि आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बिल्ली को नहीं खाता।

बिल्ली चुहिया को नहीं खाती, चुहिया मौथ को नहीं खाती, मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बॉधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

पानी बोला — "मैं क्यों बुझाऊॅ आग? आग ने मेरा क्या बिगाड़ा है?"

चिड़िया बोली — "तब बैल आ कर तुझे पी जायेगा। आ रे बैल आ और इस पानी को पी जा क्योंकि पानी आग को नहीं बुझाता, आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बिल्ली को नहीं खाता।

बिल्ली चुहिया को नहीं खाती, चुहिया मौथ को नहीं खाती, मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बॉधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

बैल बोला — "मैं क्यों पियूॅ पानी? पानी ने मेरा क्या बिगाड़ा है?"

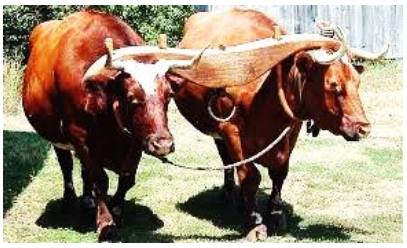

इस पर चिड़िया बोली — "तो जूआ[74] तुम्हारे ऊपर रखा जायेगा। आ रे जूए आ और बैल के ऊपर बैठ जा क्योंकि बैल पानी नहीं पीता, पानी आग को नहीं बुझाता, आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बिल्ली को नहीं खाता।

बिल्ली चुहिया को नहीं खाती, चुहिया मौथ को नहीं खाती, मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बॉधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

जूआ बोला — "ओ चिड़िया रानी, मैं बैल के ऊपर क्यों बैठूँ? बैल से मेरी क्या दुश्मनी है?"

इस पर चिड़िया बोली — "तो कुल्हाड़ी आ कर तुझे काट देगी। आ री आ कुल्हाड़ी आ और बैल के जूए को काट, क्योंकि बैल पानी नहीं पीता, पानी आग को नहीं बुझाता, आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बिल्ली को नहीं खाता।

बिल्ली चुहिया को नहीं खाती, चुहिया मौथ को नहीं खाती, मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बॉधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

कुल्हाड़ी बोली — "मैं तो जूए को नहीं काटती। जूए का कोई कुसूर नहीं है।"

---

[74] When the bulls are yoked in a cart, a wooden yoke is kept on their neck to connect them together. That is called Jooaa in Hindi.

इस पर चिड़िया बहुत नाराज हुई। वह बोली — "तो पत्थर आ कर तुझ पर धार रखेगा। आ रे आ पत्थर आ और कुल्हाड़ी पर धार रख, क्योंकि कुल्हाड़ी जूए को नहीं काटती, जूआ बैल पर नहीं बैठता, बैल पानी नहीं पीता, पानी आग को नहीं बुझाता, आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बिल्ली को नहीं खाता।

बिल्ली चुहिया को नहीं खाती, चुहिया मौथ को नहीं खाती, मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बॉधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

पत्थर बोला — "हॉ हॉ चिड़िया रानी, क्यों नहीं? तुमने एक बार मेरी जान बचायी थी। आज मैं तुम्हारा यह काम जरूर करूँगा। बताओ कहॉ है कुल्हाड़ी?"

कुल्हाड़ी यह सुन कर बहुत डर गयी।

डर के मारे वह जूआ काटने दौड़ी
कुल्हाड़ी को आता देख जूआ बैल पर बैठने दौड़ा
जूए को आता देख बैल पानी पीने दौड़ा।

बैल को आता देख पानी आग बुझाने दौड़ा
पानी को आता देख आग डंडा जलाने दौड़ी
आग को आता देख डंडा कुत्ते को मारने दौड़ा और
डंडा आता देख कुत्ता बिल्ली खाने दौड़ा।
कुत्ते को आता बिल्ली चूहा खाने दौड़ी
बिल्ली को आता देख चुहिया मौथ खाने भागी

चुहिया को आता देख मौथ कपड़ा खाने के लिये उड़ी
तब बुढ़िया ने चिड़िया को उसकी नाक बॉधने के लिये लाल धागा दे दिया।

और इस तरह चिड़िया ने अपनी नाक वापस पायी।

कैनेडा के ज्यूज़ के बच्चों की लोक कथाऐं

रूस और पोलैंड में ज्यूज़ के ऊपर किये गये लगातार अत्याचारों से परेशान हो कर काफी संख्या में ज्यूज़ कैनेडा चले आये। उनमें से कुछ तो पश्चिम की तरफ खेती में लग गये पर ज़्यादातर लोग पूर्व की तरफ टोरान्टो और मौन्ट्रीयल[75] में आ कर बस गये।

उनकी अपनी बहुत सारी पुरानी कहानियॉ और उनके रीति रिवाज अभी तक उन लोगों में चलते चले आ रहे हैं। वहॉ बहुत छोटे बच्चों को दादी की कहानियॉ बहुत सुनायी जाती हैं।

उनमें से कई कहानियॉ दूसरे देशों की कहानियों से मिलती जुलती हैं, जैसे "तीन छोटे सूअर", "छोटी लाल राइडिंग हुड", "ब्रेमेन शहर के संगीतज्ञ"। आगे की दो कहानियॉ उन्हीं की लोक कथाओं में से दी जा रही हैं।

[75] Toronto and Montreal are the two main cities of Canada in its eastern side. Toronto is in Ontario Province and Montreal in French-speaking Province of Quebec

20 बहुत सारे बच्चों की दादी[76]

बहुत पुरानी बात है कि एक दादी अपने बहुत सारे बच्चों के साथ रहती थी। एक दिन दादी को जंगल से लकड़ियॉ इकट्ठा करने जाना था तो उसने अपने बच्चों से कहा कि कोई भी आये तो वे दरवाजा न खोलें।

खास तौर पर उसने उनको एक बड़े भालू के बारे में सावधान किया क्योंकि हालॉकि वह भालू जंगलों में घूमता रहता था फिर भी वह अक्सर घरों तक भी आ जाता था।

सब कुछ समझा कर दादी तो जंगल चली गयी और इधर बच्चों ने अपने घर की सारी खिड़कियॉ बन्द कर लीं और दरवाजा भी बन्द कर के वे घर में छिप कर बैठ गये।

एक आलमारी के ऊपर बैठ गया। दूसरा आलमारी के अन्दर बैठ गया। एक बिछौने के ऊपर बैठ गया तो एक बिछौने के नीचे बैठ गया। एक ओवन में छिप गया।

[76] Grandmother of Many Children. (Story No 20) A folktale of Canadian Jews who migrated from Poland and Russia and inhabited in Toronto and Montreal towns of its Ontario and Quebeck Provinces respectively.

एक चिमनी के ऊपर चला गया तो एक चिमनी के नीचे बैठ गया। परन्तु एक छोटे बच्चे हेशैला[77] को छिपने की कोई जगह नहीं मिली तो वह एक बोतल के अन्दर छिप कर बैठ गया।

आखिर वह बड़ा भालू घूमता घामता उधर आ निकला। उसने देखा कि दादी आज लकड़ियॉ लेने जंगल गयी है और आज बच्चे घर में अकेले हैं तो आज उन बच्चों को खाया जाये।

बस वह दादी के घर चल दिया। उसने जा कर दादी के घर का दरवाजा खटखटाया — "बच्चो, दरवाजा खोलो।"

जब कोई भी नहीं बोला तो उसने फिर से आवाज लगायी — "बच्चो, दरवाजा खोलो। मैं तुमको ब्लैक बैरी[78] दूँगा।"

इस पर बच्चे बोले — "नहीं हमें नहीं चाहिये तुम्हारी ब्लैक बैरी, हमारे पास ब्लैक बैरी हैं।"

भालू फिर बोला — "बच्चो बच्चो, दरवाजा खोलो, मैं तुम्हें ब्लू बैरी[79] दूँगा।"

बच्चे बोले — "नहीं हम दरवाजा नहीं खोलेंगे। हमें नहीं चाहिये तुम्हारी ब्लू बैरी। हमारे पास ब्लू बैरी भी हैं।"

---

[77] Hayshella – name of the youngest child

[78] Black Berry – a kind of berries like fruit. See the picture of black berries in the above picture. They are grainy ones and big.

[79] Blue Berry – a kind of berries like fruit. See them in the picture above. They are of very dark blueblack color – smaller and round ones.

यह सुन कर भालू एक लोहार के यहॉ चला गया और अपनी पूँछ में एक लोहे का टुकड़ा लगवा लाया। इस बार वह बच्चों से बोला — "बच्चों बच्चों, अगर तुम दरवाजा नहीं खोलोगे तो मैं दरवाजा तोड़ कर अन्दर आ जाऊँगा।"

बच्चे बोले — "हम तुमसे नहीं डरते ओ भालू। हम अपनी दादी का कहना मानते हैं।"

यह सुन कर भालू ने गुस्से में आ कर अपनी पूँछ दरवाजे पर ज़ोर से मारी तो दरवाजा टूट गया और भालू घर के अन्दर पहुँच गया।

उसने बच्चों को घर के अन्दर चारों ओर खोजा और अपना बड़ा सा मुँह खोल कर सब बच्चों को खा गया।

लेकिन भालू बोतल में छिपे छोटे हेशैला को नहीं देख पाया और छोटा हेशैला सब देखता रहा। इसके बाद भालू जंगल की तरफ चला गया।

जब दादी जंगल से लौटी तो उसने देखा कि उसका घर तो बिल्कुल शान्त पड़ा है। उसने पुकारा — "बच्चों तुम कहॉ हो?"

जब उसे कोई जवाब नहीं मिला तो वह फिर बोली — "बच्चों तुम कहॉ हो?"

उसे फिर भी कोई जवाब नहीं मिला तो उसने बच्चों को घर में हर जगह ढूँढा। उसने उनको बरामदे में भी देखा पर वहॉ भी कहीं कोई नहीं था।

उसने उनको ऐटिक[80] में देखा पर वहॉ भी कोई नहीं था। वह बेचारी बार बार पुकारती रही — "बच्चों, मेरे प्यारे बच्चों, तुम कहॉ हो?" पर कहीं से उसको कोई जवाब नहीं मिल रहा था।

इसी समय छोटा हेशैला बोतल से निकल कर दादी की गोद में चला गया और उसने उसको सारी कहानी सुना दी कि कैसे भालू जंगल से आया, कैसे उसने अपनी पूँछ से दरवाजा तोड़ा, फिर कैसे उसने बच्चों का पता लगाया और फिर कैसे वह उन सबको खा गया।

दादी ने जब यह सुना तो उसने एक बड़ा चाकू लिया और लोहार के घर ले जा कर उसे खूब तेज़ करा लिया और उसको अपने कपड़ों में छिपा लिया।

फिर वह जंगल में गयी और उसने जंगल में जा कर आवाज लगायी — "बैरेले[81], ओ बैरेले, मेरे पास आओ।"

भालू बोला — "मैं नहीं आता।"

दादी बोली — "बैरेले, अगर तुम मेरे पास आओगे तो मैं तुमको बहुत बढ़िया सी पुडिंग[82] दूँगी।"

भालू फिर बोला — "नहीं मैं नहीं आता।"

---

[80] A room or space that is just below the roof of a building and that is often used to store things, but sometimes it is used to live there if it is big enough. Normally it is in a conical shape.

[81] Berelle – name of the bear

[82] Pudding is the name of a dish like Kheer of India. It can be of semolina, or rice or sago.

दादी फिर बोली — "बैरेले आओ न, मैं तुम्हारे कान भी गुदगुदाऊँगी।"

भालू बोला — "ओह, बस यही तो मुझे बहुत अच्छा लगता है दादी।"

भालू जंगल से बाहर आ गया और दादी की गोदी में सिर रख कर लेट गया। दादी ने भालू के कान सहलाने शुरू कर दिये — पहले दॉया कान, फिर बॉया कान। भालू को धीरे धीरे नींद आने लगी।

दादी ने मौका देखा और अपने कपड़ों मे से चाकू निकाल कर भालू का पेट फाड़ दिया। भालू का पेट फटते ही दादी के सारे बच्चे उसमें से निकल पड़े।

दादी अपने सब बच्चों को घर ले गयी। उसने उन सबको मल मल कर नहलाया, साफ कपड़े पहनाये, बाल बनाये, नये जूते और मोजे पहनाये और फिर उन सबको स्कूल भेजा।

इस तरह दादी ने भालू को मार कर अपने बच्चों की जान बचायी।

21 छोटी बूढ़ी दादी[83]

एक छोटी बूढ़ी दादी एक जंगल के किनारे के पास रहती थी। वह आस पास के शैतान बच्चों को ठीक से बर्ताव करना सिखाती थी।

एक दिन एक मॉ अपनी छोटी सी बेटी को दादी के पास ले कर आयी और बोली — "मॉ, मेरी बेटी को भी कुछ सिखा दो यह मेरे घर के कामों में बिल्कुल भी सहायता नहीं करती।"

दादी मुस्कुरायी और बोली — "ठीक है इसे छोड़ जा मेरे पास। मैं सिखा दूँगी।" बच्ची की मॉ चली गयी और दादी ने बच्ची को सिखाना शुरू कर दिया।

अगले दिन वे दोनों जंगल में लकड़ियॉ चुनने गये। उनके जाने के बाद एक छोटा भालू दादी की झोंपड़ी के पास आया और उसके आस पास चक्कर काटने लगा।

इतने में ही एक छोटा कुत्ता आ गया और भालू से बोला — "छोटे भालू, तुम इस झोंपड़ी के आस पास चक्कर क्यों काट रहे हो?"

[83] The Little Old Grandmother. (Story No 21) A folktale of Canadian Jews who migrated from Poland and Russia and settlted in Toronto and Montreal towns of its Ontario and Quebeck Provinces.

छोटा भालू बोला — "तुम्हें इससे क्या? तुम चाहो तो तुम भी चक्कर काट लो।" और फिर दोनों दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर काटने लगे।

इतने में एक छोटा हिरन उधर आ निकला और उन दोनों से बोला — "ओ छोटे भालू और छोटे कुत्ते, तुम लोग दादी की झोंपड़ी के आस पास क्यों घूम रहे हो?"

भालू और कुत्ते ने जवाब दिया — "तुम्हें इससे क्या, तुम चाहो तो तुम भी घूम सकते हो।" और फिर तीनों दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ घूमने लगे।

इतने में एक मुर्गा आया और उसने उन तीनों से पूछा — "छोटे भालू, छोटे हिरन और छोटे कुत्ते, तुम सब दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर क्यों काट रहे हो?"

तीनों बोले — "तुम चाहो तो तुम भी आ जाओ। तुमको कौन मना कर रहा है।" और इस तरह फिर चारों दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर काटने लगे।

इतने में एक केटली का ढक्कन उधर से गुजरा। उन सबको इस तरह से चक्कर काटते देख कर उसने उनसे पूछा — "ओ छोटे

भालू, छोटे कुत्ते, छोटे हिरन, और मुर्गे, आप सब लोग इस तरह दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर क्यों काट रहे हैं?"

वे सब एक आवाज में बोले — "तुम्हें इससे क्या, तुम चाहो तो तुम भी चक्कर काट लो।" सो अब पॉचों दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर काटने लगे।

इतने में एक पिन और कोलतार आये और उन पॉचों को इस तरह चक्कर काटते देख कर आश्चर्य से पूछने लगे — "ओ छोटे भालू, छोटे कुत्ते, छोटे हिरन, मुर्गे और केटली के ढक्कन। आप सब लोग इस तरह दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर क्यों काट रहे हैं?"

वे सब फिर एक साथ बोले — "तुम्हें इससे क्या लेना देना है तुम चाहो तो तुम भी आ कर चक्कर काट लो न।" सो अब वे सातों दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर काटने लगे।

चक्कर काटते काटते उन सातों को शाम हो गयी। अब उन सबको नींद आने लगी। दादी अभी तक घर नहीं लौटी थी सो वे दादी की झोंपड़ी में घुस कर सोने की जगह तलाश करने लगे।

छोटा भालू दादी के बिस्तर पर सो गया। छोटा कुत्ता दादी के पालने में सो गया। छोटा हिरन दादी के ओवन के ऊपर चढ़ गया। मुर्गा उड़ कर अलमारी के ऊपर बैठ गया।

केटली का ढक्कन चिमनी में ऊपर चढ़ गया और कोलतार दियासलाई की डिबिया में दुबक कर बैठ गया। पिन को समझ में

नहीं आया कि वह कहॉ जाये सो वह एक तौलिये में लग कर बैठ गयी।

उसी समय दादी और वह लड़की जंगल से लकड़ी ले कर वापस लौटे और सोने की तैयारी करने लगे। जब वे बिस्तर में घुसने की कोशिश कर रहे थे तो भालू ने उनको अपना पैर मार कर इतना डरा दिया कि वे दोनों कूद कर वहॉ से हट गये।

उन्होंने पालने में घुसने की कोशिश की तो वहॉ से कुत्ता भौंका और उसने उनको काट लिया। वे चिल्लाये — "कौन हो तुम?"

फिर उन्होंने ओवन के ऊपर जगह ढूँढी तो वहॉ से छोटे हिरन ने उनको डरा दिया। दादी स्टोव के पास अपने आपको गर्म करने के लिये गयी तो ऊपर से केटली का ढक्कन उसके सिर पर गिर पड़ा।

दादी डर गयी और बोली — "आज मेरी झोंपड़ी में यह सब क्या हो रहा है। उसने सोचा कि उसे लैम्प जला कर देखना चाहिये कि उसकी झोंपड़ी में आज यह सब क्या हो रहा है।"

सो लैम्प जलाने के लिये उसने दियासलाई की डिबिया उठायी। दादी ने डिबिया खोली ही थी कि उसका हाथ कोलतार से चिपक गया और वह उससे अपना हाथ ही नहीं छुड़ा सकी।

किसी तरह उसने कोलतार से अपना हाथ छुड़ाया और हाथ धोने गयी तो हाथ धो कर जब उसने हाथ पोंछने के लिये तौलिया

उठाया तो पिन उसके हाथ में इतनी ज़ोर से चुभी कि वह तो दर्द के मारे चीख ही पड़ी।

इतने में मुर्गा उड़ कर उसके पास आया और बोला — "आज का दिन बहुत बुरा है न दादी।"

इस बात ने तो दादी को इतना ज़्यादा डरा दिया कि वह तो बेहोश हो कर वहीं गिर गयी।

दादी के गिरने से लड़की इतनी ज़्यादा डर गयी कि अपनी मॉ के पास भाग गयी। उस दिन से उसने अपनी मॉ का कहना मानना शुरू कर दिया। मॉ दादी की इस एक दिन की ट्रेनिंग से बहुत खुश थी।

कैनेडा की कुछ और लोक कथाऐं

कैनेडा की केवल यही कथाऐं नहीं हैं जो तुमने अभी तक पढ़ीं। ये कथाऐं तो केवल एक पुस्तक से ली गयी थीं। अब हम तुम्हारे लिये यहॉ की कुछ और कथाऐं भी देते हैं ये कथाऐं यूरोप के लोगों के आने से पहले की हैं। ये कथाऐं साइरस मैकमिलन[84] ने **1922** में इकट्ठी कर के अपनी एक पुस्तक में लिखी थीं।

[84] Cyrus MacMillan, “The Canadian Fairy Tales”. 1922.

22 एक लड़का जिसे लोग खरदिमाग कहते थे[85]

एक बार की बात है कि तीन भाई अपनी इन्डियन बूढ़ी मॉ के साथ समुद्र के किनारे वाले जंगल में रहते थे। उनके पिता तो बहुत दिन पहले ही भगवान को प्यारे हो गये थे। जब वह मरे थे उनके पास कुछ भी नहीं था सो पिता के मरते समय उनके तीनों बेटे और उनकी मॉ सभी बहुत गरीब थे।

जिस जगह ये लोग रहते थे उस जगह शिकार भी बहुत नहीं थे सो अपने पेट पालने के लिये इन सबको जंगल में बहुत दूर जाना पड़ता था। इन तीनों में जो सबसे छोटा बेटा था वह साइज़ में कुछ छोटा और कमजोर भी था।

जब दोनों बड़े बेटे शिकार के लिये जंगल में दूर तक चले जाते तो वह हमेशा ही पीछे रह जाता। हालॉकि वह उनके साथ साथ चलने की कोशिश करता पर वे लोग उसको अपने साथ तक आने ही नहीं देते।

घर का सारा काम उसी को करना पड़ता। सारे दिन वह जंगल से लकड़ियॉ लाता। बाहर से पानी लाता। और जब उसके भाई

[85] The Boy Who Was Called Thick-Head. (Tale No 22) From the book "Canadian Fairy Tales", by Cyrus MacMillan. 1922. Book available at the Web Site : https://fairytalez.com/author/canadian-fairy-tales/

वसन्त के मौसम में मैपिल के पेड़ों[86] का रस निकालने जाते तो वे उसको कभी साथ नहीं ले जाते क्योंकि वह हमेशा ही कुछ न कुछ गलतियॉ या बेवकूफी के काम करता रहता।

इसलिये उसके भाई उसको खर दिमाग कह कर पुकारते थे। जबकि उसके आसपास के सारे लोग उसके अलग तरीके के रहने की वजह से उसको "सीधा" कह कर बुलाते। केवल उसकी मॉ ही उससे ठीक तरह से व्यवहार करती थी।

वह हमेशा ही उससे कहती — "अगर वे तेरे ऊपर हॅसते हैं तो उनको हॅसने दे और बेवकूफ कहते हैं तो कहने दे पर मुझे मालूम है कि तू अपने दोनों बड़े भाइयों से कहीं ज़्यादा अक्ल्मन्द बनेगा। क्योंकि यही बात तेरे जन्म के समय एक परी ने मुझसे कही थी।"

उस गॉव के सरदार की एक बेटी थी जिससे बहुत सारे लोग शादी करना चाहते थे। पर उसके पिता ने सबको दरवाजे से ही लौटा दिया था। वह उनसे कहता था — "मेरी बेटी अभी शादी की

[86] Maple tree is special to Canada. Its leaf is the mark on Canadian flag. Its sap is honey like material, called "Maple Syrup", and can be eaten like honey. Maple syrup is very common for covering the pancakes here and in US. Pictures of both, pancakes with Maple syrup and Maple leaf" are given above.

उम्र की नहीं हुई है। जब उसकी शादी का समय आयेगा तब वह किसी ऐसे आदमी से शादी करेगी जो उसके लिये बहुत सारा शिकार कर के लायेगा।"

बुढ़िया के दो बड़े बेटों ने सोचा कि कम से कम उन दोनों में से एक को तो उसको जीत ही लाना चाहिये। सो वह खूब सारा शिकार करने के लिये देश के उत्तरी हिस्से की तरफ चल दिये क्योंकि अभी पतझड़ चल रहा था और शिकारियों के चॉद का समय आ गया था।

सबसे छोटा बेटा भी उनके साथ जाना चाहता था क्योंकि वह कभी घर से बाहर नहीं गया था और दुनियॉ देखना चाहता था। उसकी मॉ ने भी उसको जाने की इजाज़त दे दी थी।

पर जब उसके भाइयों ने उसकी यह इच्छा सुनी तो वे बहुत नाराज हुए। वे बोले — "यह खरदिमाग तो हमारे लिये केवल बदकिस्मती ही ले कर आयेगा। यह तो केवल एक नौकर है शिकारी नहीं। और यह तो केवल आग के पास बैठ कर काम करने वाला है।"

पर उसकी मॉ ने उनसे जबरदस्ती उसको साथ ले जाने के लिये कहा तो उनको मानना पड़ा। सो तीनों भाई उत्तर की तरफ चल दिये। दोनों बड़े भाई क्योंकि छोटे भाई को साथ ले जाना नहीं चाहते थे और क्योंकि वे समझते थे कि वह बेवकूफ है इसलिये वे रास्ते में ज़ोर ज़ोर से बुड़बुड़ाते हुए जा रहे थे।

दोनों बड़े भाइयों को बहुत अच्छे शिकार मिल गये। उन्होंने बहुत सारे शिकार मारे – खरगोश हिरन औटर बीवर आदि। वे बहुत सारा सूखा हुआ मॉस और खालें ले कर घर लौटे।

दोनों ने सोचा कि वे अब सरदार को अब अपने आपको दिखा सकेंगे कि वे उसकी बेटी से शादी कर सकते थे। अगले साल वे और बहुत अच्छा करेंगे जब शिकारियों का चॉद फिर से निकलेगा। और अगर ऐसा हो गया तो यकीनन हममें से एक उसकी बेटी से शादी कर ही लेगा।

जब सबसे छोटा भाई उत्तर से शिकार कर के वापस आया तो वह केवल एक छोटा सा केंचुआ मार कर लाया। यह केंचुआ एक अंगुल मोटा और एक हाथ लम्बा था। यह सबसे बड़ा केंचुआ था जो उसने अपनी पूरी ज़िन्दगी में देखा था।

उसको देख कर उसे बहुत अच्छा लगा। वह उसको एक बड़ी खोज लगी सो वह उसको दिन रात देखता रहता कि वह तो शिकार करना भी भूल गया।

जब वह उसको एक बक्से में रख कर लाया उसके भाइयों ने मॉ से कहा — "हमने खरदिमाग के बारे में क्या कहा था। देखिये अब तो उसने साफ साफ साबित कर दिया कि वह बेवकूफ है। इतने हफ्तों में इसने केवल एक केंचुआ पकड़ा है।"

यह बात उन्होंने सारे गॉव में फैला दी तो गॉव के सारे लोग उसके ऊपर हॅसते रहे और "खरदिमाग का शिकार" गॉव की एक चर्चा बन गया। पर लड़के की मॉ यह सब सुन कर केवल मुस्कुरा दी। उसने कहा कि वह इस बात से सबको आश्चर्य में डाल देगा।

लड़के ने उस केंचुए को अपने घर के बाहर एक छोटे से बर्तन में रख दिया।

एक दिन एक बहुत बड़ी बतख घूमते घूमते वहॉ आ गयी। उसने अपनी चोंच उस बर्तन के किनारों पर अड़ा दी और तुरन्त ही उस केंचुए को खा गयी।

लड़के को बहुत गुस्सा आया। वह बतख के मालिक के पास गया और उससे जा कर बोला — "आपकी बतख ने मेरा केंचुआ खा लिया। मुझे अपना कीड़ा चाहिये।"

आदमी ने उस कीड़े के लिये वह जितनी कीमत चाहता था वह देने का वायदा किया। पर लड़के ने कहा — "मुझे आपके पैसे नहीं चाहिये। मुझे तो मेरा कीड़ा चाहिये।"

आदमी बोला — "पर मैं वह कीड़ा तुम्हें कहॉ से दे सकता हूॅ उसे तो बतख खा गयी। अब तो वह हमेशा के लिये गया।"

लड़का बोला — "नहीं वह कहीं नहीं गया वह केवल बतख के पेट में है इसलिये मुझे वह बतख चाहिये।"

बदमज़गी न करने के लिये उसने सोचा कि इस बेवकूफ से बहस क्या करना सो उसने खरदिमाग को वह बतख दे दी। लड़का उस बतख को ले कर अपने घर चला गया।

घर ले जा कर उसे भी उसने अपने घर के सामने एक छोटे से घर में रख दिया और उसके चारों तरफ एक नीची सी बाड़ लगा दी। उसके पैर में उसने एक पत्थर बॉध दिया ताकि वह उड़ न सके। अब वह खुश था कि उसका कीड़ा और बतख दोनों उसके पास थे।

पर एक दिन उधर एक लोमड़ी आ निकली। वह अपने लिये खाना ढूँढ रही थी। उसको एक मोटी बतख दिखायी दे गयी। उसने यह भी देखा कि बतख के पैर में एक पत्थर बॅधा हुआ है। वह बोली — "ओह यह तो मेरी खुशकिस्मती है कि मुझे मेरा मन पसन्द खाना मिल गया।"

कह कर उसने बतख के छोटे से घर में कदम रखा तो बतख ने बहुत शोर मचाया पर लोमड़ी उसको जल्दी ही खा गयी। लोमड़ी ने तभी तभी बतख खा कर खत्म की थी कि लड़का बतख के चीखने की आवाज सुन कर वहॉ आ गया।

लोमड़ी जल्दी से वहॉ से निकल नहीं पायी तो लड़के ने उसे पकड़ लिया और उसे एक मोटे डंडे से मारा। वह वहीं मर गयी।

उसकी लाश को उसने अपने घर के पीछे फेंक दिया। उसने सोचा कि यह तो कुछ ज़्यादा बुरा नहीं था। अब मेरे पास मेरा कीड़ा है मेरी बतख है और लोमड़ी है।

उस रात जंगल से खाने की खोज में एक भेड़िया उधर आया। वह बहुत भूखा था। चमकीली चॉदनी में उसने देखा कि एक मरी हुई लोमड़ी पड़ी हुई है। बस वह तुरन्त ही उसके ऊपर टूट पड़ा और उसे खा गया। यहॉ तक कि उसका कोई नामो निशान तक नहीं छोड़ा।

पर उसके वहॉ से भागने से पहले ही लड़के ने उसे देख लिया और एक कुल्हाड़ी से उसे मार दिया। उसने सोचा कि मेरी किस्मत अच्छी है क्योंकि मेरे पास अब कीड़ा है बतख है लोमड़ी है और भेड़िया है।

लेकिन जब अपनी खुशकिस्मती की और चतुराई की यह बात उसने अपने भाइयों को बतायी तो वे उसके ऊपर बहुत ज़ोर से हॅसे और बोले "यह मरा हुआ भेड़िया तुम्हारे लिये क्या अच्छा करेगा। दो दिन बीतने से पहले पहले ही यह एक बदबू फैलाने वाली चीज़ रह जायेगी। और फिर हमको इसे बहुत गहरे गड्ढे में गाड़ना पड़ेगा। तुम तो बहुत ही बड़े बेवकूफ हो।"

लड़के ने इस बात पर काफी विचार किया तो इस नतीजे पर पहुॅचा "कहते तो ये ठीक ही हैं। एक मरा हुआ भेड़िया तो बहुत दिनों तक नहीं चल सकता। मैं इसकी खाल बचा लेता हूॅ।"

सो उसने भेड़िये की खाल निकाल ली और सुखा ली। उसने उस खाल का एक ढोल बना लिया। क्योंकि कैनेडा में रहने वाले आदिवासियों के लिये ढोल संगीत का एक हिस्सा होता था जिसे वे अपने त्यौहारों और नाच के समय बहुत ज़ोर से बजाते थे।

अब यह लड़का रोज ही अपना ढोल बजाता था। इसका उसे इसलिये भी गर्व था क्योंकि गॉव में केवल उसी के पास ढोल था।

एक दिन गॉव के सरदार ने उसको बुला भेजा और उससे कहा — "आज शाम के लिये मैं तुम्हारा ढोल उधार लेना चाहता हूँ। आज मेरे यहॉ बहुत लोग आयेंगे। आज मैं अपनी बेटी के सिलसिले में एक घोषणा करना चाहता हूँ कि मेरी बेटी अब शादी लायक हो गयी है जो कोई उससे शादी करना चाहता है वह अब शादी के लिये उसका हाथ मुझसे मॉग सकता है।

पर मेरे पास कोई ढोल नहीं है। मुझे बस तुम्हारा ढोल चाहिये मैं उसे नाच के समय खुद बजा लूँगा।"

सो वह खरदिमाग अपना ढोल ले कर सरदार के पास आया पर इस बात से वह बहुत ज़्यादा खुश नहीं था क्योंकि सरदार ने इस दावत में उसको नहीं बुलाया था जबकि उसके भाइयों को खास तरीके से बुलाया गया था।

उसने सरदार से कहा — "ज़रा सावधान रहियेगा। मेरे ढोल की खाल को कहीं फाड़ मत दीजियेगा क्योंकि मुझे ऐसी खाल फिर

कभी कहीं नहीं मिलेगी। इस खाल में मेरे कीड़े ने मेरी बतख ने मेरी लोमड़ी ने और मेरे भेड़िये ने सहायता की है।"

अगले दिन उसने घर से ढोल ला कर सरदार को दे दिया। पर सरदार ने उसको इतनी ज़ोर से बजाया कि वह खाल तो फट गयी और अब उसमें से कोई आवाज नहीं निकल रही थी।

सरदार ने ढोल के बदले में उसको उसकी मुँहमाँगी रकम देने चाही पर लड़का तो उसके लिये कोई पैसा लेने के लिये तैयार ही नहीं था। उसको तो बस अपना ढोल चाहिये था।

वह तो बस इसी बात पर अड़ा हुआ था — "मुझे मेरा ढोल चाहिये उसमें मेरा कीड़ा बतख लोमड़ी और भेड़िया थे।"

सरदार बोला — "बेटे अब मैं तुम्हारा ढोल कहाँ से लाऊँ वह तो फट गया। वह तो हमेशा के लिये चला गया। उसके बदले में तुम मुझसे और कोई चीज़ माँग लो जो भी तुम्हें पसन्द हो।

क्योंकि तुम वह कीमत नहीं लेना चाहते जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ तुम अपनी कीमत बता दो तो मैं तुम्हें वही दे दूँगा।"

लड़के ने सोचा कि यह तो अपनी किस्मत बनाने का बड़ा अच्छा मौका है अब मैं अपने भाइयों को आश्चर्य में डाल सकता हूँ।

लड़का बोला — "क्योंकि आप मुझे मेरा ढोल नहीं दे सकते तो आप अपनी बेटी की शादी मुझसे कर दें।"

सरदार यह सुन कर बहुत परेशान हुआ पर वह अपनी बात का पक्का था सो उसने अपनी बेटी की शादी खर दिमाग से कर दी।

दोनों की शादी हो गयी। लड़की अपने घर से बहुत सारा पैसा लायी। उस पैसे से वे सब बहुत आराम से खुशी खुशी रहे।

उसके भाई भी यह देख कर आश्चर्य में पड़ गये कि उसने खरदिमाग होते हुए भी ऐसा कैसे कर लिया और उस पर बहुत गुस्सा भी बहुत हुए क्योंकि वे अपने उद्देश्य में फेल हो गये थे।

उनकी मॉ ने कहा — "मैंने तुमसे कहा था न कि वह बहुत होशियार लड़का है वह तुम्हें हरा देगा हालॉकि तुम लोग उसको खर दिमाग और बेवकूफ कहते हो। जंगल की परियों ने उसके जन्म के समय यही कहा था।

23 लाल सन्ध्या के आसमान का लड़का[87]

एक समय की बात है कि देश के पश्चिम में बड़े पानी के किनारे[88] एक नौजवान अपनी एक नौजवान पत्नी के साथ रहता था। उनके कोई बच्चा नहीं था। वे लोग टापू पर सबसे अलग किनारे की तरफ रहते थे। नौजवान अपना समय समुद्र से मछलियॉ पकड़ने में या फिर दूर की नदियों से सेमौन[89] मछलियॉ पकड़ने में बिताता था।

इस काम के लिये अक्सर वह घर से कई कई दिनों तक के लिये दूर रहता और उसकी पत्नी घर में बहुत अकेलापन महसूस करती। वह डरती नहीं थी क्योंकि वह बहुत हिम्मत वाली थी पर शाम को नीला सलेटी आसमान और क्योंकि वह किनारे पर रहती थी इसलिये लहरों की आवाज उसे बहुत उदास कर जातीं।

वह रोज ही यह सोचती कि "काश हमारे बच्चे होते। जब मेरा पति काम पर गया होता तो मैं उनके साथ खूब खेलती।"

एक दिन शाम के समय जब उसका पति बाहर गया हुआ था वह अकेली बैठी हुई पानी के उस पार देख रही थी। पति तो मछलियॉ पकड़ने गया हुआ था और वह खुद पानी के किनारे बालू के मैदान में बैठी हुई थी।

---

[87] The Boy of Red Twilight Sky. (Tale No 23) From the book "Canadian Fairy Tales", by Cyrus MacMillan. 1922. Book available at the Web Site : https://fairytalez.com/author/canadian-fairy-tales/

[88] Translated for the words "On the Shores of the Great Waters

[89] Salmon fish

पश्चिम में आसमान कुछ पीला रंग लिये भूरा सा हो गया था। उस देश में वहॉ हर समय बहुत ही उदास रहता था। जब सूरज डूब गया तब कोई रोशनी नहीं रह गयी थी। उसने अकेलेपन से ऊब कर कहा "काश मेरे साथ के लिये मेरे बच्चे होते।"

तभी उसने देखा कि एक किंगफिशर चिड़िया अपने बच्चों के साथ पानी में मछलियों के लिये कूद लगा रही थी। वह बोली "ओ सफेद कौलर वाली मेरी इच्छा है कि हमारे भी तेरे जैसे बच्चे हों।"

किंगफिशर बोली "सीपियों में देखो सीपियों में देखो।" और वहॉ से उड़ गयी।

अगले दिन वह लड़की फिर से बालू पर बैठी और पश्चिम के भूरे सलेटी बादलों की तरफ देखने लगी। उस शाम एक पानी वाली चिड़िया[90] अपने बच्चों के साथ समुद्र की लहरों पर तैरती चली आ रही थी।

उसको उसके बच्चों के साथ तैरते देख कर वह लड़की बोली — "ओ सफेद पानी वाली चिड़िया। मेरी बड़ी इच्छा थी कि हमारे साथ के लिये हमारे भी तुम्हारे जैसे बच्चे हों।"

उस चिड़िया ने भी यही कहा "सीपियों में देखो सीपियों में देखो।" और वहॉ से चली गयी।

[90] Translated for the word "Sea Gull". See its picture above.

लड़की को किंगफिशर और पानी वाली चिड़िया की कही गयी बातों में इतना एकसापन देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। वह वहॉ बैठी यह सोच ही रही थी कि कहीं पास में से ही उसको रोने की आवाज सुनायी पड़ी। वह आवाज उसके पीछे रेत के एक टीले के पास से आ रही थी।

वह उठ कर उस रेत के टीले के पास गयी तो उसने देखा कि वह रोने की अवाज तो एक बहुत बड़ी समुद्र की सीपी के अन्दर से आ रही थी। उसने वह सीपी उठा ली और उसको खोला तो लो उसमें तो एक बहुत ही छोटा सा लड़का बैठा था। वह तो अपनी इस खोज पर तो वह फूली न समायी और लड़के को ले कर वह घर चली गयी और उसको बड़ा करने लगी।

जब उसका पति समुद्र से घर वापस आया और उसने घर में बच्चा देखा तो उसको भी उसे देख कर बहुत खुशी हुई। उसको भी लगने लगा कि वे लोग अब अकेले नहीं रहेंगे।

बच्चा जल्दी जल्दी बढ़ने लगा। जल्दी ही वह चलने लगा और फिर वह वहीं पहुॅच जाता जहॉ उसकी इच्छा होती।

एक दिन उसकी मॉ एक तॉबे का ब्रेसलैट पहन रही थी कि बच्चे ने कहा — "मुझे तुम्हारी बॉह पर जो तॉबा है उसकी बनी हुई एक कमान चाहिये।"

उसको खुश करने के लिये उसने अपने ब्रेसलैट में से उसे तॉबे की एक छोटी सी कमान बनवा दी और दो तीर बनवा दिये। बस

वह तो बहुत खुश हो गया। वह तो तुरन्त ही उसको ले कर शिकार के लिये निकल गया।

अब वह रोज ही कोई न कोई शिकार ले कर घर लौटने लगा। वह घर छोटी छोटी बतख लाता समुदी चिड़िया लाता और खाने के लिये अपनी मॉ को दे देता।

जैसे जैसे वह बड़ा होने लगा उसके माता पिता ने देखा कि उसके चहरे का रंग उसके तॉबे की कमान से भी ज़्यादा सुनहरा होने लगा है। अब वह जहॉ भी जाता एक अजीब सी रोशनी फैला देता।

जब वह समुद्र के किनारे बालू वाले मैदान पर बैठता और पश्चिम की तरफ देखता तब मौसम बिल्कुल शान्त रहता और पानी के ऊपर अजीब अजीब सी नारंगी रंग की किरनें नाचती रहतीं।

उसके माता पिता को उसकी यह ताकत देख कर बहुत आश्चर्य होता। बल्कि जब वे उसकी इस ताकत के बारे में बात करते तो वह चुप ही रहता।

एक बार ऐसा हुआ कि बहुत ज़ोर की हवा चली तो लड़के का पिता मछली पकड़ने नहीं जा सका क्योंकि समुद्र में तूफान सा आ रहा था। वह बहुत दिनों तक किनारे पर रहा क्योंकि समुद्र जो अक्सर शान्त रहता इस समय बहुत ही उथल पुथल हो रहा था।

उसकी लहरें किनारे पर भी बहुत ऊँची ऊँची आ रही थीं। लोग समुद्र के शान्त होने का इन्तजार कर रहे थे। उनको खाने के लिये मछली चाहिये थी।

तो एक दिन लड़के ने कहा — "मैं आपके साथ बाहर जाऊँगा क्योंकि मैं तूफान की आत्मा को काबू में कर सकता हूँ।"

लड़के का पिता ऐसे तूफान में जाना नहीं चाहता था पर फिर भी लड़के ने उसको जिद कर के मना लिया। वे दोनों बहुत दूर नहीं गये थे कि उनको तूफान की आत्मा मिली जो दक्षिण पश्चिम से जहाँ बड़ी हवाऐं रहती थीं पागल सी चली आ रही थी।

उसने उनकी नाव को काबू में करने की कोशिश की पर वह उस पर काबू न पा सकी। क्योंकि वह लड़का नाव चला रहा था और उसके चारों तरफ समुद्र शान्त था।

यह देख कर तूफान की आत्मा ने अपने भतीजे "काले बादल" को अपनी सहायता के लिये बुलाया। उन लोगों ने दक्षिण पश्चिम की तरफ देखा तो "काला बादल" अपने चाचा की सहायता के लिये चला आ रहा था।

लड़के का पिता यह देख कर घबरा गया पर बेटे ने उसको तसल्ली दी कि उसको डरने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि वह मेरे बराबर में कहीं नहीं बैठता। सो वे दोनों मिले पर "काला बादल" उसको देखते ही वहाँ से भाग गया। यह देख कर तूफान की आत्मा ने "समुद्र के कोहरे" को अपनी सहायता के लिये बुलाया।

उसने सोचा कि यह कोहरा समुद्र के ऊपर छा जायेगा और उन लोगों की नाव उसमें खो जायेगी क्योंकि उन लोगों को धरती का किनारा कहीं दिखायी ही नहीं देगा।

जब लड़के के पिता ने समुद्र का कोहरा सारे में छाते हुए देखा तो उसकी तो सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी। क्योंकि समुद्र के सारे दुश्मनों मे से वह अपने इसी दुश्मन से बहुत डरता था। पर उसके बेटे ने फिर से तसल्ली दी कि वह जब तक उसके साथ है उसको डरने की बिल्कुल जरूरत नहीं है।

सो समुद्र के कोहरे ने लड़के को मुस्कुराते हुए नाव में बैठे देखा तो वह उतनी ही तेज़ी से वापस चला गया जितनी तेज़ी से वह वहॉ आया था। यह देख कर तूफान की आत्मा वहॉ से कहीं और चली गयी। और इस तरह से उस दिन मछली पकड़ने वाली जगह में फिर कोई खतरा नहीं रहा।

लड़का और उसके पिता दोनों ही मछली पकड़ने की जगह सुरक्षित रूप से पहुॅच गये। वहॉ पहुॅच कर लड़के ने पिता को एक जादू का गीत बताया जिसे वे बहुत सारी मछलियों को अपने जाल की तरफ आकर्षित कर सके।

शाम से पहले पहले ही उनकी नाव बहुत सारी मोटी मोटी मछलियों से भर गयी थी। वे घर की तरफ चल दिये। रास्ते में पिता ने बेटे से उसकी ताकत का राज़ पूछा पर लड़के ने जवाब दिया कि यह बताने का अभी समय नहीं आया था।

अगले दिन लड़के ने बहुत सारी चिड़ियें मारीं। उसने उनको साफ किया और उनकी खाल सुखा ली। फिर उसने एक चिड़िया के की खाल पहनी और हवा में पानी के ऊपर उड़ गया। उसके पंखों के नीचे समुद्र का पानी उसके पंखों के रंग की तरह भूरा दिखायी दे रहा था।

उसके बाद वह नीचे आया और ब्लू जे चिड़िया की खाल की पोशाक पहनी और फिर हवा में उड़ गया। अब समुद्र के पानी का रंग बदल गया था। अब वह उस नीली चिड़िया के नीले पंखों के रंग की तरह हो गया था।

वह फिर किनारे पर आया तो अबकी बार उसने रोबिन की खाल पहन ली थी सो अब उसकी छाती का रंग उसके चहरे के रंग की तरह सुनहरा हो गया था। समुद्र के पानी का रंग भी वैसे ही सुनहरा हो गया था। पश्चिम में आसमान का रंग भी सुनहरा लाल हो गया था।

लड़का फिर उड़ कर वापस समुद्र के किनारे आया तो उसने अपने माता पिता से कहा — "अब मेरा आपको छोड़ने का समय आ गया है। मैं सूरज का बेटा हूँ। कल मेरी ताकत का इम्तिहान लिया गया था और उसमें कोई कमी नहीं पायी गयी।

इसलिये अब मुझे यहाँ से जाना चाहिये। अब मैं यहाँ और ज़्यादा नहीं ठहर सकता। अब मैं आपको और देख भी नहीं पाऊँगा

पर शाम को मैं आपको सन्ध्या के समय पश्चिम की तरफ दिखायी दूँगा। जब आसमान और समुद्र के पानी का रंग आपको मेरे चेहरे के रंग जैसा दिखायी दे तो उसके अगले दिन न तो कोई तेज़ हवा होगी और न तूफान।

हालॅकि मैं यहॉ से जा रहा हूँ पर मैं आपको एक जादुई ताकत दे कर जा रहा हूँ। जब भी आपको मेरी जरूरत हो तो मुझे कोई सफेद चीज़ भेंट करना मैं समझ जाऊँगा कि आपको मेरी जरूरत है। मैं यह बात पश्चिम में अपने घर में बैठे बैठे ही जान सकता हूँ। फिर उसने अपनी मॉ को एक बहुत बढ़िया पोशाक दी।

उसके बाद उसने अपने माता पिता से विदा ली और उनको दुखी छोड़ कर पश्चिम की तरफ चला गया।

पर इसकी मॉ के पास अभी भी उसकी ताकत जो उसने उसको दी थी उसका एक हिस्सा बाकी है। जब भी वह रेत के बने टीलों के बीच में बैठती है और अपनी उस बढ़िया पोशाक को ढीला कर देती है तो जमीन से हवाऐं तेज़ बहने लगती हैं। समुद्र में तूफान सा आने लगता है और यह उतना ही ज़्यादा होता है जितनी ज़्यादा वह अपनी पोशाक ढीली करती है।

पर जब पतझड़ खत्म होता है और ठंडा कोहरा समुद्र से आता है शामें ठंडी होती हैं आसमान भूरा और उदास हो जाता है तब उसे अपने बेटे की बात याद आती है तो वह उसे छोटे छोटे सफेद पंख देती है जो चिड़ियों की छातियों से लिये हुए होते हैं। वह उनको

हवा में उड़ा देती है। जब वे नीचे गिरते हैं तो लगता है जैसे बर्फ गिर रही हो और फिर हवा में उड़ जाते हैं।

वे पंख पश्चिम की तरफ उस लड़के से यह कहने के लिये चले जाते हैं कि दुनियॉ बहुत उदास है और वह तुम्हारा सुनहरा चेहरा देखना चाहती है।

तब वह शाम को दुनियॉ के सामने आता है और सूरज के छिप जाने के बाद तक इधर उधर घूमता रहता है जब तक सन्ध्या का आसमान लाल रहता है और समुद्र पर उसकी सुनहरी रोशनी पड़ती रहती है।

इससे लोगों को यह पता चल जाता है कि अगले दिन कोई हवा नहीं होगी सब कुछ शान्त होगा जैसा कि उसने उन सबसे वायदा किया था।

24 एक लड़का और एक ड्रैगन[91]

एक बार बहुत पहले की बात है कि गोरे लोगों के कैनेडा आने से भी पहले समुद्र के किनारे एक लड़का अपने माता पिता के साथ रहता था।

उसके कोई भाई या बहिन नहीं था। वह अपने मॉ बाप का अकेला ही बच्चा था सो अक्सर ही वह अकेला और उदास रहा करता था। उसके मन में हमेशा कहीं बाहर जाने की और किसी के साथ की इच्छा रहती थी।

एक दिन उसने घर छोड़ने का निश्चय कर लिया कि उसने सुना कि शहर में एक ड्रैगन आया हुआ है जो जिधर जाता है वहीं बबाल मचा देता है। सारे देश में एक बड़ा डरावना डर बैठा हुआ था क्योंकि वह स्त्रियों और बच्चों को उठा कर ले जाता था और एक एक कर के खा जाता था।

और इससे भी डरावनी बात यह थी कि अक्सर वह एक आकर्षक आदमी की शक्ल ले लेता था और आदमियों के बीच आ जाता और इससे पहले कि उन लोगों को पता चले कि वह ड्रैगन आदमी से बात कर हे हैं तो वह अपनी बदमाशी के नीच प्लान काम में लाता रहता।

---

[91] The Boy and the Dragon . (Tale No 24) From the book "Canadian Fairy Tales", by Cyrus MacMillan. 1922. Book available at the Web Site : https://fairytalez.com/author/canadian-fairy-tales/

जाति के सरदार ने जाति के सारे लोगों को बुलाया और कहा कि कोई उसको पकड़ ले पर किसी भी योद्धा ने इस काम की हामी नहीं भरी। वे इतने ताकतवर तो थे कि वे आदमियों से लड़ लेते पर ड्रैगन से लड़ना उनके बस की बात नहीं थी।

जब लड़के ने यह भयानक कहानी सुनी और लोगों के चेहरों पर इतना डर देखा तो उसने सोचा कि मेरे लिये कोई बड़ा काम करने का यह बड़ा अच्छा मौका है। क्योंकि उसको लगा कि उसके पास बहुत ताकत है – आदमियों से भी ज़्यादा।

सो उसने अपने माता पिता से विदा ली और चल दिया। वह सारे दिन जंगलों से हो कर चलता रहा। चलते चलते शाम को वह एक खुली जगह के बीच में एक पहाड़ी के पास आ गया। उसने सोचा "मैं इस पहाड़ी पर चढ़ता हूँ। शायद यहाँ से मैं पूरे देश को देख सकूँ।"

यह सोच कर वह धीरे धीरे ऊपर चल दिया। ऊपर पहुँच कर वह चारों तरफ देखने लगा। वह कई मील तक देख सकता था। वह राज्य देख ही रहा था कि उसके बराबर में एक आदमी आ कर खड़ा हो गया।

वह बहुत खुश खुश आदमी था सो वे दोनों कुछ देर तक बात करते रहे। हालाँकि वह ड्रैगन के बारे में सोच कर सावधान था फिर भी उसने सोचा कि इतनी अच्छी तरह से बात करने वाला ड्रैगन नहीं

हो सकता। सोचते सोचते वह अपने ही इस शक के ऊपर हॅस पड़ा और इस विचार को दिमाग से निकाल दिया।

अजनबी ने पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो?"

लड़के ने जवाब दिया — "मैं बहुत दूर जा रहा हूॅ। मैं जंगल में कुछ करने के विचार से बाहर निकला था क्योंकि मुझे समुद्र के किनारे पर बहुत अकेला लग रहा था।" पर उसने उसको अपना असली उद्देश्य नहीं बताया।

अजनबी बोला — "आज की रात तुम मेरे घर ठहर सकते हो। यहॉ से पास में ही मेरा आरामदेह घर है। मैं वहॉ तुमको खाना भी खिलाऊॅगा।"

लड़का बहुत भूखा था और दिन भर का थका था सो वह उस आदमी के घर तक चला गया। जब वे दोनों घर पहुॅचे तो वह लड़का दरवाजे के बाहर ही हड्डियों का ढेर देख कर भौंचक्का रह गया। पर उसने अपना डर दिखाया नहीं और न ही उसने उस भयानक दृश्य पर कुछ कहा।

घर के अन्दर एक बहुत ही बूढ़ी स्त्री बैठी हुई थी जो एक बर्तन की देखभाल कर रही थी। वह उस बर्तन में रखी चीज़ को अपने हाथ में लिये एक डंडे से चला रही थी। लड़के ने देखा कि वह उसमें मॉस पका रही थी।

जब उसने उसके सामने वह पका हुआ मॉस चखने के लिये रखा तो उसने वह मॉस खाने से मना कर दिया क्योंकि उसको लगा

कि शायद वह यह मॉस चख भी नहीं पायेगा। उसने कहा कि वह मक्का खानी पसन्द करेगा। सो उस बुढ़िया ने उसके खाने के लिये कुछ मक्का भून दी जो उसने पेट भर कर खायी।

जब उन सबने खाना खा लिया तो आदमी लकड़ियॉ इकट्ठी करने चला गया और लड़का बुढ़िया के पास बातें करने के लिये बैठ गया।

बुढ़िया बोली — "बेटा तुम अभी बहुत सुन्दर हो बहुत नौजवान हो और सीधे हो। जितने भी लोग इस जगह मैंने देखे हैं तुम उन सबमें ज़्यादा सुन्दर हो। इस वजह से मैं तुम पर रहम खा कर तुम्हें बताती हूॅ कि तुम खतरे में हो।

जिस आदमी से तुम जंगल में मिले थे जिस आदमी के साथ तुमने आज खाना खाया था वह और कोई नहीं बल्कि ड्रैगन आदमी है जिसके बारे में तुमने सुना भी होगा। इसको सामान्य लड़ाई से नहीं मारा जा सकता। और अगर तुम उसको ऐसे ही मारने की कोशिश भी करोगे तो यह तुम्हारी बेवकूफी होगी।

अगर तुम यहॉ रहोगे तो वह कल तुमको वह मारेगा। इसलिये तुम यहॉ से भाग जाओ। लो तुम ये जूते ले लो जो मैं तुम्हें दे रही हूॅ। कल सुबह जब तुम सो कर उठो तो ये जूते पहन लेना। इनको पहन कर तुम इनकी ताकत से एक ही कदम में उस सामने वाली पहाड़ी पर पहुॅच जाओगे।

वहॉ पहुॅच कर यह बिर्च की छाल जिसके पीछे एक तस्वीर बनी हुई है एक आदमी को देना जो तुम्हें वहॉ मिलेगा। वह तुम्हें बतायेगा कि तुम्हें आगे क्या करना है। पर यह याद रखना कि तुम चाहे कितनी भी दूर चले जाओ ड्रैगन शाम तक तुम्हें पकड़ ही लेगा।

नौजवान ने उससे जूते लिये बिर्च की छाल ली जिस पर एक जादुई निशान बना हुआ था और बोला — "आपने जैसा कहा है मैं वैसा ही करूॅगा।"

बुढ़िया बोली — "एक शर्त और है। अपने जाने से पहले सुबह मुझे मार जाना और यह पोशाक मेरे शरीर पर डाल देना। इससे ड्रैगन ने मेरे ऊपर जो जादू डाला है वह टूट जायेगा। जब वह मुझे छोड़ कर चला जायेगा तो अपनी ताकत से अपने आप ही उठ जाऊॅगी।"

नौजवान वहॉ से उठ कर सोने चला गया और ड्रैगन आदमी भी उसके पास रात भर सोता रहा ताकि वह वहॉ से कहीं भाग न जाये। अगली सुबह जब ड्रैगन नदी से पानी लाने के लिये कुछ दूर गया तो लड़के ने बुढ़िया की बात तुरन्त ही मानी जो उसने उससे रात को कही थी।

सवसे पहले तो उसने बुढ़िया को मारा और फिर उसको एक चमकीली पोशाक से ढक दिया। क्योंकि उसको मालूम था कि जैसे

ही ड्रैगन आदमी उसको वहॉ से छोड़ कर जायेगा वह ज़िन्दा हो जायेगी।

फिर उसने अपने जादू वाले जूते पहने और एक ही छलॉग में दूर वाली पहाड़ी पर पहुॅच गया। यहॉ उसको एक आदमी मिल गया। उसने बिर्च की छाल का टुकड़ा जिसके ऊपर जादुई निशान बना हुआ था उसको दे दिया।

आदमी ने उसे बड़ी बारीकी से देखा और मुस्कुराते हुए बोला — "अच्छा तो वह तुम हो जिसका मुझे यहॉ इन्तजार करने के लिये कहा गया हूॅ। यह अच्छा है तुम एक आकर्षक नौजवान हो।"

उस आदमी ने उसको जो वह जूते पहने हुए था उसके बदले एक और जोड़ी जूते दिये। साथ में उसको बिर्च की छाल का एक और टुकड़ा दिया जिस पर एक और जादुई निशान बना हुआ था।

फिर उसने दूर एक पहाड़ी की तरफ इशारा किया जो आसमान में नीले रंग की खड़ी थी और कहा — "एक ही छलॉग में तुम उस पहाड़ी पर पहुॅच जाओगे। वहॉ जा कर तुम्हें एक और आदमी मिलेगा यह छाल तुम उसको दे देना सब ठीक हो जायेगा।"

लड़के ने अपने वाले जूते उतार कर ये दूसरे वाले जूते पहन लिये और एक ही छलॉग में वह उस दूसरी नीली पहाड़ी पर पहुॅच गया। वहॉ पहुॅच कर उसको एक और आदमी मिल गया जिसको उसने वह बिर्च की छाल दे दी।

उस आदमी ने कहा — "लो यह एक मैपिल का पत्ता लो जिस पर एक जादुई निशान बना हुआ है और अब तुम फलॉ फलॉ जगह चले जाओ जहॉ तुमको आखिरी निर्देश दिये जायेंगे।"

उसने वही कहा जो उससे कहा गया था। जब वह उस जगह पहुँचा तो उसको वहॉ एक बूढ़ा मिला तो उसने उसको मैपिल का एक पत्ता दिया तो उसने कहा — "देखो नीचे यह एक नदी बह रही है तुम वहॉ चले जाओ और उसे पार कर लो। डरना नहीं तुम उसको ऐसे पार कर लोगे जैसे किसी सूखी जमीन पर चल रहे हो। पर ध्यान रखना कि पानी तरफ मत देखना।

यह बिर्च की छाल का एक टुकड़ा लो। इसे रख लो जो तुम्हें जिस किसी रूप में तुम चाहोगे उसी रूप में तुम्हें बदल देगा और इस तरह से तुमको किसी भी मुसीबत से बचायेगा।"

लड़के ने वह बिर्च की छाल का टुकड़ा लिया और जल्दी ही अपने आपको नदी के दूसरे किनारे पर पाया। कुछ देर तक वह उस नदी के सहारे सहारे चलता रहा तो अपने आपको एक झील के पास पाया।

जैसे ही वह अपने सोने के लिये वह एक गर्म जगह ढूँढ रहा था कि अचानक ही उसने अपने सामने ड्रैगन आदमी को खड़ा हुआ पाया। वह इस समय आदमी की शक्ल में नहीं था बल्कि ड्रैगन की शक्ल में था। वह पेड़ों के पीछे छिपा हुआ था।

बुढ़िया की बात तो सच ही निकली क्योंकि उसको दुश्मन ने उसको शाम से पहले पहले ही पकड़ लिया था। उसके पास खोने के लिये कोई समय नहीं था जो कुछ करना था अब उसे जल्दी ही करना था।

लड़के ने अपनी जादुई छाल हिलायी और वह एक बहुत छोटी सी लाल पंखों वाली मछली बन कर झील में तैरने लगा।

जब ड्रैगन आदमी ने छोटी मछली को देखा तो वह चिल्लाया — "ओ लाल पंखों वाली छोटी मछली। क्या तूने उस नौजवान को कहीं देखा है जिसे मैं ढूँढ रहा हूँ।"

छोटी लाल मछली बोली — "नहीं जनाब नहीं। मैंने तो किसी को नहीं देखा। मैं तो बहुत देर से सो रही थी पर अगर वह इस रास्ते से गुजरेगा तो मैं आपको जरूर बताऊँगी।" और वह बहुत तेज़ी से झील में और दूर खिसक गयी।

ड्रैगन आदमी झील के किनारे घूमता रहा और नौजवान झील में से उसे देखता रहा। ड्रैगन आदमी को घूमते घूमते रास्ते में एक मेंढक मिला। उसने मेंढक से भी पूछा — "ओ मेंढक। क्या तूने उस नौजवान को कहीं देखा है जिसे मैं ढूँढ रहा हूँ।"

मेंढक बोला — "मैं तो अपना काम करता हूँ।" और वह पास की झाड़ियों में घुस गया।

उसके बाद ड्रैगन आदमी ने एक बहुत बड़ी मछली पानी सतह से बाहर मुँह निकालती देखी जो कीड़े मकोड़े ढूँढ रही थी। उसने

उससे भी यही पूछा तो वह बोली — "हॉ हॉ। तुम अभी तो उससे बात कर रहे थे।"

कह कर वह मन ही मन हॅसी और फिर पानी में डुबकी मार गयी। ड्रैगन आदमी उस मेंढक की खोज में फिर इधर उधर घूमता रहा पर वह मेंढक भी उसको कहीं दिखायी नहीं दिया। कुछ दूर जा कर उसको एक चूहा मिला।

वह नौजवान के न मिलने पर बहुत गुस्सा था सो उसने उसी गुस्से में उस चूहे से भी पूछा कि क्या उसने उस नौजवान को कहीं देखा है जिसे वह ढूॅढ रहा है। चूहा बोला "नहीं।"

पर अब तक ड्रैगन इतना थक चुका था कि वह बोला "तू ही है वह नौजवान।"

यह सुन कर चूहा तो बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा — "नहीं नहीं। मैं नहीं हूॅ। जिस लड़के को आप ढूॅढ रहे हैं वह तो यहॉ से अभी अभी गुजरा है। वह मेरे घर की छत पर पैर रख कर यहॉ से गया है। उसने मेरे मकान की छत भी तोड़ डाली थी।"

ड्रैगन आदमी तो फिर धोखा खा गया था। वह फिर चल दिया और देखा कि एक बूढ़ा कछुआ पानी में छपाके मार रहा है। उसने कछुए से उसको खुश करने के इरादे से कहा — "तुम बहुत बड़े और अक्लमन्द हो। तुमने उस नौजवान को जरूर देखा होगा जिसे मैं ढूॅढ रहा हूॅ।"

कछुआ बोला — "हॉ मैंने देखा है। वह उधर नीचे की तरफ है। तुम यह नदी पार कर दूसरे किनारे चले जाओ वह तुम्हें वहीं मिल जायेगा। पर उससे बच के रहना क्योंकि जब तुम उसे देखोगे और अगर तुम उसे पहचानेगे नहीं तो वह तुम्हें मार देगा।"

कछुए को पता था कि अब इस ड्रैगन का अन्त आ गया है।

ड्रैगन आदमी झील के किनारे किनारे घूमते हुए नदी के पास आया। फिर उसने छिप कर अपने आपको एक सॉप में बदल लिया। फिर वह नदी पार करने की कोशिश करने लगा।

नौजवान अभी भी मछली के ही रूप में था और अपनी जादुई छाल का जादू इस्तेमाल कर सकता था। वह नदी के बीच में एक गोले में घूमे जा रहा था। उसके घूमने से एक बहुत बड़ा भॅवर बन रहा था पर वह ऊपर से दिखायी नहीं देता था।

जैसे ही सॉप उधर पहुॅचा तो उसको तो साफ पानी के अलावा वहॉ और कुछ दिखायी नहीं दिया। वह अपने दुश्मन को पहचानने में नाकामयाब रहा। और जैसा कि कछुए ने कहा था उसके दुश्मन ने उसे मार दिया। वह भॅवर में फॅस गया और फिर ऊपर नहीं आ सका।

नौजवान उसका शरीर ले कर ऊपर आ गया और उसका सिर काट लिया। अपने आपको अपनी असली शक्ल में बदला और

ड्रैगन आदमी के घर यह देखने के लिये पहुँचा कि बुढ़िया के क्या हाल हैं। पर वह तो अपनी चमकीली पोशाक के साथ वहाँ से गायब थी और घर खाली पड़ा था।

फिर वह अपने घर वापस चला गया और बताया कि वह क्या कर के आया था।

सरदार ने उसको उसकी बहादुरी के लिये बहुत सारे इनाम दिये। उसके बाद उस देश में फिर कभी किसी ड्रैगन ने किसी को परेशान नहीं किया।

पर उस दिन के बाद से लोग सॉप परिवार से नफरत करने लगे क्योंकि उसने ड्रैगन आदमी की शक्ल ले ली थी। इसी लिये आज तक अगर कोई सॉप किसी इन्डियन को रास्ते में भी मिल जाये तो वह उसे ज़िन्दा नहीं छोड़ता।

25 बड़े सिर और बड़ी ऑखों वाला उल्लू[92]

यह बहुत पुरानी बात है जब ग्लूसकैप[93] पूर्वीय कैनेडा में रहने वाले इन्डियन्स का राजा था और जब सारे जानवर उसके लिये काम करते थे और आपस में आदमियों की तरह बात करते थे।

उस समय भेड़िया खरगोश का बहुत बड़ा दुश्मन था। हालॉकि ऊपर से वे दोनों दोस्त दिखायी देते थे पर दोनों एक दूसरे से डरते थे। दोनों एक दूसरे पर बदमाशी का शक करते थे।

खरगोश अपने काम में बहुत ईमानदार था। वह जंगल के गाइड का काम करता था जो लोगों को दूर दूर की जगह दिखाने के लिये ले जाता था। पर साथ ही साथ वह चालाक भी बहुत था। उसे जो कोई भी मिलता वह उसके साथ चाल खेलने से नहीं चूकता।

और सबसे ज़्यादा आनन्द तो उसे भेड़िये को चिढ़ाने में आता क्योंकि उसके बेरहम तरीके उसे बिल्कुल नापसन्द थे। और वह हमेशा ही उससे जीत जाता।

खरगोश और भेड़िया कैनेडा के जंगलों में इत्तफाक से पास पास ही रहते थे। उनसे कुछ दूरी पर एक विधवा स्त्री रहती थी। उसके

---

[92] Owl With Great Head and Eyes. (Tale No 25) From the book “Canadian Fairy Tales”, by Cyrus MacMillan. 1922. Book available at the Web Site : https://fairytalez.com/author/canadian-fairy-tales/

[93] Glooscap – the King of Indian tribes in Canada

एक बेटी थी जो बहुत सुन्दर थी। उसके बाल इतने काले थे जितने कि रैवन चिड़िया[94] के पंख और उसकी ऑखें ऐसी थीं जैसे गहरे पानी का अँधेरा।

अब हुआ क्या कि खरगोश और भेड़िये दोनों को उस लड़की से प्यार हो गया। दोनों ही इस कोशिश में लग गये कि वह उसके साथ शादी कर ले। खरगोश ने उसका प्यार जीतने की बहुत कोशिश की।

जब भी वह उसके घर जाता तो वह हमेशा अपना मुलायम कत्थई कोट पहन कर जाता। गले में एक छल्ला पहन कर जाता और पैरों में घुँघरू पहन कर जाता। वह बाँसुरी बहुत अच्छी बजाता थो सो वह बाँसुरी पर हमेशा ही कोई न कोई धुन निकालता रहता ताकि वह उसे आकर्षित कर सके।

उसने अपने फटे हुए होठ छिपाने के लिये अपनी मूँछों के बाल बढ़ाने शुरू कर दिये थे पर इस बात को करने से उसे ज़्यादा सफलता नहीं मिली क्योंकि उसकी मूछें कभी घनी हुई ही नहीं। अभी तक भी उसकी बहुत ही पतली मूँछें हैं।

खरगोश अपने को सजाने सँवारने में कितना भी समय क्यों न लगाता पर वह उसकी तरफ देखती भी नहीं। जबकि भेड़िये को वह बहुत प्यार करती लगती।

---

[94] Raven is crow-like bird and is very black. See its picture above.

वह उसके पतले दुबले छरहरे शरीर को और उसके शर्मीले व्यवहार को पसन्द करती थी। यह देख कर बेचारा खरगोश बहुत दुखी होता।

एक दिन वसन्त के मौसम में खरगोश को वह लड़की और उसकी मॉ जंगल की घास में से मे के फूल इकट्ठे करती मिल गयीं। वे आपस में बातें भी करती जा रही थीं। खरगोश उनकी बातें सुनने के लिये उनके पास तक चला गया।

उसने लड़की की मॉ को कहते सुना — "मुझे खरगोश खाने में अच्छा नहीं लगता। तुम भेड़िये को हॉ कर दो। मुझे वह अच्छा लगता है। तुमको उसी से शादी करनी चाहिये। लोगों का कहना है कि वह एक अच्छा शिकारी भी है। अगर तुम उससे शादी कर लेगी तो हमें खाने की कभी कमी नहीं रहेगी।"

खरगोश ने जब यह सुना तो वह तो बहुत दुखी हो गया। उसने तुरन्त ही यह निश्चय कर लिया कि वह भेड़िये को इस लड़की से कभी शादी नहीं करने देगा। हर सूरत में वह उसको इस लड़की से बचा कर रखेगा।

उस रात वह लड़की के घर गया। वहॉ जा कर उसने भेड़िये के बारे में उलटी सुलटी बातें कहनी शुरू कर दीं। उसने कहा — "यह भेड़िया कोई शिकारी विकारी नहीं है। वह तो कोई शिकार पकड़ ही नहीं सकता क्योंकि वह तो बहुत ही आलसी है।

उसको भूख से न मरने देने के लिये मुझे ही उसे खिलाना पड़ता है। वह जानवर तो केवल एक बोझा ले जाने वाल जानवर है। जब मैं कहीं दूर जगह जाता हूँ तो मैं तो हमेशा ही उसको अपनी सवारी के लिये इस्तेमाल करता हूँ क्योंकि वह किसी और काम के लायक तो है ही नहीं।"

यह सुन कर लड़की की माँ को बहुत आश्चर्य हुआ। वह तो इस खबर से चौंक गयी क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि उसकी बेटी किसी बेकार के आदमी से शादी करे। पर वह यह कैसे जाने कि खरगोश सच बोल रहा था या नहीं, क्योंकि उसने सुना था कि खरगोश झूठ बहुत बोलता है।

अब वह यह कैसे जाने कि खरगोश सच बोल रहा था सो यह जाँचने के लिये उसने एक तरकीब सोची। उसने तुरन्त ही खरगोश से कहा — "अगर तुम हमारे सामने उसके ऊपर सवारी कर के हमें दिखा दो तो मैं तुम्हारा विश्वास कर लूँगी। वह मेरी बेटी से शादी नहीं कर पायेगा बल्कि मैं अपनी बेटी की शादी तुमसे कर दूँगी।"

खरगोश यह सुन कर खुशी खुशी घर वापस आ गया। वह अपनी इस चाल पर बहुत खुश था।

अगले दिन वह इसी उद्देश्य से भेड़िये से मिलने जंगल गया कि वह उस पर सवारी करते हुए लड़की की माँ के घर जायेगा। वहाँ जा कर वह भेड़िये से बोला — "चलो आज हम लोग साथ साथ उस विधवा की लड़की से मिलने के लिये चलते हैं।"

भेड़िया तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया। असल में तो वह उस लड़की से मिलने के लिये हमेशा ही तैयार रहता था।

वे दोनों अभी थोड़ी ही दूर गये होंगे कि खरगोश चिल्लाने लगा और जमीन पर लेट गया। वह आहें भरने लगा और इधर उधर लोटने तड़पने लगा। वह अपना पेट मल रहा था जैसे उसके पेट में बहुत दर्द हो रहा हो।

वह बोला — "भेड़िये भाई मेरे पेट में बहुत ज़ोर का दर्द हो रहा है। मैं अब और आगे नहीं चल सकता। अगर मैं चला तो मैं यकीनन मर जाऊँगा। मैं अब तो तुम्हारे ऊपर सवार हो कर ही जा सकता हूँ।"

भेड़िया तुरन्त ही उसको ले चलने के लिये तैयार हो गया क्योंकि वह उस लड़की से मिलने के लिये बहुत इच्छुक था पर साथ में खरगोश के पेट के दर्द के लिये दुखी भी था।

उधर खरगोश मन ही मन मुस्कुराते हुए भेड़िये की पीठ पर चढ़ गया। भेड़िया भी उसको ले कर दौड़ लिया। खरगोश तो बहुत छोटा सा था सो भड़िये को उसका बोझ पता भी नहीं चल रहा था।

वे अभी थोड़ी दूर गये थे कि खरगोश फिर रोने लगा। वह बोला — "मैं इस तरह से तुम्हारी पीठ पर नहीं बैठ सकता। तुम्हारी नंगी पीठ मुझे चुभ रही है उससे मेरे छाले पड़े जा रहे हैं सो मुझे इसके ऊपर एक गद्दी चाहिये।"

सो उन्होंने रास्ते में से घोड़े पर कसने वाली एक जीन ली और भेड़िये के ऊपर लगा ली।

जल्दी ही खरगोश बोला — "अरे यह तो बड़ा अच्छा है। चलो घोड़ा और सवार का खेल खेलते हैं। तुम मेरा घोड़ा बन जाओ और मैं सवार बन जाता हूँ। बस अब एक लगाम की दोनों पैरों में छल्ला पहनने की और हाथ में एक कोड़ा लेने की जरूरत है।"

भेड़िया खरगोश को खुश करने के लिये और उसका दर्द भुलाने के लिये इस बात पर भी राजी हो गया। उसने रास्ते से इन चीज़ों का इन्तजाम भी कर लिया। अब खरगोश जैसा चाहता था वैसा ही हो गया।

इस तरह से वे दोनों लड़की के घर चले। भेड़िया एक छोटे घोड़े की तरह से चल रहा था और खरगोश खुश खुश एक हाथ में घोड़े की लगाम सँभाले और दूसरे हाथ में कोड़ा लिये उसके ऊपर सवार चल रहा था।

कुछ ही देर में लड़की का घर आ गया। जब वे उसके पास पहुँचे तो खरगोश ने बहुत ज़ोर से शोर मचाया ताकि माँ बेटी यह देखने के लिये घर से बाहर आ जायें कि देखें बाहर क्या हो रहा है। वह चिल्लाया "वाउ वाउ"।

जैसा उसने सोचा था वैसा ही हुआ। उसके चिल्लाते ही माँ बेटी घर से बाहर निकलीं और देख कर आश्चर्य में पड़ गयीं। वहाँ तो

असली में खरगोश भेड़िये को अपने घोड़े की तरह इस्तेमाल कर रहा था। जब वे उनको देख रही थीं तो मन ही मन में मुस्कुराते हुए और भेड़िये को आलसी कहते हुए उसने भेड़िये को बहुत ज़ोर से एक कोड़ा मारा।

कोड़े की मार खा कर भेड़िया उछल पड़ा और लात मारी। वह खरगोश पर उसके इस व्यवहार पर बहुत गुस्सा था पर वह कुछ बोला नहीं। खरगोश उसको थोड़ी दूर और आगे ले गया और एक पेड़ से बॉध कर कहा — "तुम यहीं ठहरो मैं लड़की को यहीं भेजता हूँ।"

यह कह कर वह घर चला गया और लड़की की मॉ से बोला — "अब आपको विश्वास हुआ कि भेड़िया तो केवल बोझ उठाने वाला जानवर है क्योंकि मैं केवल उसके ऊपर चढ़ कर ही तो यहॉ तक आया हूँ।"

और स्त्री ने उसका विश्वास कर लिया। उसने कहा कि वह भेड़िये को कुछ मक्का या घास खाने के लिये दे दे पर खरगोश बोला — "वह मक्का या घास नहीं खाता। वह तो केवल ताजा मॉस ही खाता है।"

क्योंकि वह जानता था कि अगर खाने के लिये उसको मॉस मिल जाता है तो वह सन्तुष्ट हो जायेगा।

सो स्त्री ने उसको थोड़ा सा ताजा मॉस खाने के लिये दिया और उसको देख कर भेड़िया तो बहुत खुश हो गया। वह अपना सारा

गुस्सा भूल गया कोड़े से हुआ दर्द भूल गया। उसको लगा कि अगर इतनी आसानी से खाना मिल जाये तब तो कितना अच्छा है।

स्त्री न खरगोश से वायदा किया कि वह अपनी बेटी की शादी उससे कर देगी। जब रात हो गयी तो खरगोश खुशी खुशी घर चला गया। भेड़िये को वह पेड़ से बॅधा ही छोड़ गया। अॅधेरा इतना ज़्यादा था कि वह खरगोश को घर से जाते देख ही नहीं पाया।

सो वह सोचता रहा कि शायद वह अभी तक अन्दर ही है। वह उसका तारों के निकलने तक इन्तजार करता रहा। इन्तजार करते करते आखिर वह थक गया। उसको भूख भी लग आयी थी। उस वसन्त की रात में उसको ठंड भी बहुत लग रही थी।

उसने अपने दॉतों से अपनी लगाम काटी जिससे वह पेड़ से बॅधा हुआ था और स्त्री के घर गया पर वह स्त्री उसको घर में ही न घुसने दे। उससे मिलने की उसको बिल्कुल ही इच्छा नहीं थी। उसने उसे यह कहते हुए बाहर से ही भगाने की कोशिश की कि वह उससे कतई मिलना नहीं चाहती। उसने उसको बोझा ढोने वाला जानवर भी कहा।

यह सब सुन कर और स्त्री का ऐसा व्यवहार देख कर वह बहुत गुस्सा हो कर अपने घर चला गया। वह जान गया था कि उसके साथ चाल खेली गयी है। उसने कसम खायी कि वह खरगोश से इसका बदला ले कर रहेगा।

अगले दिन खरगोश ने सुना कि जब भेड़िया स्त्री के घर गया तो उसने उसको अपने घर में ही नहीं घुसने दिया बल्कि उसे डॉट कर भगा दिया। इसके अलावा उसको यह भी पता चल गया है कि उसको खरगोश ने धोखा दिया है और भेड़िया उससे बहुत गुस्सा है।

यह जान कर तो वह बहुत डर गया क्योंकि वह भेड़िये के बदले से बहुत डरता था। कई दिनों तक तो वह जंगल में पेड़ों के पीछे छिपा रहा। पर जब उसे भूख लगी तो वह खाने की तलाश में वहॉ से बाहर निकला।

एक दिन वह बन्द गोभी की खोज में एक बागीचे में घुस गया। वहॉ जा कर वह उसे निकालने की कोशिश कर ही रहा था कि उस बागीचे के रखवालों ने उसको यह करते हुए देख लिया।

वे बोले — "ओहो तो यह है वह चोर जो हमारे बन्द गोभी के खेतों में से बन्द गोभी चुराता रहा है। अब हम उसको पकड़ लेते है और उसको सबक सिखाते हैं।"

इससे पहले कि खरगोश सॅभलता वे उसके ऊपर टूट पड़े। क्योंकि वह बहुत भूखा था इसलिये वह उसे बड़े मन से खा रहा था। वह देख ही नहीं पाया कि उसके चारों तरफ क्या हो रहा था। उन लोगों ने उसे पकड़ लिया और एक पेड़ से कस कर बॉध दिया।

इसके बाद वे गर्म पानी लाने चले गये ताकि वे उसे उसकी पीठ पर डाल कर बन्द गोभी की चोरी के लिये सबक सिखा सकें।

जब वे चले गये तो भेड़िया उधर आ निकला। वह भी बहुत भूखा था क्योंकि उसने बहुत दिनों से कुछ खाया नहीं था।

पर जब उसने खरगोश को देखा तो बहुत खुश हो गया क्योंकि उसने सोचा कि अब वह उससे अपने साथ किये गये धोखे का बदला ले सकेगा।

खरगोश ने उसको दूर से ही आते हुए देख लिया था। अबकी बार उसने उसके साथ एक और चाल खेलने की सोची। उसने उसको इस तरह आवाज दी जैसे वह अभी भी उसका दोस्त हो।

"भेड़िये भाई मेरे दोस्त मेरी सहायता करो। लोगों ने मुझसे कहा है कि मैं एक छोटा सा मेमना खाऊँ। सो वे मेरे लिये मेमना लाने चले गये हैं। अब तुम तो जानते हो कि मैं तो मॉस खाता नहीं हूँ मेमना कैसे खाऊँगा। मेरी सहायता करो।"

भेड़िया इतना ज़्यादा भूखा था कि यह सुन कर उसकी सारी सावधानी चली गयी वह खरगोश की सारी चालें भूल गया। मेमना तो उसका बहुत प्यारा खाना था। उसने कहा "मैं सारा मेमना खा सकता हूँ पर कैसे।" कह कर उसने मेमने को खाने का सोचते हुए अपने होठ चाटे।

खरगोश यह देख कर बहुत खुश हुआ कि उसकी चाल काम कर रही थी। उसने कहा — "तुम मुझे खोल दो और मेरी जगह तुम

बैठ जाओ तो तुम वह मेमना खा सकते हो। जल्दी करो वे लोग मेमना ले कर आते ही होंगे।"

भेड़िया भी यह सुन कर बहुत खुश हो गया। उसने तुरन्त ही खरगोश को खोला और बदले में खरगोश ने उसको पेड़ से बॉध दिया। मन मन में हॅसते हुए कि उसने भेड़िये को फिर से बेवकूफ बना दिया वहॉ से जल्दी से भाग गया।

पर वह वहॉ से बिल्कुल नहीं गया वह कुछ दूरी पर जा कर एक पेड़ के नीचे यह देखने के लिये बैठ गया कि वहॉ क्या होता है। जल्दी ही लोग गर्म पानी ले कर वहॉ आ गये। भेड़िये ने उनको आते हुए देखा तो वह बहुत खुश हुआ। उसने सोचा कि उसका खाने वाला मेमना भी उन्हीं के किसी बर्तन में होगा।

उस समय रात हो गयी थी। चॉद निकल आया था। चॉदनी चारों तरफ फैली हुई थी। फिर भी उसके उजाले में लोग साफ साफ नहीं देख पा रहे थे। उन्होंने भेड़िये को खरगोश समझा जिसे वह उस पेड़ से कस कर बॉध कर गये थे।

उन्होंने वह गर्म पानी उसके ऊपर फेंक दिया और एक डंडी से उसे मारा और बोले कि "अब हमने तुम्हें सिखा दिया है कि वसन्त के मौसम की चॉदनी रातों में चोरी करना कितना खतरनाक है।"

भेड़िया ज़ोर से चिल्लाया क्योंकि उसकी पीठ पर छाले पड़ गये थे और सिर बहुत ज़ोर से दर्द कर रहा था।

खरगोश दूर बैठा यह सब सुन रहा था। अपनी इस चाल की कामयाबी पर खुशी के मारे वह तो बस बहुत ही ज़ोर से हिलने लगा।

भेड़िये की आवाज सुन कर उन्होंने भेड़िये को खोल दिया। वह थका हुआ पेड़ों के बीच से हो कर अपने घर चला गया पर अबकी बार उसने फिर से सोचा कि वह खरगोश से उसकी इस बदमाशी का बदला जरूर लेगा।

उसने सोच लिया था कि अबकी बार जैसे ही वह उसको देखेगा वह उसको तुरन्त ही मार देगा। काफी दिनों तक वह अपने दुश्मन को ढूँढता रहा क्योंकि उसको पता चल गया था कि खरगोश ने उसके साथ दोबारा चाल खेली है।

आखिर एक दिन महीने की उजली रात में उसने खरगोश को एक तम्बाकू के खेत में बैठे देखा। वह बड़े मन से तम्बाकू के पत्ते चबा रहा था। खरगोश के मुँह में तम्बाकू भरा हुआ था। पर फिर भी जब उसने भेड़िये की पीठ और सिर को कपड़े की पट्टियों से बँधा देखा तो वह ज़ोर से हँस पड़ा।

जंगल में चाँद चमक रहा था। भेड़िये को खरगोश का कत्थई कोट कभी कभी दिखायी दे जाता था। उसी को देखते हुए वह उसका पीछा करता रहा।

खरगोश ने उसको रास्ते से भटकाने की बहुत कोशिश की पर सब बेकार। भागते भागते वह थक गया। जब वह थक कर

बिल्कुल चूर हो गया तो वह एक पेड़ के खोखले तने में जा कर छिप गया।

उसने सोचा कि वहाँ भेड़िया उसके पास तक नहीं आ पायेगा। उधर भेड़िये ने सोचा कि "अब तो खरगोश मेरे कब्जे में है मैं उसे मार सकता हूँ। लेकिन पहले मैं अपने घर से पेड़ काटने वाली कुल्हाड़ी तो ले आऊँ जिससे मैं उसका सिर काट सकूँगा।"

सो उसने चारों तरफ देखा कि उसको कोई ऐसा मिल जाये जो खरगोश पर निगाह रख सके ताकि खरगोश वहाँ से भाग न सके। आखिर उसे एक पेड़ पर एक उल्लू बैठा नजर आ गया।

उसने उससे कहा — "जब तक मैं लौट कर आता हूँ यहाँ ज़रा इस छेद पर ध्यान रखना। कहीं ऐसा न हो कि यह खरगोश यहाँ से निकल कर भाग जाये।"

सो उल्लू पेड़ की डाली छोड़ कर नीचे छेद के पास आ कर बैठ गया और भेड़िया अपनी कुल्हाड़ी लाने अपने घर चला गया।

पर खरगोश अभी पकड़ा नहीं गया था। उसके पास चालों की कोई कमी नहीं थी। जब भेड़िया चला गया तो उसने उल्लू से कहा — "उल्लू भाई यहाँ आ जाओ देखो मेरा घर कितना गर्म है।"

उल्लू बोला — "पर वहाँ तो बहुत अँधेरा है। मैं वहाँ देख नहीं सकता।"

खरगोश बोला — "ज़रा अपनी ऑखें बड़ी बड़ी खोलो और फिर अपना चेहरा छेद के पास ला कर यहॉ देखने की कोशिश करो।"

उल्लू एक बहुत ही उत्सुक चिड़ा था सो उसने खरगोश की बात मान कर अपनी ऑखें बड़ी बड़ी खोल लीं और अपना चेहरा छेद के पास ले गया।

खरगोश के मुँह में तम्बाकू की पत्तियों का रस अभी भरा हुआ था। सो जैसे ही उल्लू ने अपना चेहरा छेद के पास किया अपने मुँह में भरा तम्बाकू का रस उसने उसकी ऑखों में थूक दिया।

उल्लू की ऑखें बहुत ज़ोर जल उठीं वह ज़ोर से चिल्लाया और अपनी ऑखें मलते हुए पेड़ के आस पास भागने लगा। जब वह ऐसा कर रहा था खरगोश वहॉ से भाग निकला। उल्लू को पता भी नहीं चला कि खरगोश कहॉ गया।

जल्दी ही भेड़िया अपनी तेज़ कुल्हाड़ी ले कर वहॉ वापस आ गया। वह बोलता चला आ रहा था "आज पकड़ में आया है यह खरगोश। आज मैं इसको मार कर ही दम लूँगा।"

उल्लू उसको अपनी दर्द भरी ऑखों के बारे में बताने से डरता था। वे अभी भी बड़ी बड़ी खुली हुई थीं। वह उन्हें बन्द ही नहीं कर पा रहा था।

भेड़िये ने तुरन्त ही वह खोखला पेड़ काट डाला पर खरगोश का कहीं कोई पता नहीं था। भेड़िये को पहले लगा कि उल्लू उसके

साथ कोई चाल खेल रहा है। उसी ने खरगोश को वहाँ से भागने में सहायता की है। पर उल्लू बोला "नहीं मैंने ऐसा नहीं किया।"

वह तो बस अपनी आँखें बड़ी बड़ी किये खोले बैठा था और बेवकूफों की तरह से चारों तरफ देखे जा रहा था। वह दर्द से कराह रहा था और तरह तरह की आवाजें निकाल रहा था।

भेड़िये ने सोचा कि वह उसके ऊपर हँस रहा था और उसका मजाक बना रहा था क्योंकि उसको पता ही नहीं था कि उल्लू क्यों चिल्ला रहा था। गुस्से में भर कर उसने उल्लू के सिर पर कुल्हाड़ी का पिछल हिस्सा दे मारा जिससे उसका सिर सूज गया।

उल्लू और ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा। उसकी बड़ी बड़ी आँखें उसके सूजे हुए सिर पर और ज़्यादा बड़ी लगने लगीं।

भेड़िया फिर अपने रास्ते चला गया। अबकी बार उसने तौबा कर ली कि अब वह खरगोश से कभी कोई सम्बन्ध नहीं रखेगा।

उसी समय से उल्लू रात को "हूट हूट हूट" चिल्लाते रहते हैं क्योंकि उनको अभी भी उस दर्द की याद है। उनकी आँखें अभी भी उतनी ही बड़ी बड़ी हैं और बेवकूफों की तरह से घूरती रहती हैं।

उस तम्बाकू के रस की वजह से जो खरगोश ने उसकी आँखों में फेंक दिया था वह दिन में देख नहीं सकते। उस दिन के बाद खरगोश और भेड़िया एक दूसरे से बचते रहते हैं। वे एक दूसरे के अब दोस्त भी नहीं हैं और अब वे पास पास भी नहीं रहते।

26 बेरहम सौतेली माँ[95]

यह बहुत दिनों पहले की बात है जब ब्लैकफीट इन्डियन्स[96] कैनेडा के घास के मैदानों में रहा करते थे। वहीं एक बड़ी नदी के किनारे एक गरीब इन्डियन भी अपने दो बच्चों, एक लड़का और एक लड़की, के साथ रहता था।

बच्चों की माँ काफी पहले ही चली गयी थी सो उन दोनों बच्चों की देखभाल अब केवल उनका पिता ही करता था। उनके पिता ने सोचा कि बच्चों की देखभाल करना केवल पिता का काम नहीं है सो उसने एक और शादी करने का निश्चय किया।

अपने लिये एक दुलहिन ढूँढने के लिये वह गॉव में इधर उधर गया। वहॉ उसने दूसरी जाति की एक अजीब सी स्त्री से शादी कर ली। जल्दी ही उत्तरी देश में मुसीबत का समय आया और खाना मिलना बहुत मुश्किल हो गया।

काफी दिनों तक परिवार जंगली बैरीज़ और जड़ों पर गुजारा करता रहा। अक्सर ही वे भूखे रह जाते क्योंकि उनके खाने के लिये मॉस नहीं होता था।

अब ऐसा हुआ कि इस आदमी ने जिस स्त्री से शादी की थी यह एक नीच जादूगरनी थी जो बहुत बुरे बुरे काम कर सकती थी। वह

[95] The Cruel Stepmother. (Tale No 26) From the book "Canadian Fairy Tales", by Cyrus MacMillan. 1922. Book available at the Web Site : https://fairytalez.com/author/canadian-fairy-tales/

[96] Blackfeet Indians – a tribe of Indians

अपने सौतेले बच्चों को बिल्कुल भी प्यार नहीं करती थी। वह उनके साथ बड़ी बेरहमी से व्यवहार करती थी।

वह खाने की कमी के लिये बच्चों को ही जिम्मेदार ठहराती थी — "ओ लालची बच्चों। यह तुम्हीं हो जो इतना ज़्यादा खाते हो। तुम्हारी वजह से ही घर में खाने की इतनी कमी रहती है।"

आदमी जब अपनी पत्नी का अपने बच्चों के साथ यह बेरहम व्यवहार देखता तो कभी उसे बहुत दुख होता और कभी उसे बहुत गुस्सा आता पर वह उनके बीच में नहीं बोलता क्योंकि वह यह सोचता था कि घर स्त्री का होता है और उसी को घर देखना चाहिये।

एक रात जब वसन्त का मौसम शुरू ही हुआ था आदमी सोया हुआ था कि उसकी पहली पत्नी उसके सपने में आयी और उससे बोली — "जंगल में जहॉ से जानवर रास्ता पार करते हैं उस रास्ते के आर पार एक बड़ा सा मकड़ी का जाला लगा दो तो तुमको बहुत सारा खाना मिल जायेगा। परन्तु मेरे बच्चों को ठीक से रखना। उनकी सौतेली मॉ उनको मारने का प्लान बना रही है।"

उसने उसको यह भी बता दिया कि वह जादू का मकड़ी का जाला उसे कहॉ मिलेगा। आदमी अगले दिन ही वहॉ चला गया और उसे वहॉ बड़ा सा मकड़ी का जाला मिल गया।

उसने वह जाला जानवरों के आने जाने वाले रास्ते पर एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक बॉध दिया। उसी शाम जब वह जाले के पास गया तो उसने वहॉ जाले में फॅसे कई जानवर पाये।

ऐसा इसलिये हो सका क्योंकि वह जाला जादू का था। उस रात उन सबने बहुत अच्छा खाना खाया – भुना हुआ हिरन का मॉस।

बस अब क्या था जैसा कि उसकी पहली पत्नी ने उससे सपने में कहा था रोज ही उसको उस जाले में से खरगोश हिरन आदि जानवर मिलने लगे। और अब परिवार के पास खाने की कोई कमी नहीं रह गयी थी।

जब उसकी दूसरी पत्नी ने देखा कि अब तो रोज ही उन्हें अच्छा और काफी खाना मिलने लगा है तो वह तो बहुत गुस्सा हो गयी। क्योंकि अब उसके पास बच्चों की शिकायत करने का कोई मतलब नहीं रह गया था। वह अब यह नहीं कह सकती थी कि उनकी वजह से परिवार में खाने की कमी है।

पर उन बच्चों से उसकी नफरत कम नहीं हुई वह तो दिनों दिन बढ़ती ही गयी और कुछ दिनों में तो इतनी बढ़ी कि वह उनको मारने की तरकीब सोचने लगी। और जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी उनके पिता को भी।

अगले दिन उनका पिता लकड़ी के लिये जा रहा था ताकि वह शिकार के लिये वह तीर बना सके तो सौतेली मॉ ने सोचा कि यह

समय उसके बच्चों को मारने के लिये बहुत ठीक रहेगा। वह उनको उनके पिता की गैरहाजिरी में आसानी से मार सकेगी। उनके पिता को वह तब मार देगी जब वह जंगल से वापस आ जायेगा। सो उसने ऐसा कुछ प्लान बनाया।

पर उसी रात आदमी की पहली पत्नी फिर से आदमी के सपने में आयी और उससे कहा — "तुम्हारी यह वाली पत्नी एक जादूगरनी है। कल जब तुम जंगल चले जाओगे उसके बाद उसने बच्चों को मारने का प्लान बनाया है और जब तुम घर आ जाओगे तब वह तुम्हें भी मार देगी। मेहरबानी कर के मेरे बच्चों की रक्षा करना।"

जब आदमी सुबह उठा तो वह रात को सपने में सुनी बात को याद कर के बहुत डरा हुआ था। अब वह अपनी जादूगरनी पत्नी पर बिल्कुल विश्वास करने के लिये तैयार नहीं था। सो उसने निश्चय किया कि बजाय इसके कि वह हम सबको मारे क्यों न मैं ही उसको पहले मार दूँ।

पर उसको यह भी डर लग रहा था कि कहीं ऐसा न हो कि इससे पहले कि वह उसे मारे वही उन सबको मार दे।

सो जब उसकी जादूगरनी पत्नी नाश्ता बनाने के लिये पानी लाने के लिये घर से बाहर गयी तो उसने बच्चों को बुलाया और दोनों को एक एक डंडी एक एक सफेद पत्थर और थोड़ी थोड़ी घास दी और

उनसे कहा कि वे वहॉ से भाग जायें और जब तक वह मिलता है वे वहॉ से दूर ही रहें। क्योंकि वे एक बहुत बड़े खतरे में हैं।

वह फिर बोला — "ये जो तीन चीज़ें मैं तुम्हें दे रहा हूॅ ये तुम्हारे बड़े काम की चीज़ें हैं। अगर कोई बुराई तुम्हारा पीछा कर रही हो तो तुम इनको अपने पीछे फेंक सकते हो। ये तुम्हें उनके नुकसान से बचायेंगी।" बच्चे यह सुन कर डर गये और वहॉ से तेज़ी से भाग लिये।

उसने खुद ने वह जादुई मकड़ी का जाला अपने घर के दरवाजे पर लगा दिया और चुपचाप शान्ति से बैठ कर अपनी पत्नी के आने का इन्तजार करने लगा।

कुछ ही देर में वह पानी भरी बालटी ले कर घर आ गयी। उसने मकड़ी के जाले के बारीक धागे देखे नहीं और वह घर में घुसने लगी। जैसे ही वह अन्दर घुसी तो मकड़ी के जाले में उलझ गयी।

उसने उसमें से निकलने की बहुत कोशिश की पर उसका सिर घर के दरवाजे के अन्दर था और उसका शरीर बाहर था। और जाला उसकी गर्दन के चारों तरफ कस कर लिपटा हुआ था।

आदमी उसे देख कर बोला — "मुझे मालूम है कि तू एक जादूगरनी है। अब तू मेरे बच्चों को फिर कभी नहीं पीट पायेगी।"

बस उसने अपनी कुल्हाड़ी उठायी और उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। उसके बाद वह घर से भाग कर अपने बच्चों की

तलाश में जंगल गया जो वहॉ से बहुत दूर नहीं थे और उसका इन्तजार कर रहे थे।

पर अभी आदमी का काम उस जादूगरनी के साथ खत्म नहीं हुआ था। जैसे ही वह घर से भागा तो उस स्त्री का कटा हुआ सिर जाले से आजाद हो गया। वह सिर उसके पीछे पीछे भागा। उसके बाल उड़ रहे थे उसकी ऑखें उसे घूर रही थीं। कभी सिर जमीन पर लुढ़कता तो वह कभी हवा में उड़ने लगता।

पिता ने सोचा कि उसको बच्चों की दिशा से किसी दूसरी दिशा में भागना चाहिये सो वह पश्चिम की तरफ भागा जबकि वे लोग पूर्व की तरफ भाग रहे थे।

बच्चों ने जब कटे हुए सिर को अपने पीछे भागते देखा तो वे बहुत डर गये। तभी उन्हें पिता की दिये हुए डंडे पत्थर और घास की याद आयी।

जब वह सिर उनके बहुत पास आ गया तो उन्होंने डंडियॉ अपने पीछे फेंक दीं। उनके जमीन पर गिरते ही वहॉ उनके और सिर के बीच एक बहुत बड़ा और घना जंगल उग आया।

यह देख कर बच्चे एक जगह सुस्ताने बैठ गये। वे बोले — "हम लोग बहुत थक गये हैं और यह सिर भी इस जंगल को इतनी जल्दी पार नहीं कर सकता।"

जल्दी ही वह सिर उस घने जंगल को चीरता हुआ निकल आया। सिर को पास आया देख कर बच्चे फिर से तेज़ी से भागने

लगे। पर वह सिर उनके पीछे दॉत चबाते हुए अपनी बड़ी बड़ी ऑखों से घूरते हुए और ज़ोर ज़ोर से चिल्लाते हुए उनके पीछे आता रहा।

इस बार बच्चों ने अपने पीछे सफेद पत्थर फेंक दिया। उसके जमीन पर गिरते ही वहॉ सफेद पत्थरों का एक बहुत ऊॅचा पहाड़ खड़ा हो गया। सो वे सुस्ताने के लिये फिर बैठ गये।

वे बेचारे परेशान थे। "हम अब क्या करें। अगर उसने यह पहाड़ पार कर लिया तो? अब तो हमारे पास अपनी सुरक्षा का केवल एक ही जरिया रह गया है – घास।"

वह नीच सिर उलटता पुलटता पहाड़ पार करता हुआ चला आ रहा था। पर वह पहाड़ को पार नहीं कर सका। पास में ही एक बहुत बड़ा भैंसा घास चर रहा था सो सिर ने उससे पहाड़ में से हो कर एक सड़क बनाने के लिये कहा।

भैंसा अपनी पूरी ताकत से पहाड़ तोड़ने के लिये दौड़ा पर वह पहाड़ इतना ज़्यादा सख्त था कि बजाय पहाड़ टूटने के उसका सिर ही टूट गया और वह गिर कर मर गया।

कुछ मोल[97] वहॉ नर्म जमीन में खेल रहे थे सो उसने उनसे भी पहाड़ में उसके लिये एक रास्ता बनाने के लिये कहा। तुरन्त ही सारे मोल सिर के जाने के लिये रास्ता बनाने के लिये जुट गये और जल्दी

[97] Mole is kind of big rat which is very good in digging tunnels. See its picture above.

ही उन्होंने उसके लिये एक रास्ता बना दिया। स्त्री का सिर उस सुरंग में से हो कर वहॉ चला गया।

बच्चों ने जब उस सिर को मोल की बनायी हुई सुरंग में से बाहर निकलते देखा तो वे बहुत डर गये और चिल्ला कर तेज़ तेज़ भागने लगे। काफी दूर भागने के बाद जब स्त्री का सिर उनके बहुत पास आ गया तो उन्होंने अपने बचाव की आखिरी तरकीब इस्तेमाल की। उन्होंने अपने हाथ में पकड़ी घास अपने पीछे फेंक दी।

उसके जमीन पर गिरते ही वहॉ उनके और स्त्री के बीच में एक बहुत बड़ा और गहरा दलदल पैदा हो गया। स्त्री का सिर इतनी तेज़ी से चला आ रहा था कि वह एक बहुत ज़ोर की आवाज के साथ दलदल में गिर गया। वह वहीं उसमें से उलट पलट कर के बाहर निकलने की कोशिश करता रहा पर निकल नहीं सका और उसी में गायब हो गया।

यह देख कर बच्चे बहुत खुश हुए वे उछलते कूदते अपने पिता से मिलने के लिये अपने घर चले गये। पर वे वहॉ महीनों इन्तजार करते रहे उनका पिता नहीं आया। वे बड़े हो कर अपनी जाति के लोगों में बहुत बड़े जादूगर बने।

अपने जादू से उन्होंने जान लिया कि उनके पिता को क्या हुआ था। उनकी सौतेली मॉ के सिर ने तो उनका पीछा किया पर उसके शरीर ने उनके पिता का पीछा किया और वह पश्चिम में चला गया था।

उसने उनके पिता का बहुत दिनों तक पीछा किया। एक दिन उसकी पहली पत्नी ने उसको सपने में फिर कोई ताकत दी जिससे उसने अपने आपको सूरज में बदल लिया और अपनी पहली पत्नी के साथ रहने के लिये आसमान में चला गया।

पर उसकी दूसरी पत्नी भी कोई कम बड़ी जादूगर नहीं थी। उसने अपने आपको चॉद में बदल लिया और तारों की दुनियॉ तक उसका पीछा किया। वहॉ वह अभी तक उनके पिता का पीछा कर रही है।

क्योंकि पिता अभी भी उससे काफी आगे है इसलिये वह उसको अभी तक पकड़ नहीं पा रही है और शायद कभी पकड़ भी नहीं पायेगी पर इसके लिये उनके पिता को बराबर भागना पड़ेगा। जहॉ वह रुके नहीं कि बस... ।

अगर उसने उनको पकड़ लिया तो वह उनको मार डालेगी और फिर सारी दुनियॉ से दिन गायब हो जायेगा और बस रात का राज हो जायेगा।

इसलिये ब्लैकफीट इन्डियन्स बस हमेशा ही यह प्रार्थना करते रहते हैं कि भगवान सूरज को इतनी ताकत दे कि वह कभी रुके नहीं और चॉद कभी उसे पकड़ नहीं पाये।

27 भूरे पंखों वाला बड़े साइज़ का आदमी[98]

यह बहुत पहले की बात है जब ब्लैकफीट इन्डियन्स[99] कैनेडा के मैदानों में रहा करते थे तो उस जगह में एक बार बहुत ज़ोर का अकाल पड़ा। महीनों हो गये थे कोई भैंसा ही नहीं मारा गया था और किसी भी कीमत पर किसी तरह का कोई मॉस नहीं मिल रहा था।

एक तरफ बूढ़े लोग एक एक कर के मरने लगे थे क्योंकि उनको ठीक से खाना ही नहीं मिल रहा था। दूसरी तरफ बच्चे जल्दी मर रहे थे क्योंकि उनको भी खाना ठीक से नहीं मिल रहा था। इस तरह चारों तरफ दुख ही दुख था।

केवल ताकतवर योद्धा और मजबूत स्त्रियॉ हीं ज़िन्दा थे। पर वे भी बस कुछ ही दिन और ज़िन्दा थे क्योंकि भूख उन पर भी अपना असर डाल रही थी।

आखिर जाति के सरदार ने इन्डियन्स के सरदारों के सरदार से प्रार्थना की कि ओ बड़े सरदार यहॉ हमारे राज्य में आओ और लोगों को आ कर यह बताओ कि वे इस हालात में कैसे रहें।

---

[98] The Giant With Grey Feathers. (Tale No 27) From the book “Canadian Fairy Tales”, by Cyrus MacMillan. 1922. Book available at the Web Site : https://fairytalez.com/author/canadian-fairy-tales/

[99] Blackfeet Indians – a tribe of Indians

बड़ा सरदार उस समय दूर दक्षिण देश में किन्हीं दूसरे कामों में उलझा हुआ था। वह वहॉ अच्छी लगने वाली गर्म हवाऐं चलवा रहा था और फूल खिलवा रहा था।

पर एक रात उसने हवा के मुँह से सरदार की प्रार्थना सुन ली सो वह जल्दी ही उत्तर की तरफ दौड़ पड़ा। क्योंकि उसको मालूम था कि इस समय उसके लोगों को उसकी सख्त जरूरत थी।

जल्दी ही वह भूखे लोगों के शहर में आ पहुँचा और चिल्ला कर उनसे पूछा — "किसने पुकारा मुझे।"

सरदार बोला — "जनाब मैंने पुकारा आपको। मेरे लोग मरते जा रहे हैं। अगर आप हमारी सहायता नहीं करेंगे तो ये सब बहुत जल्दी ही मर जायेंगे।"

तब बड़े सरदार ने उन सब लोगों की तरफ देखा तो उसने देखा कि बूढ़े और बच्चे जल्दी जल्दी गायब होते जा रहे थे। केवल कुछ ही छोटे बच्चे रह गये जिनके गाल पिचक गये थे और ऑखें गड्ढों में घुस गयी थीं।

उसको उन पर दया आ गयी। वह उनसे बोला — "यहीं पास में ही एक बड़ा चोर रहता है। वह शायद एक बहुत बड़ा नीच बड़े साइज़ वाला आदमी[100] है। उसने यहॉ से सारी भैंसे बुला कर अपने पास रख ली हैं। पर मैं उसको जल्दी ही ढूँढ लूँगा और जल्दी ही तुम लोगों को खाना मिलेगा।"

[100] Translated for the word "Giant"

यह सुन कर लोगों को बहुत तसल्ली मिली क्योंकि उनको मालूम था कि बड़ा सरदार अपने कहे का पक्का है।

फिर बड़े सरदार ने सरदार के नौजवान बेटे को साथ लिया और बड़े साइज़ के आदमी की खोज में निकल पड़ा।

कुछ और लोग भी उसके साथ जाना चाहते थे पर बड़े सरदार ने कहा — "नहीं हम अकेले ही जायेंगे। यह एक बड़ा खतरनाक काम है। अगर जरूरत पड़ी तो इस कोशिश में केवल दो आदमी ही मरेंगे बजाय कि बहुत सारे लोग मरें।"

सो वे लोग उसे ढूँढने के लिये पश्चिम की तरफ घास के मैदान के उस पार ग्रेट वाटर्स की तरफ चल दिये। रास्ते में नौजवान सूरज चॉद और सुबह के तारे की प्रार्थना करता जा रहा था कि वे उनको उनकी यात्रा में कामयाब करें।

बहुत जल्दी ही वे तराई के ढलान पर आ पहुँचे जहॉ मीठी घास और कॅटीले पाइन के पेड़ उगे हुए थे। पर अभी तक उन्हें भैंस दिखायी नहीं दी थीं। आखिर वे एक तंग नाले के पास आ पहुँचे। उसके किनारे उन्होंने एक मकान देखा जिसकी चिमनी में से धुऑ निकल रहा था।

इन सब मुसीबतों की जड़ यह बड़ा सरदार यहीं है। इसी घर में वह भैंस, चोर, बड़े साइज़ का आदमी और उसकी पत्नी रहते हैं। मेरी जादू की ताकत मुझे यह बता रही है कि इन्होंने ही हमारी सारी भैंसे छिपा रखी हैं जिससे सारे घास के मैदान खाली हो गये हैं।

बड़े सरदार के पास एक जादू का पाउडर था जिसकी सहायता से वह खुद तो एक कुत्ता बन गया और अपने साथ आये नौजवान को एक तेज़ नुकीली डंडी में बदल लिया। दोनों वहीं जमीन पर लेट गये और इन्तजार करने लगे।

जल्दी ही वहॉ बड़े साइज़ वाला आदमी उसकी पत्नी और उसका छोटा सा बेटा वहॉ आ गये। बेटे ने कुत्ते को उसके सिर पर थपथपाया और बोला — "पिता जी देखिये यह कितना सुन्दर कुत्ता है। ऐसा लगता है कि यह खो गया है। क्या मैं इसे अपने घर ले जा सकता हूँ।"

उसका पिता बोला — "नहीं नहीं। मुझे तो इसकी शक्ल ही अच्छी नहीं लग रही है। तुम उसे छूना भी नहीं।"

यह सुन कर लड़का ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। वह कुत्ता उसको बहुत अच्छा लग रहा था। असल में तो वह बहुत दिनों से चाह रहा था कि वह एक कुत्ता पाले। उसने अपने पिता से उसको घर ले जाने के लिये बहुत जिद की तो पिता ने उसे इजाज़त दे दी — "ठीक है तुम जो चाहो करो पर ख्याल रखना कि इससे कुछ अच्छा नहीं होने वाला।"

लड़के की मॉ ने डंडी उठायी और बोली — "यह डंडी बहुत अच्छी है इस डंडी को मैं ले चलती हूँ। मैं इससे दवाऐं बनाने के लिये जड़ें खोदूँगी।"

उसके बाद सब अपने घर चल दिये।

बड़े साइज़ का आदमी अपनी पत्नी और बेटे दोनों से खुश नहीं था सो वह भुनभुनाता हुआ जा रहा था। लड़का कुत्ते के साथ जा रहा था और उसकी मॉ हाथ में डंडी लिये जा रही थी।

अगली सुबह बड़े साइज़ वाला आदमी बाहर गया और जल्दी ही एक मोटी भैंस ले कर वापस भी आ गया। उसकी खाल निकली हुई थी और वह पकाने के लिये तैयार थी। उन्होंने उसको एक गड्ढे के ऊपर रख कर भूना और सबने बहुत अच्छा खाना खाया।

उस मॉस में से थोड़ा सा मॉस लड़के ने कुत्ते को खिलाया पर जब लड़के के पिता ने यह देखा कि उसका बेटा क्या कर रहा था तो उसको बहुत ज़ोर से मार लगायी और कहा — "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि ये कुत्ते ठीक नहीं होते हैं। तुमको मेरी बात माननी चाहिये।"

लड़के की मॉ ने बेटे की तरफ से उसके पिता से विनती की कि वह उसको कुत्ते को खाना खिलाने दे। सो लड़के ने उसको खाना खिला दिया।

उस रात जब सारी दुनियॉ सो गयी तो कुत्ता और डंडी दोनों आदमी के रूप में आ गये और उन्होंने बचा हुआ भैंस का मॉस खूब पेट भर कर खाया। फिर बड़े सरदार ने नौजवान से कहा — "यह बड़े साइज़ का आदमी ही भैस चोर है जो इनको घास के मैदानों में जाने नहीं देता। जब तक हमें यह मालूम न हो जाये कि यह उन्हें रखता कहॉ है तब तक इसको मारना भी बेकार है।"

सो वे फिर से कुत्ते और डंडी के रूप में बदल गये और सोने चले गये।

अगले दिन स्त्री और उसका बेटा उठ कर बैरीज़ इकट्ठा करने के लिये और दवा के लिये जड़ लाने के लिये जंगल चले तो उन्होंने अपने कुत्ते और डंडी को भी साथ ले लिया।

उन्होंने जब कुछ देर काम कर लिया तो दोपहर को वे लोग खाना खाने बैठे। स्त्री ने डंडी बराबर में रख दी और लड़के ने अपना कुत्ता मैदान में छोड़ दिया।

कुत्ता पहाड़ के इधर उधर दौड़ने लगा। दौड़ते दौड़ते उसको पहाड़ की एक गुफा में एक रास्ता दिखायी दे गया। उसने उसमें अन्दर झॉका तो वहॉ उसको बहुत सारी भैंसें दिखायी दे गयीं। अब उसे पता चल गया था कि वह बड़े साइज़ वाला आदमी अपनी भैंसें कहॉ छिपा कर रखता था।

वह वहॉ से स्त्री और लड़के के पास गया और जा कर भौंकने लगा। उसका यह भौंकना उसके साथी के लिये एक इशारा था पर लड़के और उसकी मॉ ने समझा कि वह किसी चिड़िया को देख कर भौंक रहा था। यह देख कर वे दोनों हॅस रहे थे पर वास्तव में वह अपने साथी को बुला रहा था।

डंडी ने यह इशारा समझ लिया था। वह कुत्ते के पास वाली झाड़ी में लड़के और उसकी मॉ की ऑखें बचा कर सॉप की तरह लहरा कर चली गयी। वे दोनों पहाड़ के दूसरी तरफ वाली गुफा में घुस गये। वहॉ उनको बहुत सारी भैंसे दिखायी दे गयीं। ये सब भैंसे घास के मैदानों से यहॉ ला कर इकट्ठी की गयी थीं।

कुत्ते ने भौंकना और उनकी एड़ियों में काटना शुरू कर दिया। डंडी ने उनको मारना शुरू कर दिया। इस तरह से उन दोनों ने उनको गुफा के बाहर निकाल कर पूर्व की तरफ हॉक दिया। पर वे यह काम कुत्ते और डंडी की शक्ल में ही करते रहे।

जब शाम हुई तो मॉ बेटे ने कुत्ते और डंडी को ढूँढना शुरू किया पर वे दोनों ही उनको कहीं दिखायी नहीं दिये। उनको कुत्ते और डंडी के बिना ही घर वापस जाना पड़ा।

जैसे ही मॉ और बेटा नदी के किनारे अपने घर के पास पहुँचे बड़े साइज़ का आदमी भी घर लौट आया। इत्तफाक से उसने पूर्व की तरफ देखा तो उसने देखा कि बहुत सारी भैंसें तराई की तरफ भागी जा रही हैं जहॉ मीठी घास उगती थी।

यह देख कर वह बहुत गुस्सा हो गया और चिल्ला कर लड़के से बोला — "तुम्हारा कुत्ता कहॉ है।"

लड़का बोला — "पिता जी आज जब हम जंगल गये थे तभी वह वहीं कहीं खो गया। असल में वह एक चिड़िया का पीछा कर रहा था पर फिर वह वापस ही नहीं आया।"

पिता चिल्लाया — "बेवकूफ। वह चिड़िया नहीं थी जिसका वह पीछा कर रहा था। वह मेरी एक भैंस का पीछा कर रहा था। मैंने तुमसे कहा था न कि वह एक बुरी चीज़ है तुम उसे छुओ भी नहीं पर तुम और तुम्हारी मॉ अपनी के आगे किसी की सुनते कहॉ हो। देखो न अब मेरी सारी भैंसें चली गयीं।"

वह गुस्से के मारे अपने दॉत चबाते हुए गुफा की तरफ यह देखने के लिये भागा कि वहॉ कोई भैंस अभी बाकी बची है क्या। वह भागता जा रहा था और चिल्लाता जा रहा था "बस मुझे वह कुत्ता कहीं दिखायी दे जाये मैं उसे मार दूॅगा।"

जब वह गुफा के पास पहुॅचा तो बड़ा सरदार और नौजवान जो अभी भी कुत्ते और डंडी के रूप में थे वहॉ से आखिरी भैंस को बाहर निकाल रहे थे।

बड़े साइज़ वाले आदमी ने जैसे ही उनको देखा तो वह उसको मारने के लिये भागा। उसने सोचा कि वह कुत्ते को मार देगा और डंडी को तोड़ देगा। उसके उनके पास पहुॅचने से पहले ही वे दोनों उछले और एक भैंस पर चढ़ गये और उसके लम्बे बालों में छिप कर उसको कस कर पकड़ लिया।

कुत्ते ने भैंस के शरीर पर काटा सो वह भैंस चिल्लायी ज़ोर से उछली और गुफा के बाहर की तरफ भाग गयी। वह कूद कूद कर पूर्व की तरफ भागी जा रही थी जब तक कि वह अपने आगे जाने वाली भैंसों के झुंड में नहीं मिल गयी।

बड़े साइज़ वाला आदमी बेचारा गुस्से में अपना सा मुँह ले कर घर चला गया। उसके बाद कुत्ता और डंडी दोनों अपने अपने रूपों में आ गये और भैसों के झुंड को हॉकते हुए अपने देश के भूखे लोगों के पास ले गये।

लोग बड़े सरदार और नौजवान को इतनी सारी भैंसों के साथ गॉव लौटता देख कर बहुत खुश हुए। अब उनका अकाल खत्म हो गया था।

पर जैसे ही उन्होंने भैंसों को बाड़े में हॉका तो एक बहुत बड़ी भूरे पंखों वाली चिड़िया उनके सिर के ऊपर से उड़ी और उन पर कूद लगा दी। उसने उनको अपनी चोंच से गोदा और उनको वहॉ से बाहर निकालने की कोशिश की।

बड़े सरदार ने अपने जादू से यह जान लिया कि वह भूरी चिड़िया कोई और नहीं बल्कि वही बड़े साइज़ वाला आदमी था जिसने भैसों को चुराया था। उसने अपने आपको एक भूरे रंग के पखों वाली बड़ी सी चिड़िया में बदल लिया था और उन भैंसों के पीछे पीछे घास के मैदानों तक आ गया था।

बड़े सरदार ने तुरन्त ही अपने आपको एक औटर में बदल लिया और नदी के किनारे मरी हुई जैसी पड़ गयी। भूरी चिड़िया ने उसे देखा तो उसने सोचा कि अरे यह तो मेरे लिये बहुत अच्छा खाना है सो उसने नीचे कूद लगायी।

जैसे ही वह उसके ऊपर से उड़ी कि बड़े सरदार ने उसे उसकी टॉग से पकड़ लिया और अपना रूप बदलते हुए उसको जीत के तौर पर अपने कन्धे पर लादे हुए अपने कैम्प ले आया। उसने उसको पहले तो अपने तम्बू के धुऑ निकलने वाले पाइप से कस कर बॉध दिया और फिर उसमें नीचे आग लगा दी।

बड़े साइज़ वाला आदमी चिल्लाया — "मेहरबानी कर के मुझे छोड़ दो। मेरी जान बख्श दो। मैं अब तुम्हें कभी कोई नुकसान पहुॅचाऊॅगा।"

पर सरदार ने उसको रात भर के लिये वहीं बॅधा छोड़ दिया। रात भर काला धुऑ उस तम्बू में भरता रहा और उसके भूरे पंखों को काला करता रहा। सुबह तक उसके सारे पंख काले हो चुके थे।

तब बड़े सरदार ने उसको पाइप से खोल लिया और कहा — "अब तुम जा सकते हो। अबके बाद तुम कभी भी अपनी शक्ल नहीं बदल सकोगे। अबसे तुम रैवन बन जाओगे जो धरती पर अपशकुनी का एक निशान होगे – जाति से निकाले हुए और चिड़ियों में डाकू। तुमको अपना खाना बहुत मेहनत से ढूॅढना पड़ेगा और चोरी करना पड़ेगा।

इसी लिये आज तक वह बड़े साइज़ का आदमी रैवन बना हुआ है क्योंकि बड़े सरदार के शाप की वजह से वह अपनी शक्ल फिर से नहीं बदल सका।

उसके सारे पंख भी काले हैं। वह धरती पर एक बदशकुनी का निशान है। उसको खाना भी बड़ी मुश्किल से मिलता है और उसे उसे चोरी से भी पाना पड़ता है।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न के साथ — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2021

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2021** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से इन लोक कथाओं को हम जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022